लोग
८१३.३१
मत्स्ये | ये
त्स्येन्द्र शुक्ल

ये लोग

मत्स्येन्द्र शुक्ल की कहानियाँ

ये लोग

मत्स्येन्द्र शुक्ल

आचार्य प्रकाशन
राजरूपपुर—इलाहाबाद

वर्ष : १९८८
लेखक : मत्स्येन्द्र शुक्ल
प्रकाशक : आचार्य प्रकाशन
राजरूपपुर—इलाहाबाद
मूल्य : ३५ रुपए
मुद्रक : सुपरफाइन प्रिंटर्स,
इलाहाबाद

कथाकार
आदरणीय भैरव प्रसाद गुप्त के लिए

अनुक्रम

कैदी

जगेसर के मुकदमें की अन्तिम तारीख थी। अदालत की निगाह में मामला बेहद पेचीदा और खतरनाक था। इसलिए पाँच दिन से लगातार यही एक मुकदमा देखा जा रहा था। दोनों तरफ के वकील घंटों बहस करते, जज खामोशी से उनकी बातें सुनता। माहौल में संशय और तनाव व्याप्त था। वकील परेशान, जगेसर परेशान और सुनने वाले परेशान। फैसले के रुख के बारे में कोई कुछ भी नहीं सोच पा रहा था।

समय के बदलाव को समझ लेना और उसी के अनुकूल खुद को मोड़ देना, आदमी के बूते में कहाँ है। जगेसर के दिमाग में यह बात कभी न आयी होगी कि समाज के इने-गिने लोग, षड़यंत्र के स्तर पर मिलकर, राई को पहाड़ बना देंगे। और उसी के दबाव में उसका अच्छा-खासा जीवन पिचुनी बनकर नष्ट हो जायगा।

जगेसर के सामने समस्या केवल पैसे की है। पैसे की तंगी से निपटने

के लिए उसे पत्नी के गहने धरमू सेठ को सौंपने पड़े। हित-मीत सबसे कर्ज लेना पड़ा। चिंता का बोझ ढोते रहने से वह घबड़ाया नहीं। क्योंकि उम्मीद थी, वह मुकदमे में बेदाग छूट जायगा।

जगेसर ने कोई पाप नहीं किया। इंसानी डगर पर चलते हुए उसने गरीबों को उठाने की कोशिश की थी। पर गाँव के जमींदार उसके इस कदम से बेहद नाराज थे। वे नहीं चाहते कि हलवाहों का समूह कुछ सोचने लायक बने। समझदारी से तमाम खतरे पैदा हो सकते हैं। जुलूस बनाकर वे एक दिन यह भी कह सकते हैं, हम इतने कम पैसे में काम नहीं करेंगे।....जगेसर उनकी बात क्यों सुने। गरीबों का जत्था साथ लिए वह निर्भय होकर आगे बढ़ता रहा।

जब मुकदमा चंग पर था, वकील ने समझाते हुए कहा था—'सुन जगेसर! रोने-धोने और पश्चाताप करने से कुछ नहीं होगा। घटना क्या है, यह तुम जानो। कानूनी जंजाल में उलझ कर केश सीरियस हो गया है। पैसे का भरपूर इंतजाम किये रहो। जो मागूँ, गिनकर रखते जाओ। मुकदमा जिताने की मेरी जिम्मेदारी है। कानून की ये किताबें किस दिन काम आयेंगी। तुम्हारे जैसे मजबूर लोगों को अन्याय से बचाने के लिए इन्हें पढ़ता हूँ। जज के सामने फर्राटे में अंग्रेजी बोलता हूँ। जिले में मुझसे बड़ा दूसरा वकील नहीं है।'

वकील की बात सुनकर जगेसर हँस पड़ा था। जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। महीनों बाद उसे संतोष की साँस लेने का समय मिला था। जगेसर ने कहा—'वकील साहब! आप जम कर पैरबी करें। रुपये के बारे में सोच न करें। जितना बन पड़ रहा है, हाजिर करने में लगा हूँ। जो कम रहेगा, बाद में अदा कर दूँगा। मुझे जुल्मियों के चंगुल से बचा लीजिए। इज्जत का सवाल आ फँसा है। मुझे सजा मिल जाने पर गाँव के तमाम निर्दोष परिवार बर्बाद हो जायँगे।'

बहस के दौर में वकील ने कोई कोर-कसर नहीं लगाया। सैकड़ों किताबों को उल्टा-पल्टा। प्रमाण के रूप में जज को दिखाया भी। चेहरे

से लग रहा था, जज पेश किये गये तर्कों से सहमत है। आखिरी दिन शाम को अदालत से चलते समय वकील ने प्रसन्न मुद्रा में कहा था—'जगेसर! मैं जहाँ तक अदालत को समझ पाया हूँ, तुम बेदाग बच जाओगे। फिलहाल सारी बातें भाग्य पर छोड़ दो। कल ठीक ग्यारह बजे निर्णय घोषित कर दिया जायगा। समय से आ जाना। इस वक्त तुम जा सकते हो।'

जगेसर के सिर पर चिंता सवार थी। वह समय से पूर्व आकर सामने वाले बरामदे में बैठ गया था। पुकार होते ही वह कोर्ट में हाजिर हो गया। वकील बगल में खड़ा था। जज ने निर्णय सुनाते हुए कहा—'जगेसर पर डाका डालने और हत्या का जुर्म साबित है। कानून की निगाह में वह जुर्मी है। जगेसर को दस वर्ष की सख्त सजा दी जाती है।'

जगेसर के पैर के नीचे की जमीन खिसक गयी। आँख के सामने चिनगियाँ तैरने लगीं। उसने महसूस किया, जैसे वह अगम दलदल में धँसा जा रहा है। अनाथता की हालत में उसने सामने की दीवार पर देखा—'छिपकली कीड़ों को निगलने में जुटी है। कीट-पतंगों के करुण क्रंदन को महसूस करने का समय किसी के पास नहीं है। दुनिया में शक्तिशाली समाज मौज करता है और कमजोर सदैव परेशान रहता है।' ....फिर शून्य भाव से सिर के बाल खुजलाने लगा था।

पुलिस वहाँ पहले से मौजूद थी। दरोगा के आदेश पर सब एलर्ट हो गये। कोर्ट की भाषा में जगेसर डाकू था। अतः पुलिस के घेरे में उसे बाहर लाया गया। अब जगेसर की दुनिया बदल चुकी थी। उसके सामने केवल अंधकार था। वह कुछ कहता नहीं, केवल आ-जा रहे लोगों को बारीकी से देखता है।

गम से बोझिल जगेसर एकाएक रुक गया था। बस इतनी ही बात पर सिपाही तुलाराम झुंझला कर गाली बकने लगा था—'कमीने की औलाद! रुक क्यों गया। ठाकुर के घर डाका डालने गया, तो शर्म नहीं

लगी। जेल में सड़ने की सजा पाने पर नखरा दिखाते हो।' बात-ही-बात में तुलाराम ने कसकर एक थप्पड़ जड़ दिया था।

गुस्से के बावजूद जगेसर मजबूरी में चलने लगा था। उसका चेहरा बेहद उदास था। पुलिस वान के नजदीक पहुँच कर वह पीछे की तरफ ताकने लगा था। दरअसल वह उस इमारत को बारीकी से देख रहा था जिसे शिष्टाचार की भाषा में न्याय का मन्दिर कहा जाता है।

जगेसर सोचता है, न्याय के नाम पर उसे कुछ नहीं मिला। फिर यह मन्दिर कैसा ! इसके प्रति विश्वास कैसा ! लोग कहते है, अदालत में जाने से आदमी को अपना हक मिलता है। मैं चोर नहीं, कतली नहीं, फिर भी कठोर कारावास का दंड मिला। कानून की किताबें क्यों छपती हैं जबकि उनका कल्याणपरक उपयोग नहीं है। इस तरह की तमाम बातों को सोचता वह पत्थर की मूर्ति-सा खड़ा रहा।

असमर्थता के अगम जंगल में भटकता जगेसर थकावट महसूस करने लगा था। माथे का पसीना पोंछने के लिए उसने हाथ उठाना चाहा लेकिन हथकड़ी के कारण उसके हाथ ज्यों-के-त्यों लटकते रह गये। ईमानदार आदमी जब सत्य की लड़ाई में हार जाता है, तब उसकी यही हालत होती है।

इस बीच सिपाही अमर सिंह पुलिस-वॉन पर बैठ चुका था। जगेसर को नीचे खड़ा देख कर वह ताव में अंट-संट बकने लगा।....स्साले तेरा दिमाग सातवें आसमान पर है। देख रहे हो बेंत। अभी दिमाग दुरुस्त करता हूँ। तुम्हें कैदी की हैसियत नहीं मालूम। इसीलिए जबान लड़ा रहा है।

'भाई ! बेड़ियाँ खोल दो।' जगेसर ने कहा।

'क्यों !'

'कुछ देर आराम से बैठ लूँ।'

'चुप रहो। इसी में गनीमत है।'

'फिर लगा देना।'

सिपाही तुलाराम ने दाँत किचकिचाते हुए कहा—'सात हाथ की दीवार फाँद जाते हो। उछल कर गाड़ी में नहीं बैठ सकते। जेल में आराम के लिए काफी समय मिलेगा।'

'मुझे इसी बात की तकलीफ है।' भीतर से उठ रहे आवेश को दबाते हुए जगेसर ने कहा। डाकू होता, तो आज जेब में नोट की गड्डियाँ होतीं। एक गड्डी फेंकने पर तुम कंधे पर बैठा कर जेल पहुँचा आते। दरोगा भी मेरी तारीफ का पुल बाँध देता।

'चुपऽऽ....।' बेंत दिखाते हुए दरोगा ने कहा।

'क्या-क्या समझूँ और देखूँ हुजूर। दुनिया में हर तरह की चीजें देख लिया। ठाकुर ने इसी पैसे के बूते मुझे जेल का दरवाजा दिखा दिया।'

इसी बीच अमर सिंह का दिमाग ज्यादा गर्म हो चुका था। उसने जगेसर की पीठ पर चढ़ा लात जड़ दिया। वह कटी डाल-सा जमीन पर गिर पड़ा।....मक्कार कहीं का।....खुद को धर्मराज समझ बैठा है। अभी इतना ही दिया है। हाथ-पैर तोड़ कर रख दूँगा।

सिपाही तुलाराम के लिए यह पहला मौका था जब कैदी ने बीड़ी के लिए पैसा न दिया हो। उसे काफी गुस्सा आ रहा था। आवेश में कई बार दाँत किटकिटाया, बेंत की पकड़ मजबूत की, दबोचने की नीयत से पैर आगे बढ़ाने का प्रयास किया, मगर दरोगा के डर से उसने कुछ नहीं किया।

जगेसर को पिटा देख तुलाराम खुश था। देर तक मूँछ ऐंठता वह किनारे की ओर खड़ा रहा जैसे सेत-मेत में उसका सोचा हो गया हो।

'कैदी को इस तरह नहीं पीटा जाता। कुछ हो गया तो, लेने के देने पड़ जायँगे।' घबड़ाहट में सीट से कूदते हुए रमजान ड्राइवर ने कहा।

'मर जाने दो। कमीने की औलाद है। बदमाश लात-घूसा पाये बगैर अपनी औकात पर नहीं आता।' तुलाराम ने कहा।

'जिंदगी बर्बाद हो जायगी बच्चू। कानूनन कैदी को मारने का अधिकार किसी को नहीं है। पुलिस एक्ट की एकाध किताब पढ़ लो। अभी बहुत नौकरी बाकी है, काम आयेगा।' पसीना पोंछते हुए रमजान ने कहा।

'मैं डंडे को औव्वल दर्जे का कानून समझता हूँ। किताब-उताब उलटने से क्या फायदा। एक तरफ से अधिकार दिया और दूसरी तरफ से खिसका लिया।' इस तरह की बातें करता और जूते की नोक से जमीन पर लकीरें खींचता अमर सिंह एक गोल दायरे में टहलाने लगा था।

दरोगा ने सिगरेट फेंकते हुए कहा—'देखो, साँस चल रही है। लगता है तुम लोगों ने मार दिया। जेल पहुँचने से पहले कुछ हो गया, तो सब पर आफत आ जायगी।

'आप निश्चिन्त रहें इंस्पेक्टर साहब। यह मर नहीं सकता।' तुलाराम ने कमीज की टूटी बटन को सम्हालते हुए कहा।

'क्यों?'

'डाकू है। डाकू गोली से मरता है। लात, घूसे और बूट की मार से नहीं।'

'खास बात नहीं है हुजूर! कैदी की हालत ठीक है। लगता है कोखे में दचक आ गयी है। जेल के अन्दर पहुँचा दें। फिर हमारी जिम्मेदारी खतम हो जाती है।' रमजान ने कहा।

'हाँ, यही करो।' दरोगा ने कहा।....गाड़ी तेज रफ्तार में जेल की ओर चल पड़ी थी।

अब कैदी नम्बर एक सौ सत्ताइस की हैसियत से जगेसर जेल के भीतर पहुँच चुका है। नयी जगह, नया वातावरण और नितान्त अपरिचित लोग। वह छाती के नन्हें बालों को सहलाता दीवार के सहारे खड़ा हो गया था और दूर पेड़ पर पैठे गिद्ध को गौर से ताकने लगा था।

कमर और गर्दन में चिलक उठने के साथ सोचने का सिलसिला खत्म न हुआ। जगेसर के दिमाग में जोगिन्दर, चित्तू, जगन काका और

धनराजी का चेहरा एक साथ उभर आया।....पुरानी दुश्मनी पर दाँव लिए बगैर ठाकुर चुप नहीं बैठेगा।

कैद होने की खबर मिलते ही जगन काका जरूर आयेंगे। मुझे देखे बिना उन्हें चैन नहीं मिल सकती। यह भी हो सकता है, परिस्थितियाँ लाचार कर दें, वे न आ पायें। जबर सिंह चमरटोले को घेर लिए हो। कोई बाहर न निकल पा रहा हो। वह डंके की चोट पर ललकारता होगा और इर्द-गिर्द उसके तमाम समर्थक खड़े होंगे। अजीब माहौल हो सकता है, मेरे गाँव का।

जगेसर के कान में विचित्र किस्म की आवाजें आ रही थीं। जैसे पूरे गाँव में गुहार मची हो। आकाशभेदी चीत्कार और हाहाकार। दूसरे गाँव के लोग भयवश सिवान के पास पहुँच कर रुक गये हों....

—पहुँच गये।

—घबड़ाओ नहीं।

—बंदूक दाग दो।

—कौन है इतना जबरदस्त।

—दिनदहाड़े किसी की हत्या कौन करेगा।

—पुलिस बुलाओ।

—जुल्मी का मुकाबला जरूरी है।

—देखो, कोई औरत दौड़ी आ रही है।

—बदमाश घरों में घुस गये हैं।

—जबरसिंह की यह हिम्मत।

—न हुआ जगेसर। पानी पिला देता सबको।

—यहाँ खड़े होने से काम नहीं बनेगा।

—चलो। चमरटोले में प्रवेश कर लें।

फर्श पर कम्बल बिछा कर जगेसर इत्मीनान से बैठ चुका है। उलझनों के बीच वह कभी कमर पर हाथ ले जाता। कभी जाँघ और घुटने सहलाता। कुछ देर के लिए वह लेट गया था। किन्तु चिंता के दबाव

में उसे नींद न आ पायी। वह उठकर बैठ गया। फिर वही आवाजें। जिंदगी और मौत का संघर्ष। जमींदारों का जुल्म। भयावह और नग्न रूप लिए हुए।

—गुहार लागा।

—अपने छरिन्दों के साथ जबर सिंह आग लगाने आया है।

—गुहार लागा ऽ ऽ....

—ननकू का घर बन्द कर दिया है।

—औरत और लड़कियों का मुँह बाँध दिया है।

—जाने क्या कर रहे हैं घर के अन्दर।

—इज्जत बचाना मुश्किल हो चला है। गुहार लागा ऽ ऽ ऽ....

—लो, बदमाशों ने लुकाड़ा लेश दिया है।

—गाँव जला देने की तैयारी पूरी हो चुकी है।

रात के सन्नाटे में जगेसर अद्‌भुत सूनापन महसूस करता है। वह अपने सोच की प्रक्रिया से एकदम घबड़ा गया। लाख कोशिशों के बावजूद वह विचारों के समुद्र में पुल बाँधने में असफल रहा। उसने महसूस किया, जैसे उसकी पत्नी लाठी लिए चमर-टोले की ओर भागी जा रही हो। जबर सिंह के गिरोह को डाँटती-फटकारती हुई।

—घबड़ाने से काम न बनेगा।

—धनराजी, सबको इकट्ठा कर।

—मेरा मर्द नहीं है तो क्या हुआ। मैं खड़ी हूँ तुम्हारी मदद में।

—एक नहीं हजार जबर का मुकाबला मैं अकेले करूँगी।

—जगन काका शहीद हो गये, मगर पूरा गाँव अभी पड़ा है।

—धनराजी, गोल तैयार करो।

—देर होने पर हम कहीं के न होंगे।

—गोली दगी धाँय....धाँय....

—धनरजिया सिर का जूड़ा खोल चिल्ला पड़ी।

—हे राम ! जगेसर की दुलहिन खत्म हो गयी।

—पूरा गाँव रो रहा है, बच्चे रो रहे हैं।
—गाँव के बीचोबीच खून से लथपथ लाश पड़ी है।
—सिवान के समीप खड़े लोग पूर्ववत् चिल्ला रहे हैं।

इन्हीं चिंताओं के साथ जगेसर सो गया। उसे अच्छी नींद नहीं आ पायी। क्योंकि रात भर मच्छरों का आक्रमण जारी रहा।

विरोध का पहला दिन। हाँ, पहला-ही दिन था। इसके पहले शायद कभी क्रोध भी न आया था मुझे। साधारण आदमी की हैसियत में गरीबी से जूझने और पार्टी के काम से लगा था। गरीबों के बीच उठने-बैठने से जबर सिंह बेहद नाराज था। उसने पिता से कई बार शिकायत की—'लड़के पर निगाह रखिए महाराज। यह कम्युनिस्ट हो रहा है। चमार, पासी और मुसहरों के दरवाजे पर बैठना बाम्हन को शोभा नहीं देता।' उसकी बात पर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया।

एक रोज अमहिया बाग में कल्पूसिंह ने जगन काका को बे-मतलब दबोच लिया था। कारण, वह दो-तीन दिन से हल जोतने नहीं गये थे। मेरे पहुँचने तक वह जगन को अनगिनत लात-जूते जमा चुका था। ठकुर-टोले के तमाम लड़के हाथ में लाठी लिए आस-पास खड़े थे। गुहरियों की आवाज सुन जब मैं पहुँचा, तो हक्का-बक्का रह गया। एक आदमी को पीटने के लिए इतनी भीड़ जुटाने की क्या जरूरत थी। शुरू में समझाने और मामले को दबाने की कोशिश करता रहा, लेकिन कल्पू रास्ते पर आने की जगह मुझी पर उखड़ गया। और लाठी से वार करने के लिए तेजी में मेरी तरफ दौड़ पड़ा। फिर तो मेरा खून खौल गया। मजबूरन मैंने लाठी भाँजना शुरू किया तो सब मच्छर की तरह भनभना कर भागने लगे।....मौका पाकर मैंने जगन काका को उठाया और उन्हें सम्हालता गाँव की ओर चला आया।

जगन की पीठ काली पड़ गयी थी। जैसे लोहे का पुराना टुकड़ा। उमर ढलने और शरीर कमजोर होने से उन्हें बेहद तकलीफ का अनुभव हो रहा था। धनराजी से हल्दी-तेल गरम कराया। पीठ की मालिश

कर मैंने काका से कहा, आराम कीजिए। तकलीफ बढ़े, तो मुझे खबर कीजिएगा।....गाँव में गर्माहट है। चल कर देखूँ, लोग क्या सोच रहे हैं।

इस बीच कल्पू जबर सिंह के दरवाजे पर पहुँच गया था। दोनों बहुत नाराज थे। वे सात पीढ़ियों को गाली देकर मुझे नष्ट कर देने की घोषणा कर रहे थे।....'बाम्हन का लौंडा, चला है कम्युनिस्ट बनने। ससुरे को अभी पता नहीं है। मेरे रास्ते में जो पड़ा, वह हमेशा के लिए बर्बाद हो गया है। चार बाँस बजवाया नहीं कि दिमाग दुरुस्त हो जायगा। नादान आदमी ने राह चलते दुश्मनी मोल ले लिया है।

गँवई राजनीति में जबर खुद को तीसमार समझता था। मुझ पर दबाव डालने के लिए उसने पिता जी को दरवाजे पर बुलाकर तमाम तरह की नयी-पुरानी और खरी-खोटी बातें सुनायीं। पिताजी सन्न रह गये, जैसे समाज का निहायत भद्दा रूप उन्हें पहली बार दिखा हो। आदत के अनुसार वे चुपचाप हर बात सुनते चले गये।

'बोलिए कुछ। चुपाई मारने से काम नहीं बनेगा।' सरौते से सुपारी काटते हुए कल्पू ने डपट के लहजे में कहा।

'इस समय केवल सुनना जरूरी है। बाद में समझ-बूझ कर जवाब दूँगा।' पिता जी ने सहज वैष्णवी स्वभाव के अनुसार उत्तर दिया।

'पुरोहित के परिवार का आचरण गंगाजल-सा पवित्र होना चाहिए।' बत्तख की तरह गर्दन ऊपर की ओर तानते हुए जबर ने कहा। अब आपका परिवार भ्रष्ट हो चुका है। जगेसर, जिसे मैं लायक और होनहार लड़का समझ रहा था, चमारों के घर भोजन करने लगा है। उसका उठना-बैठना बस उन्हीं लोगों तक सीमित है। यह बर्दाश्त के बाहर हो चुका है।

'यही नहीं, कुछ और भी बातें हैं।' आग में घी डालते हुए कल्पू ने धीमी आवाज में कहा। जगेसर का चरित्र भी ठीक नहीं है। जगन की औरत धनराजी से उसका अवैध सम्बन्ध है। जब देखो, उसी के घर में घुसा रहता है। क्या जरूरत है, जगन के घर में जाने की।

अच्छा-भला आदमी अपने दरवाजे पर रहता है। वह दूसरों के मकान में घुसकर औरतों से हँसी-मजाक का रिश्ता कायम नहीं करता।

पिता जी की आँखों में क्रोधवश लाल डोरे उभर आये। अब वे जरूरत से ज्यादा सतर्क हो चुके थे। उन्हें लगा कि कोई जाल तैयार किया जा रहा है। हो-न-हो किसी दिन सम्पूर्ण परिवार को फँसा दिया जाय। पूरी जमात शराबियों की है। इनका क्या भरोसा। अभी कुछ सीधे चल रहे हैं। कल उलट कर डँस भी सकते हैं। फिर सब बेकार।

'जगन की औरत तो देवी है। पहली बार आपकी जबान से यह बात सुन रहा हूँ। इतने दिन हो गये उसे गाँव में आये, किसी ने यह शिकायत नहीं की। विवाहिता को व्यर्थ में बदनाम करना ठीक नहीं है।' पिता जी ने अंदरूनी तकलीफ को दबाते हुए निहायत बेचैनी के साथ कहा।

'वह ससुरी पतुरिया है कि देवी। आपको रंडी और सही औरत में अन्तर नहीं लगता।' पान की पहली पीक उगलते हुए कल्पू ने कहा। और ठट्ठा मार कर हँसने लगा था।

क्या जरूरत थी इस उमर में व्याह करने की। जगन का नाम भर है। काम तो जगेसर करता है। जबर ने यह बात निहायत फूहड़पने से कह दी। इधर जो नक्शा बन रहा है, उसे देखते हुए यहीं लगता है कि वह जगन का घर छोड़कर आपके यहाँ पहुँचने वाली है। मैं आगाह कर देता हूँ। और आप जानें। जबर का यह अन्तिम प्रचंड प्रहार था पिता जी पर।

जबर और कल्पू की शरारत भरी बातें सुनकर पिता जी बौखला गये। जैसे एक नहीं, अनगिनत भूत सवार हो गये हों उन पर।....जबर सिंह वह दिन भूल गये तुम, जब सोना तेलिन की बिटिया जबरन तुम्हारे घर में घुसाई जा रही थी। मेला लगा था इसी दरवाजे पर। किसी में इतनी हिम्मत न थी कि भीड़ को समझा-बुझाकर वापस कर देता। पाप तुम्हारा था। उस पाप को तुम्हारे घर में आना भी था। मैं न

होता तो दिन-दहाड़े तुम दुनिया से उठा दिये जाते। उस समय तुम्हारी आग बुझकर राख बन चुकी थी। दरवाजा बन्द किये आँगन में रो रहे थे। आज चले हो उपदेश देने। मुझे अफसोस है जबर। इस वक्त मेरे खिलाफ तुम बहुत आगे निकल गये हो। समझौते के स्तर पर कोई तुक-ताल बैठा पाना मुश्किल दिख रहा है।

मेरा लड़का कभी चरित्रहीन नहीं हो सकता। वह गुंडा-बदमाश नहीं, समाज का सही रहनुमा है। उसने अँधेरे में डूबे समाज को सही रोशनी दी है। इस देश में अब कोई चमार, पासी, मुसहर या भंगी नहीं है। सब इंसान हैं। समाज में फैला भेद-भाव समाप्त होने के करीब है। गरीबों पर जो जुल्म ढायेंगे, जगेसर उन सबका विरोध करेगा। यह भी सुन लीजिए कान खोलकर, मैं उसके सिद्धान्तों का समर्थक हूँ। जो समूह विरोध करने पर आमादा हो, आ जाय। उसका खुलकर मुकाबला किया जायगा।

'पुरोहिती कौन करेगा।' हारे हुए पहलवान की तरह कल्पू ने पूछा।

'क्या जरूरत है।'

'कल से ठाकुर-टोले में आने की जरूरत नहीं। हम दूसरे पुरोहित का इंतजाम कर लेंगे। देखता हूँ। महीने भर में चिल्लवा कर बैठा दूँगा।'

'परिवार का खर्च कैसे चलेगा।' जबर ने पूछा।

'दुनिया बहुत बड़ी है जबर। खाने बिना कोई नहीं मरता।'

कल्पू और जबर का चेहरा उतर चुका था। उनकी हर चाल, दाँव, फरेब बेकार साबित हो गयी।....पिता जी उठकर चल दिये थे। वे दोनों गुस्से में भरे उदास आँखों से उन्हें तब तक देखते रहे, जब तक आँख से ओझल नहीं हो गये।

इन्हीं दिनों एक पखवारे की छुट्टी पर शिव सहाय गाँव आया था। वह कलकत्ते की किसी जूट मिल में काम करता था। वहाँ के मजदूर

संगठन का वह नेता भी था। कलकत्ते के लोग उसके नाम से अच्छी तरह परिचित भी थे क्योंकि उसने मजदूरों की माँग को लेकर वहाँ के मिल-मालिकों को एक नहीं कई बार झुका दिया था। उसका विचार है कि जब तक समाज का मजदूर और किसान सुखी न होगा, देश खुश-हाल नहीं हो सकता।

उसे जब यह मालूम हुआ कि मैंने 'किसान-मजदूर संगठन' नाम की एक संस्था बना ली है और उसका काम काफी जोरों पर है, तो वह बेहद खुश हुआ और मिलने के लिए मेरे दरवाजे पर आया।

वह बिल्कुल सादे पोशाक में था। कुर्ता-पाजामा पहने और पुरानी चप्पल पैर में डाले हुए। शिव सहाय ने बिल्कुल औपचारिक ढंग से बातचीत का सिलसिला शुरू किया।....संगठन का उद्देश्य क्या है! इसके मेम्बर कौन हैं।

संगठन का लक्ष्य गाँव के कमजोर और दबे वर्ग को उठाना है। वैसे तुम्हें पता है शिव सहाय, अभी गाँव का आदमी पुराने विचारों में इतना जकड़ा है कि वह मुँह खोलकर सही बात भी नहीं कह सकता। ट्रेनिंग दे रहा हूँ। बाद में सब फर्राटे से बात कर सकेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। शुरू में चीजों का ज्ञान हो जाना जरूरी है। जुल्म-ज़ोर के खिलाफ बगावत का रास्ता बाद में तैयार किया जायगा।

इस संगठन के मेम्बर वही हैं जिन्हें इसमें शामिल होना चाहिए। जमींदारों तथा अमीरों को इसकी छाया भी नहीं छूने दिया है। उन पर क्या विश्वास! किसी भी समय साजिश की तहत वे बना-बनाया खेल बिगाड़ सकते हैं। तुम्हें पता चल गया होगा। आस-पास के धनी-मानी लोग मेरे जानी दुश्मन बन गये हैं। उनकी चले, तो मुझे कच्चा खा जायँ। मजबूर हैं, मेरे पीछे खड़ी भीड़ देख कर।

डरने की जरूरत नहीं है जगेसर। समय आ गया है जब गाँवों में इस तरह के कामों को शुरू किया जाना जरूरी है। इस देश की उन्नति कभी शहरों के बूते नहीं हो सकती। गिने-चुने शहरों से हो भी क्या

सकता है । गाँव जगेंगे, तो देश आगे बढ़ेगा ।

लेकिन एक बात समझ लो शिव सहाय । गाँव की जड़ता दूर होने में अभी कुछ समय लगेगा । जहाँ के लोग अनगिनत वर्षों से जोर-जुल्म की चक्की में पिसते आ रहे हैं, उनसे अचानक यह आशा करना कि वे क्रान्ति का मशाल उठायेंगे और लड़ाई की तैयारी कर मैदान में उतर आयेंगे, ठीक नहीं है । यह स्थिति आने में कुछ समय लगेगा । हमें धैर्य-पूर्वक उस समय की प्रतीक्षा करनी होगी ।

'चमार और मुसहर मजदूरी पाने लगे या पुराना रवैया अब भी जारी है' शिव सहाय ने पूछा ।

'हाँ इतना दम-तो आ गया है । मजदूरी न मिलने पर वे काम पर नहीं जाते । कोई कुछ कहने या डाट-फटकार की हिम्मत भी नहीं करता ।'

'इसे मामूली उपलब्धि मत समझो ।'

'लेकिन मजदूरी कम या देर से मिलने की शिकायत जरूर है ।'

'खैर, यह भी कुछ दिन में समाप्त हो जायगा ।' शिव सहाय ने कहा ! अभी झगड़ा-झंझट मत करना । गाँव है । यहाँ के लोग इस तरह की घटनाओं से भड़क सकते हैं । जड़ मजबूत हो जाय, फिर जो मन में आये, सो करना ।

विरोध की बात न करो शिव सहाय । सो-तो ठाकुर-टोले के जमीं-दार खुल्लम-खुल्ला मारपीट के लिए तैयार बैठे हैं । जितने दिन बीत जायँ, अच्छा है । जबर सिंह जी-जान से विरोधी प्रचार में जुटा है— 'जगेसर गुंडा है, चोर है, नक्सली है, चमारों की संगत में बरबाद हो रहा है ।' इसी तरह और भी जाने क्या-क्या, जिसे अभी तक मैं नहीं सुन पाया हूँ । रही बात झगड़े की, वह मेरे हाथ में नहीं है । जिस दिन ठाकुर लोग उतारू हो जायँगे, झगड़ा जरूर होगा । क्योंकि मैं भागने के बजाय मरना बेहतर समझता हूँ ।

विरोधियों के कारनामे का एक नमूना पेश करता हूँ । सुनो, कान देकर । कल्पू सिंह एक रोज छंगा को फुसलाकर शहर ले गये । अस्सी

का बुड्ढा मुसहर । फिर अक्ल का मोटा । वहाँ मिठाई में अफीम मिला कर उसे खिला दिया । छंगा सुधि-बुधि खो बैठा । फिर वह चुपचाप उसे तहसील की ओर ले गया ओर पूरी जमीन अपने नाम लिखा लिया ।

'इतनी हिम्मत ।' माथा ठोकते हुए शिव सहाय ने कहा ।

'और क्या !'

'फिर क्या हुआ ।'

दूसरे दिन मुझे पता चल गया । खारिज-दाखिल नहीं हो पाया था । मैं छंगा को साथ लेकर सीधे तहसीलदार के पास पहुँचा । तहसीलदार काफी तेज और दिमागदार आदमी था । उसने रजिस्ट्री को फ्राड घोषित कर मामले को तुरन्त समाप्त कर दिया ।

'कल्पू नाराज हुआ होगा ।'

'दुश्मनी शुरू होने में इस घटना ने आग में घी का काम किया ।'

'छंगा को जमीन पर कब्जा मिला या नहीं ।'

शुरू में कल्पू जमीन छोड़ने के इरादे में नहीं था । वह सबसे कहता फिरता, छंगा ने तीन हजार रूपया लेकर रुक्का लिख दिया है । कोई हँसी-खेल नहीं है । सेत-मेंत में दूसरे की जायदाद हड़पना मैं पाप समझता हूँ । पैसा मिलने पर ही मैं जमीन छोड़ूँगा । पंचायत जुटने पर जब रुक्का माँगा गया, तो वह आना-कानी करने लगा । असलियत यह रही कि छंगा ने पैसा लिया ही नहीं था फिर लिखत-पढ़त का सवाल कहाँ से उठता । मैंने जबरन खेत जुतवा-बुआकर छंगा के सुपुर्द कर दिया । कल्पू यह सब हाथ मल कर देखता रह गया ।

'गरीबों को सहारा देते रहो । तुम से बहुत उम्मीदें हैं ।'

'जीवन-ही अर्पित कर दिया है ।'

'मैं चलूँगा ।'

'हाँ, चलो । काफी देर हो चुकी है ।'

'कभी कलकत्ते आओ ।' शिव सहाय ने सुझाव के तौर पर कहा ।

'पता देते जाना । फुर्सत मिलने पर जरूर आऊँगा ।'

'बुलाने के पीछे कुछ कारण है ।'

'क्या, बता दो ।'

कलकत्ता आने पर तुम्हें कुछ मीटिंगों में ले चलूँगा । सोचने और बहस करने के नये तरीके मालूम होंगे । यह सब जानना पार्टी को जीवित रखने के लिए बहुत जरूरी है । तुम्हें कुछ साहित्य भी दूँगा ।

'तब तो आना आवश्यक है ।'

'हाँ, इसीलिए कह रहा हूँ ।'

'रात ज्यादा हो चुकी है । चाहो, तो खाना खा लो ।'

'नहीं, सब राह देख रहे होंगे ।'

जाओ । मगर शहर जाने के पहले एक दिन जरूर आना । अभी तुमसे और बातें करनी हैं । मेरे कुछ साथी हैं । मैं चाहूँगा, तुम उनसे भी मिल कर बातें कर लो ।

शिव सहाय इतना कह कर उठ गया । और अपने रास्ते पर चल पड़ा । मैं भी उसके साथ गाँव के किनारे तक गया । उसे तब तक देखता रहा, जब तक वह अँधेरे में खो नहीं गया । लौटते समय सोचता रहा—शिव सहाय जैसे कुछ लोग मिल जायँ, तो क्या कहना । सम्पूर्ण समाज कुछ-ही समय में बदला जा सकता है ।

जेठ महीने का कोई दिन । धरती आग की तरह धधक रही थी । और दिनों के मुकाबले में तूफान भी तेज था । लोग घरों में बंद आराम कर रहे थे । चिल्लाने पर भी कोई बात सुनने वाला न था । जैसे जादू की छड़ी छू जाने से पूरा गाँव सुन्न पड़ गया हो ।

छोटे-छोटे बच्चे रोते-चिल्लाते गाँव की तरफ दौड़े आ रहे थे । वे जोर-जोर से कुछ कह रहे थे । पर अंधड़ के कारण बात बिल्कुल समझ में न आ रही थी ।....इतने में धुएँ की एक लकीर आकाश में दिख गयी । फिर तो कारण समझने में कतई देर न हुई । आहट पाने के लिए मैं बाहर नीम के पेड़ के नीचे खड़ा हो गया ।

चित्तू गुहार लगाता गलियारे की तरफ से दौड़ा आ रहा था। मुझे देखते ही वह रो पड़ा। बोला—जबर ने गाँव में आग लगवा दी है।

—उसका दिमाग आसमान छू गया है।

—अदब और संकोच का यह फल।

'देर न करो भइया।' चित्तू ने कहरते हुए कहा। पूरा गाँव राख हो जायगा। सब दूर से तमाशा देख रहे हैं। जबर महुआरी में बदमाश लिए खड़ा है। कोई आग बुझाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है।

'कल्पू भी होगा।'

वह साँड़ की तरह हुँकड़ रहा है। चिल्ला कर कहता है, जो आग बुझाने आयेगा, उसकी ऐसी-तैसी कर दूँगा। औरतों के लिए भद्दे किस्म की गालियाँ बकता है। बाबू ! सुना नहीं जाता।

चल, अभी देखता हूँ। कमीने की औलाद का मुँह टेढ़ा न कर दिया, तो मेरा नाम नहीं। एक हाथ में लाठी और दूसरे में बालटी लिए मैं चमर-टोले में पहुँच गया। मुझे देखते ही हजारों की भीड़ उफन पड़ी। कुछ-ही देर में बढ़ती हुई आग पर काबू पा लिया गया। घंटे भर लगातार पानी फेंकते रहने पर तब कहीं जाकर आग बुझ पाई। कई घर जलकर राख हो गये। इस भयंकर दृश्य को देखकर तमाम औरतें भोंकाड़ छोड़कर रो पड़ीं। पुरुषों का कलेजा पसीज गया। सब कह रहे थे—हे राम ! यह आह धरती पर कहाँ समायेगी। उन पापियों पर बज्र जरूर गिरेगा जिन्होंने गरीबों की बस्ती उजाड़ देने का इंतजाम किया है।

बग्गा की मानसिक स्थिति ज्यादा खराब थी। रोते रहने के अलावा जैसे उसके पास कोई काम ही न था। पत्नी और बच्चे उसे घेरे खड़े थे। उन्हें भय था, कोई और खतरा न पैदा हो जाय। दो मिनट में बच्चे रो पड़े। फिर उसकी औरत सिसकने लगी। चमर-टोले के कई कुनबे सिर पर हाथ धरे बग्गा के इर्द-गिर्द बैठ गये थे।

'रोते क्यों हो। रोना बन्द करो बग्गा।' मैंने कहा।

'अनाज, कपड़ा जो कुछ इकट्ठा किये था, वह सब जलकर राख हो गया। अब बेटी की माँग में सिंदूर कैसे लगेगा। बेटी सयानी है। रिश्ता भी पक्का हो चुका है।

'क्या समझते हो। रोने से विवाह हो जायगा।'

'नहीं।'

'फिर, चुप रहो। सामने जो विपत्ति है, उसे झेलो।'

'सही कह रहे हो भइया। पर यह दृश्य देखा नहीं जा रहा है। भगवान भला करें उनका जिन्होंने हमें यह दिन दिखाने की कोशिश की है।'

'बेटी का विवाह जरूर होगा। पूरा खर्च मैं दूँगा। अब चुप हो जाओ। तुम सब के रोने से दुश्मन खुश होगा। उसे खुशी मनाने का मौका क्यों दिया जाय। समझ गये मेरी बात। दरिन्द का मुकाबला दरिन्दगी से करना पड़ेगा।

झल्ली चौधरी अब तक हाँफते-काँपते किसी तरह पहुँच गये थे। धूप से उनका चेहरा लाल हो रहा था। हर तरफ मरघट जैसा वातावरण देखकर उनका दिमाग खराब हो गया। मेरी तरफ देखकर वे बोले—'जबर का अन्याय अभी कितने दिन और चलेगा। पानी सिर तक पहुँच चुका है। मरने-जीने का मोह छोड़कर कोई ठोस निर्णय लेना पड़ेगा। मेरी गाँठ में पैसे के नाम पर कुछ है नहीं। पर जरूरत पड़ने पर लोटा-थाली भी बेच सकता हूँ।'

'चौधरी! आप साथ में खड़े रहें, इतना ही पर्याप्त है।' मैंने कहा।

'खड़ा रहना मामूली बात है।'

'और क्या कर सकते हैं।'

'मैं जान भी दे सकता हूँ।'

'इसकी कोई जरूरत नहीं है।'

इतने में छेदी बोल उठा—'आगजनी का मामला है। पुलिस को सूचना देकर रिपोर्ट दर्ज कराना आवश्यक है। जो होना था, हो चुका।

उल्टे मार खाने की नौबत न आ जाय। पुलिस का क्या भरोसा। केस बनाने-बिगाड़ने में कितना समय लगता है।

चौकीदार को थाने भेज दिया है। वह पहुँच रहा होगा। पुलिस घटना-स्थल तक आयेगी जरूर। पर उनके आने से खास फायदा नहीं होगा। जमींदार घूस-पात देकर उन्हें दबा देंगे। जबरा से कौन नहीं डरता। समाज और देश की राजनीति भी उन्हीं के पक्ष में हो जाती है।....कानून की बात है। पुलिस को भी देख लिया जाय।

धीरे-धीरे सब अपने घरों की ओर चल दिए थे। चलते समय मैंने सबको सचेत करते हुए कह दिया था—'पुलिस दरोगा आयें, तो मुझे खबर कर देना। मेरे आये बगैर तुम लोग उनके पास न जाना।'

मेरे लौटने के ठीक बाद जगन काका शहर से लौट आये थे। गाँव की हालत देखकर उन्हें काफी तकलीफ हुई थी। जगन ने एक बार जले मकानों पर निगाह डाली फिर तेज साँस लेकर कहने लगे—'अमीर हर युग में गरीब को दबाता रहा है। उनके रहते गरीब पनप नहीं सकता। अमीर पीटता है और गरीब चुपचाप सह लेता है।....सहन करना ही गलत है। बदमाश का मुकाबला जरूरी होता है।'

इस बीच टोले के तमाम लोग जगन को घेरकर बैठ गये। मौन और उदास आँखों से काका का चेहरा ताक रहे थे। काका को हुक्का थमाते हुए बग्गा ने कहा—'गनीमत समझिए। ज्यादा नुकसान नहीं हुआ। जगेसर उपधिया न पहुँचते तो पूरा गाँव राख का ढेर बन जाता। उनकी ललकार से विरोधियों का पैर उखड़ गया।....अच्छा हुआ, आप नहीं थे। आपके रहने से झगड़ा बढ़ सकता था।'

सामने के झुलस चुके आम के पेड़ों को देखकर काका उदास हो गये थे। उधेड़बुन में पड़े वे बगल में पड़ी चारपाई पर लेट गये। जैसे उनके चारों तरफ अँधेरा छाया हो।....जगन काका अभी कपड़ा भी नहीं उतारे थे कि सामने से दो सिपाही आ धमके। उनके चेहरे पर क्रोध की हल्की छाया थी।

'दरोगा जी ने सबको बुलाया है।' एक ने नथुने फुलाकर कहा।

'कहाँ बुलाया है।' किसी ने पूछ दिया।

'जबर सिंह के दरवाजे पर।'

'वही एक जगह है, दरोगा जी के लिए।' जगन काका ने व्यंग्य के लहजे में कहा।

'चुप रहो।'

'क्यों।'

'कानून मत बघारो। चलो, वहीं अपने बाप से जाँच-पड़ताल कर लेना।'

'सिपाही जी! इसमें नाराज होने की बात कहाँ है।' धनराजी बोल पड़ी। गरीबों की भाषा समझने की कोशिश कीजिए। हम सबके लिए जबर सिंह विश्वसनीय आदमी नहीं है। वहाँ पहुँचने पर वह दूसरे किस्म की लड़ाई शुरू कर सकता है। कौन गारंटी देगा कि यह सब नहीं होगा।

'दरोगा के रहते किसमें इतनी हिम्मत है कि हाथ छोड़ दे।' दूसरे ने कहा। अब देर मत करो। उठो और चल दो।

जगन उड़ती चिड़िया का रंग पहचानता है। वह पूरी बात समझ गया। जमींदारों ने मिलकर मजे का पैसा खिला दिया है, पुलिस को। इनके बोलने का तौर-तरीका इसी बात का प्रमाण है।....वह उठ गया और सबको साथ लिए जबर के घर की ओर चल पड़ा।

छंगा से मुझे पूरी खबर मिल चुकी थी। मैं पहले ही जबर के दरवाजे पर पहुँच गया था। दरोगा हरदयाल सिंह एक ऊँची कुर्सी पर बैठे सिगरेट का छल्लेदार धुआँ हवा में छोड़ रहे थे। बगल में जबर बैठा था। वह निहायत नाटकीय तौर से दरोगा के कान में मुन्न से कुछ कह देता और दोनों एक साथ हँसने लगते। दरअसल वह एक-के-बाद एक अपने विरोधियों का परिचय दे रहा था।

झल्ली चौधरी के साथ मैं बिल्कुल पीछे की ओर चुपचाप बैठा था।

मैं चाहता था, जो हो सही तरीके से हो। खामखाह शब्द लड़ाने से क्या फायदा।....गाँव के अधिकांश लोग इकट्ठे हो गये थे। कार्यवाही शुरू होने की प्रतीक्षा में सब एकटक दरोगा की ओर देख रहे थे। इतने में कल्पू की तरफ देखते हुए दरोगा ने पूछा—'आग कैसे लगी। आप कुछ बता सकते हैं। गाँव के मुखिया को हर बात की खबर होनी चाहिए।'

'जहाँ आग लगी है, वहाँ के सब लोग आ गये हैं। इन्हीं से पूछ-ताँछ शुरू कीजिए। मुझे जो कहना है, बाद में कह दूँगा।'

'आग लगी नहीं, लगाई गयी है।' जोगिन्दर ने ऊँची आवाज में कहा।

'किसने लगाई। उसका नाम बताओ।' दरोगा ने पूछा।

जगन काका से न रहा गया। वे खड़े होकर कहने लगे—'आग जबर और कल्पू ने लगायी है। ये दोनों जुल्मी हैं। इन्हें कानून की तहत सजा मिलनी चाहिए। क्या आप ऐसा करने की हिम्मत रखते हैं।'....समर्थन में पूरी भीड़ चिल्ला उठी। जगन ठीक कह रहे हैं। यही सच है।

बुलन्द आवाज सुन कर दरोगा के रोंगटे खड़े हो गये। वह बहुत नाराज हुआ। भीड़ की बौखलाहट से घबड़ा कर बन्दूकधारी सिपाही चारों तरफ घूमने लगे। दरोगा कुर्सी पर बैठा भद्दे किस्म की गालियाँ सुनाता रहा। कभी मूँछ ऐंठता, कभी बाँह मरोड़ता और कभी आसन बदलने लगता। उसे अपने ही भीतर ऊक-बीक महसूस हो रही थी।

मगर असर कुछ भी न पड़ा। आवाज घटने की जगह और बढ़ने लगी। लोगों ने अन्याय के विरुद्ध नारा लगाया और अपनी जगह पर खड़े हो गये। जैसे सब को मालूम हो गया हो, भविष्य में क्या होने जा रहा है।

दरोगा आवेश में बड़बड़ाने लगा—'मुझे इस गाँव का पूरा इतिहास मालूम है। यहाँ जब तक जगेसर उपधिया रहेगा, जगन, बग्गा और जोगिन्दर जैसे लोगों की संख्या बढ़ती रहेगी। समाज में जिनकी कोई अहमियत नहीं, वे बगावत के नाम पर सिर उठा रहे हैं। जगेसर नक्सली

है। वह क्रान्ति के नाम पर खून-खराबा कराना चाहता है। अग्निकांड की यह घटना जगेसर और जगन का पूर्व नियोजित षडयंत्र है। उपधिया को जेल की हवा न खिला दिया तो मूंछ के बाल उखड़वा दूँगा।....

अब मैं दरोगा के बिल्कुल सामने था। उनका हर शब्द मेरे कानों में साफ-साफ पड़ रहा था। मुझसे नहीं रहा गया। मैंने कहा—'यह आपकी आवाज नहीं है दरोगा जी। जबर का पैसा है जो सिर पर चढ़ कर चिचिया रहा है। गाँव का गरीब तपका तंद्रा तोड़ कर जाग गया है। उसे गोली बन्दूक से दबाया नहीं जा सकता। न्याय को समाप्त कर आप अन्याय को बढ़ावा देने आये हैं। हमें आपकी कोई जरूरत नहीं है। अब हम लोग जा रहे हैं। कभी समय मिला, तो अन्याय का बदला लेकर रहेंगे। फिर समूची भीड़ मेरे पीछे चल पड़ी थी।

लगभग पन्द्रह दिन बाद की घटना है।....आधी रात के करीब जबर ने अपने दरवाजे के सामने का झोंपड़ा जला दिया और गला फाड़कर गुहार लगाना शुरू कर दिया—'डाकू आ गये हैं, घर लूट लिया, घर वालों को पीट रहे हैं।' इसी तरह के शब्द गढ़ता वह लगातार चिल्लाने में जुटा रहा। पन्द्रह मिनट में तमाम लोग इकट्ठे हो गये। मगर वहाँ न कोई डाकू था और न डाके की निशानी। केवल कंडियों से भरा झोंपड़ा धधक कर जल रहा था।

'डाकू किस तरफ गये।' बग्गा ने हाँफते हुए पूछा।

'पूरब की ओर।'

'लगभग कितनी दूर।'

'ज्यादा दूर न गये होंगे। पीछा किया जाय तो मुकाबला हो सकता है। जबर ने रुआँसी सूरत बनाते हुए कहा।

'हम लोग उसी तरफ से आ रहे हैं। कोई दिखाई तो नहीं पड़ा।' मनोहर ने जबर की तरफ आश्चर्य से देखते हुए कहा।

माहौल का बनावटी खाका देखकर बग्गा ताड़ गया। मामला गड़बड़ है। यह किसी आदमी को फँसाने के चक्कर में है। तलवार जाने किसकी
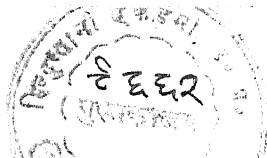
गर्दन पर झूलेगी । उसने व्यंग्य के लहजे में कहा—'हो सकता है, डाकू पंख लगाकर आसमान में उड़ गये हों । फिर पूरब की तरफ भागने का सवाल कहाँ पैदा होता है । क्यों बाबू साहब ठीक कह रहा हूँ न । गलत बोलूँ, तो जबान पकड़ लेना । मामला बहुत कुछ ऐसा ही हैं ।'

कल्पू सिंह अभी तक नहीं आये थे । जब भीड़ वापस होने लगी तो बीस-पचीस आदमियों के साथ वह ललकारते-दहाड़ते जबर के घर के सामने पहुँच गया । लाठी का हूर फटकाते हुए कहने लगा—'किसी और की नहीं, यह जगेसर की करतूत है । कल तक साला नेता बना घूमता रहा और अब डाकू के रूप में सामने आ रहा है । मैंने उसे पह-चान लिया है । भागने वालों में वह सबसे आगे था ।' तुम इतना भी अन्दाज नहीं लगा सके । जबर को डाँट पिलाते हुए कल्पू ने कहा । अभी जाओ, थाने में जगेसर के नाम रिपोर्ट दर्ज करा दो ।

सिवान में चलते-चलते जगन काका एकाएक रुक गये । वज्रपात का-सा विचित्र अनुभव हुआ । क्षण भर में वे भूत से भविष्य तक की बात सोच लिए । क्या होगा, कैसे होगा, किस तरह के हथकंडे अपनाये जाएंगे । ....और गरीबों का रक्षक जगेसर, उसे घिनौने तरीके से फँसाया जा रहा है । उनके मन में अद्भुत बेचैनी हुई । सोचा, चलकर कल्पू से पूछूँ—'जगेसर गाँव में कहाँ है । वह तो कलकत्ते गया है । उसे व्यर्थ में क्यों गुनहगार बना रहे हो ।'....लेकिन भयवश उन्होंने यह कदम नहीं उठाया । पागल की तरह लाठी का सहारा लिए खड़े रहे ।

बग्गा कुछ दूर निकल गया था । पीछे मुड़ कर देखा तो काका नहीं थे । उसने जोर की आवाज दी । काका मन्द गति से चलते हुए थोड़ी देर में करीब आ गये । बग्गा ने पूछा—'क्या बात है, काहे रुक गये ।'

'यों-ही ।'

'शरीर कन्ट्रोल में नहीं है क्या ।'

'ठीक हूँ ।'

'हाथ काँप रहा है । कुछ बात जरूर है ।'

'तुमने सुना नहीं।' काका ने कहा।

'क्या !'

'कल्पू कह रहा है, यह जगेसर की करतूत है। वह गिरोह में खुद शामिल था। आग उसी ने लगाई है। उसे भागते हुए मैंने देख लिया है।'....ठंड के बावजूद जगन के माथे पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं। उन्हें लग रहा था जैसे देह कमजोर हो रही है और वे पछाड़ खा कर गिर पड़ेंगे।

'मैं पहले ही समझ गया था।' बग्गा ने कहा।

'क्या !'

'डाका डालने का नाटक रचा गया है।'

'और !'

'इसमें किसी को फँसाने की कोशिश की जायगी।'

'जगेसर फँस गया।' जगन काका ने काँखते हुए कहा। कोई कोर-कसर नहीं। पक्के तौर पर। उसे तार देकर कलकत्ते से बुला लिया जाय। पुलिस तो खिलाफत में रहेगी किन्तु ऊपर के अधिकारियों से मिल कर काम बनाया जा सकता है।

'जो सोच रहे हो, वह नहीं होगा काका।' बग्गा ने कहा। जगेसर घूस नहीं दे सकता। पुलिस बिना पैसा लिए कुछ करेगी नहीं। ऊपर भी यही रवैया है। अब तो लगता है, मुकदमा चलेगा। फैसला कोट-कचहरी से होगा। मन में तहिया कर रख लो मेरी बात। परेशान करने का असली सिलसिला अब शुरू हो रहा है। कमर कसकर तैयार रहने की जरूरत है। साल-छह महीने बाद और कुछ हो सकता है।

'तैयार हूँ। बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है।' जगन काका गर्दन खुजलाते हुए बोल पड़े। मुकाबले से घबड़ाकर चुप्पी साधे कि सब बे-मौत मारे जायँगे। खिसियानी बिल्ली की तरह दाँत चियारे सब मौके की तलाश में हैं। आज जगेसर को फँसाया। कल हम सब एक साथ किसी दलदल में तड़फड़ाने के लिए छोड़ दिये जायँगे।

काफी रात गये तक कुछ लोग जगन काका के दरवाजे पर बैठे आपस में बतियाते रहे। बीच-बीच में चिलम या बीड़ी का दौर भी चल जाता था। ओसारे में बैठी धनराजी से न रहा गया। उसने कहा—'अभी से नींद क्यों हराम करते हो। भगवान पर भरोसा रखो। उसके पास दो नहीं, हजार आँखें हैं। कल्पू और जबर को जरूर दंड मिलेगा।' ....यह कहकर धनराजी सबका चेहरा देखने लगी थी। सब उदास और सुन्नता की स्थिति में बैठे थे। जैसे किसी की समझ में कुछ न आ रहा हो।

चमरटोले की यह मीटिंग कब खत्म हुई, किसी को पता नहीं। कहते हैं, सुबह सूरज की रोशनी में वहीं से उठकर सब मेरे घर की ओर आ गये थे। मेरे पिता से कुछ कहने और सलाह-मशविरा लेने के लिए। बेचारे किसके पास जाते। सही रास्ता दिखाने वाला कोई न था। उन्हें अँधेरे कुएँ में झोंकने के लिए सब तैयार थे।

मैं कलकत्ते से लौट आया था। घटना के ठीक दो-तीन दिन बाद। जगन काका और बग्गा ने मुझे पूरी बात समझा दी थी। उस वक्त मैंने कहा था—'जबर सूअर की औलाद है। देख लूँगा उसे।' फिर चुपचाप क्रोध पीता अकेले में बैठा रहा। उसी रोज की बात है। दिन ढलने के बाद एक सिपाही आया। उसने मुझे मुकदमे की एक नोटिस दी। उसमें लिखा था—

'जगेसर बनाम सरकार।'

दिन, हफ्ते और महीने बीत गये। जाने क्या बात हुई, गाँव से कोई न आया। जगेसर के कानों में अचानक फिर तमाम आवाजें गूँज गयीं। जैसे शब्दों का कोई तूफान आया हो, थमने का नाम न ले रहा हो—'जगन नहीं रहा। बग्गा को मार दिया। जगेसर की दुलहिन को दुश्मन ने गोली से भून दिया है।....जब वह जेल से वापस होगा तो हम लोग उसे क्या जवाब देंगे। ...मरो, कटो, लेकिन बदला लेकर जीना है।'

●

अंधकार

अभी दो साल पहले तक अशर्फी मामूली किस्म का आदमी था। मुहल्ले में उसके परिचय का दायरा बहुत सीमित था। केवल रिक्शेवाले या मजदूर, जो उसकी छोटी दूकान से उधारी का सामान खरीदते थे, वही उसका नाम जानने और परिचय बढ़ाने के लिए मजबूर थे। अशर्फी इस धंधे से संतुष्ट था क्योंकि थोड़ी मेहनत और दौड़-धूप करने से उसका काम आसानी से चल जाता था।

अशर्फी का बचपन बहुत दुख में बीता था। बाप जब तक जिंदा रहा, परिवार परेशान था। क्योंकि वह शराबी और सिनिक था। दिमाग चकराने पर वह आये दिन झगड़ा कर लेता था। उसके मन में अच्छे-बुरे का कोई विचार नहीं था। पुलिस ने कई बार पीटा, कनछेदाई की, हर मोड़ पर ठोकर खाया मगर उसमें किसी तरह का बदलाव नहीं आया।....शराब के नशे में वह भादौं की एक अंधेरी रात में घर छोड़ कर कहींचला गया।

घर के लोग कुछ समय तक इस समस्या को लेकर परेशान रहे। लेकिन अन्त में सब को निराश हो जाना पड़ा। महीनों बाद सूचना मिली कि वह दुनिया से कूच कर गया है। दो-चार दिन तक घर में दुख का वातावरण छाया रहा। पर संतोष की स्थिति में सब सहूलियत में हो लिए और शान्ति महसूस करने लगे। क्योंकि उसके मरने से किसी को खास तकलीफ नहीं थी। अफसोस है कि सम्पत्ति के नाम पर अशर्फी को बाप से कुछ न मिला था। गनीमत समझिए कि तीन कमरों का खपरैल मकान भूले-भटके किसी तरह बच गया था। शायद बाप की निगाह इस तरफ नहीं पड़ी थी। वह इसे भी बेच कर दारू पी सकता था।

अशर्फी से जब कोई माँ के बारे में पूछ-ताछ करता, तो वह चुप्पी साध कर दूसरी ओर देखने लगता था। क्योंकि उसे माँ का चेहरा याद ही न था। वह बहुत पहले किसी के पीछे हो चुकी थी। पड़ोसियों का अंदाज है, उस वक्त अशर्फी की उम्र साल-डेढ़ साल से ज्यादा न रही होगी।

वह पति के व्यवहर से ऊब गयी थी। घर छोड़ने के अलावा उसके सामने दूसरा विकल्प न था। उसने चलते समय यह भी सोचा कि वह बच्चों को साथ लेती जाय, पर ऐसा कर सकना उसके लिए सम्भव न था। क्योंकि रहस्य खुलने पर उसे जान का खतरा था। अशर्फी की देखभाल उसकी दादी ने किया था। उसी को वह माँ कहता था।

अशर्फी के एक बहन भी थी। उमर में वह दस साल बड़ी थी। उसका नाम लछमनी था। घर में किसी का अंकुश न होने से यह आजाद तबीयत की हो चली थी। लछमिनिया वैसे शक्ल-सूरत में अच्छी तो न थी पर उम्र की ताजगी के कारण आकर्षक जरूर थी। आये दिन दरवाजे के सामने लड़कों में मार-पीट होती। और हो-हल्ले का वातावरण व्याप्त हो जाता। पूछने पर पुलिस-चौकी का हेड कांस्टेबिल कह देता—'साहब ! मुझसे क्यों पूछते हैं। इस मामले को मुहल्ले का हर आदमी समझता है। लछमिनिया के रहते झगड़ा खतम होने का सवाल ही नहीं उठता।'

दीवाली के इर्द-गिर्द की बात है। एक रोज सुबह लछमिनिया के गायब होने की खबर सब तरफ फैल गयी। लाख कोशिशों के बावजूद उसका कहीं पता न लग पाया। साल भर बाद हवाई खबर फैली कि वह शहर के किसी लड़के के साथ बम्बई पहुँच गयी है। शायद वहाँ घर बसाने का पूरा इंतजाम हो चुका था। शुरू में इस सवाल को लेकर पूरा मुहल्ला गर्म था। किन्तु बाद में धीरे-धीरे ठण्डा पड़ गया। जैसे निहायत छोटी घटना हो।

इन तमाम समस्याओं के बीच अशर्फी बड़ा होता रहा। हर घटना का ज्ञान होने के बावजूद वह घरेलू कमजोरियों से बच कर चलने की कोशिश करता था। मुहल्ले में उसकी कोई इज्जत न थी। हर आदमी उसे उपेक्षा भरी दृष्टि से देखता था।

अब अशर्फी के बारे में थोड़ा-बहुत अंदाज जरूर लगाया जा सकता है। माँ, बाप और बहन सभी एक के बाद एक परिवार छोड़कर चले गये। बदनामी ऊपर से। अशर्फी इन बातों से दुखी न था। उसे माँ-बहन के निकल भागने की चिन्ता भी न थी। क्योंकि वह मोटे दिमाग का पैसा कमाऊ आदमी था।

मुहल्ले में अलग-थलग रह कर अशर्फी व्यापार बढ़ाने के चक्कर में था। पर उसे सही रास्ता न मिल पा रहा था। नमक, बीड़ी या आटा-चावल बेच कर पैसा इकट्ठा करना मुश्किल था। खुद को पैसे का मालिक बनाने के मतलब से वह काफी समय तक परेशान घूमता रहा। थोड़े ही समय में उसे साफ रास्ता दीखने लगा था।

अशर्फी की जिन्दगी में अचानक एक नया मोड़ आया। वह रातों-रात लखपती बन गया। अब उसका नाम शहर का हर आदमी जानने लगा है। इन दिनों वह एक साथ दो फैक्ट्री लगाने की बात सोच रहा है। पैसा है, तो क्या चिंता। कठिन-से-कठिन काम आसानी से हो जायगा।

अशर्फी ने निश्चित कर लिया कि बंटी को किसी भी कीमत पर नौकरी में नही रखना है। बंटी मेहनती है, वफादार है, और भी तमाम

गुण उसमें मौजूद हैं। मगर भविष्य में वह किसी भी समय खतरनाक साबित हो सकता है। रहस्य कितने दिन छिपेगा। एक दिन बंटी पूरी कहानी से परिचित होगा और खिलाफत के लिए हर सम्भव प्रयास करेगा। इसलिए समय रहते उसे रास्ते से अलग कर देना ही ठीक है।

बंटी उसका खास आदमी था। निहायत आत्मीय और घर जैसा। मगर अशर्फी के सिर पर जब भी पाप सवार होता है, वह बंटी को संदेह की निगाह से देखने लगता है। यदि कोई जाँच-पड़ताल कर बंटी से यह पूछता कि अशर्फी तुमसे क्यों नाराज है, तो वह यही कहता— 'बाबू! ऐसी कोई बात नहीं है। यदि वे नाखुश हैं, तो वही इसका कारण बता सकते हैं।'

घर से भगा देने की नीयत से अशर्फी ने उसे कई बार मारा-पीटा और गाली दिया। निर्दोष होने के बावजूद बंटी कुछ बोल नहीं सका। मार खाकर वह चुप रह गया। असमर्थता की स्थिति में होने के कारण इसके अलावा उसके पास कोई रास्ता भी न था।

बंटी ने सोचा भी न था कि अशर्फी उसके साथ इस किस्म का व्यवहार कर सकता है। वह हमेशा खुश रहता और घर से दूकान तक-के तमाम कामों में भिड़ा रहता था। उसने खुद को कभी नौकर नहीं समझा। मालिक की हैसियत से वह हर काम में दिलचस्पी लेता था। घर के हर आदमी पर उसका बहुत ही अच्छा प्रभाव था।

पार्वती अशर्फी के घर चौका-बासन और सफाई का काम करती थी। उसे किसी तरह मालूम हो गया था कि बंटी को जल्द ही नौकरी से अलग करने का इंतजाम हो चुका है। कारण क्या है, इसका पता उसे बिल्कुल न था। सारी बातें जानकर पार्वती बहुत दुखी हुई थी। लेकिन क्या करे। उसके हाथ में कुछ था नहीं। जहर का घूँट पीकर वह चुप रह गयी थी।

उस रोज बंटी शैतान की तरह काम करने में जुटा था। गोदाम के भीतर वह अकेला था। वहाँ दूसरा आदमी न था। उसे देखते ही पार्वती

ने कहा—'बैल हो गया है क्या ! ज्यादा मेहनत करना बन्द कर दे। सेहत खराब हुई, तो कोई बात न करेगा। मेरी बात का अर्थ दूर तक समझ ले।'

'क्या मामला है।' बंटी ने निश्छल भाव से पूछा।

'समझे नहीं।'

'नहीं।'

'मार खाने पर भी दिमाग नहीं खुला।

'हाथ पकड़ना मुश्किल है।'

'पहले तो नहीं पीटता था।'

'ठीक कहती हो।'

'जरूरत से ज्यादा मेहनत न करो।'

'बकवास मत करो पार्वती।' हर तरफ आश्चर्य भरी दृष्टि से देखते हुए बंटी ने कहा। कोई खास बात हो, तो बता दो। समय रहते दूसरा इंतजाम कर लूँ। संदेह में जीना ठीक नहीं होता। जिन्दगी में पहली बार घबड़ाहट का अनुभव कर रहा हूँ।

गैलरी में धुर पीछे की ओर ताकते हुए पार्वती न कहा—'बेचैन होने से काम नहीं चलेगा। समय का झटका बर्दाश्त करना इंसान के लिए जरूरी है। इसके बगैर आदमी मजबूत नहीं बन पाता। खास बात आने पर मैं तुम्हें फिर सूचित करूँगी।

बात को बदलने की कोशिश मत करो।' बंटी ने पसीना पोछते हुए कहा। मेरे बारे में कुछ सुना है क्या ! आज तुम्हारे शब्दों से लग रहा है कि यहाँ मेरा भविष्य सुरक्षित नहीं है। कुछ मालूम हो जाता, तो मुझे भी तसल्ली हो जाती।'

'फिलहाल अभी बताना नहीं चाहती थी।' पार्वती ने कहा, 'इच्छा है, तो सुन लो। मगर यह बात किसी से बताना मत। क्योंकि खतरा बढ़ जायगा।....अशर्फी तुम्हारे खिलाफ है। वह हर तरह से तुम्हें बद-नाम करने की कोशिश में लगा है। कुछ ही दिन में बाजार के लोग

तुम्हें अच्छी निगाह से नहीं देखेंगे। जाने क्यों, वह चाहता है कि तुम बाजार छोड़कर भाग जाओ।

यह बात सुन कर बंटी की घबड़ाहट और बढ़ गयी। देर तक माथा रगड़ने और सोचने के बाद उसने कहा—'अच्छा होगा कि मैं अशर्फी से बात कर लूँ। झगड़ा मोल लेकर रहना ठीक नहीं है। राजी-खुशी नौकरी छोड़ना ज्यादा अच्छा है।'

'जल्दी न करो।' पार्वती ने कहा।

'क्यों।'

'कुछ और मालूम होने दो।'

'कैसे पता चलेगा।'

'मुझे खबर हो जायगी।'

'तुम्हें।'

'हाँ।'

'कैसे।'

'यह मत पूछो।'

पार्वती कुछ देर में चली गयी थी। उसके जाने के बाद बंटी उदास होकर दरवाजे के सामने बैठ गया था। अशोक के पेड़ पर चहकती चिड़ियों को देखकर उसने सोचा—'कितना अच्छा जीवन है इनका। न किसी का बंधन। न किसी का डर। जहाँ चाहें, पंख फड़फड़ा कर पहुँच जायँ।' फिर बीड़ी लेस कर वह आकाश की ओर ताकने लगा था।

कोई काम शुरू करने के पहले अशर्फी पत्नी की राय जरूर लेता था। बंटी को निकालने के बारे में भी उसने यही किया। वैसे मनोरमा इतनी काबिल न थी कि हर बात में उसकी राय ली जाती। लेकिन अशर्फी की मजबूरी थी। वह अपनी बात किसी पर जाहिर करना पसन्द न करता था।...अशर्फी की इस आदत को पत्नी पसन्द न करती थी। क्योंकि राय-मशविरे के बावजूद वह अपने मन से ही हर काम करता था।

बंटी को निकालने की बात मनोरमा को पसन्द न आयी। वह

नाराज होकर बोली—'कुछ तो खयाल करो। दातादीन का लड़का है। कितना भला आदमी था वह। उसके परिवार में जब कोई नहीं बचा, तो तुम बंटी को हटाने का इंतजाम कर रहे हो। भगवान भी क्षमा न करेगा। समझ लो। बाद में पछताना न पड़े।'

'दातादीन का नाम न लो।' अशर्फी ने आँख लिलोर कर कहा।

'क्यों।'

'वह धूर्त था।'

'मैं नहीं मानती।'

'न मानों। मैं कब कहता हूँ।'

'मुझे पता है, दातादीन की मृत्यु कब और कैसे हुई है।' उलझे बालों को ठीक करती हुई मनोरमा ने कहा। 'तुम समझते होगे कि असलियत कोई नहीं जानता। यह तुम्हारा भ्रम है। शहर का ज्यादातर आदमी तुम्हारे किये पाप को जानता है।'

'तुम नाराज क्यों होती हो।' अशर्फी ने कहा।

'तुम्हारी आदत से।'

'तुम्हें पूरी बात नहीं मालूम।'

'जरूरत भर का जानती हूँ।'

'दातादीन का मरना जरूरी था।'

'क्यों!'

'उसे व्यापार का पूरा ज्ञान हो गया था।'

'इसमें क्या बुराई थी।'

'वह साथ छोड़कर दुश्मन बन सकता था।'

'यह कैसे सोच लिया।' मनोरमा ने कहा, 'वह तमीजदार नौकर था। फरेब रचना उसके स्वभाव में नहीं था। जो आदमी हर क्षण जान देने के लिए तैयार हो, वह धोखा कैसे दे सकता है। तुम्हारे अंदर आदमी को समझने की ताकत नहीं है।'

'तुम्हें उस पर अंधविश्वास था। खीझ जाहिर करते हुए अशर्फी

ने कहा। स्मगलर किसी का विश्वास नहीं करता। अपने बाप का भी। यह बेहद खतरनाक पेशा है। बगैर सोचे-समझे तुम्हें नहीं बोलना चाहिए।

'खैर जो हो गया, उस पर विचार करना बेकार है।' मनोरमा ने कहा, 'बंटी को निकालने पर क्यों तुले हो। वह तो अभी लड़का है। तुम्हारे रास्ते में रोड़ा भी नहीं बन सकता। मेरी समझ में वह दातादीन से भी ज्यादा विश्वसनीय है। चाहो तो स्मगलिंग के पेशे में लगा लो। ऐसा न करो, तो घर में ही पड़ा रहने दो।'

अशर्फी कुछ देर तक चुप रहा। फिर बोला—'यह सम्भव नहीं है। बड़ा होने पर उसे पता जरूर चलेगा। बाप की हत्या से दुखी होकर वह मेरे खिलाफ कदम उठा सकता है। सोचता हूँ जो काँटा रास्ते में है और किसी भी समय खतरा पैदा कर सकता है, उसे समय रहते क्यों न अलग कर दिया जाय। हित इसी में है।'

'कैसे पता चला कि वह काँटा है।' मनोरमा ने पूछा। बंटी ने अभी तक ऐसा कोई काम ही नहीं किया जिसे आधार बना कर उस पर लांछन लगाया जा सके। गरीब का सहारा खत्म करने का प्रयास मत करो।

यह सुनते ही अशर्फी का खून गर्म हो गया। वह इतने जोर से बिगड़ा कि मनोरमा सकते में आ गयी।....औरत की जात, तुम्हें कुछ पता भी है। सिर पर बड़ेर गिरेगी, तब होश आयेगा। सौ बार बताया। फिर कह देता हूँ। कान खोल कर सुन लो—'स्मगलर दुनिया में किसी पर भरोसा नहीं रखता। बंटी को निकालूँगा। कल सुबह। इस महीने का पैसा देकर।'

आँखें लाल किए अशर्फी पलंग से उठकर कमरे के बाहर चला गया। मनोरमा डरी हिरनी-सी आँख दबाये उसे देख रही थी। पार्वती उस समय बरामदे में झाड़ू लगा चुकी थी। अब वह धीरे-से आँगन की तरफ बढ़कर बिखरे बर्तन इकट्ठा करने लगी थी।

आदमी का इतिहास एकाएक कैसे बदलता है या आदमी को पहचानना क्यों मुश्किल हो जाता है, इसका बेहतरीन नमूना अशर्फी है। अशर्फी क्या था, यह सुन लिया। उसने किस तरह पैसा जोड़ा, इसे भी समझ लीजिए। क्योंकि यह जाने बगैर अशर्फी की तस्वीर समझ में नहीं आ सकती।

अशर्फी निहायत महत्वाकांक्षी इंसान था। पैसा इकट्ठा करने में वह रातो-दिन परेशान रहता था। मगर दूकान इतनी छोटी रही कि उसके बूते कुछ भी हो पाना मुश्किल था। एकाध बार साहस कर उसने रिस्क लिया मगर उसे घाटा उठाना पड़ गया। तब से वह जल्दबाजी में कोई काम करना पसन्द नहीं करता।

इसी बीच अशर्फी को जंगी के बारे में सूचना प्राप्त हुई। वह उसका बचपन का दोस्त था। उन दिनों वह बम्बई का माना हुआ स्मगलर था। जंगी किसी काम से शहर आया हुआ था। केवल रात भर के लिए। और सुबह उसे वापस भी होना था। जंगी की यह यात्रा नितान्त आकस्मिक थी।

चांस की बात। अशर्फी ने उसे कार से जाते देख लिया था। उत्सुकता वश बह जंगी के 'माल गोदाम रोड' वाले बँगले पर पहुँच गया था। वैसे तो शहर में जंगी के कई मकान थे। पर अक्सर वह यहीं रुकता था।

अशर्फी के आने की खबर से जंगी ने एक बार घबड़ाहट का अनुभव किया। सोचा, रात में आने का क्या तुक। फिर, मेरे यहाँ आने की सूचना कैसे मिली। अशर्फी पुलिस का मुखबिर तो नहीं बन गया है। उसके दिमाग में कई सवाल एक साथ उभरते रहे। कुछ देर तक सोचते रहने के बाद उसने सारे गोपनीय कागज-पत्र बगल की आलमारी में बन्द कर दिया। सन्देहों से घिरा होने के बावजूद उसने अशर्फी को अन्दर बुला लिया। शायद यह सोच कर कि वह पुराना दोस्त है और धोखा नहीं दे सकता।

'अशर्फी ! इतने दिन बाद तुम्हारा आना कैसे हुआ ।' जंगी ने हँसते हुए पूछा । रास्ता तो नहीं भूल गये । क्योंकि तुम्हारे आने के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था । खैर, तुम बचपन के साथी हो । तुम्हें देख कर मैं बेहद खुश हूँ ।

'सोचा कई बार । मगर तुम्हारे आने की सूचना कभी नहीं मिल पाई ।' सामने पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए अशर्फी ने कहा । परिवार बड़ा हो गया है । पेट के इंतजाम में कोल्हू के बैल-सा परेशान रहता हूँ । तक-लीफ बढ़ने पर तुम्हें जरूर याद करता हूँ । क्योंकि मुझे लगता है, तुम ही इसकी दवा दे सकते हो ।

'आज कैसे पता चला ।' जंगी ने पूछा ।

'तुम्हें देख लिया था ।'

'कब !'

'दोपहर में ।'

'कहाँ !'

'पटेल मार्ग के चौराहे पर ।'

'मेरे साथ कोई और था ।'

'नहीं ।'

'फिर !'

'तुम पीछे की सीट पर अकेले थे ।'

'गाड़ी का रंग कैसा था ।'

'सफेद ।'

इन प्रश्नों को पूछने के बाद जंगी संतुष्ट हो गया । उसने समझ लिया कि अशर्फी की नीयत किसी भी स्तर पर खोट नहीं है । फिर कहा—'मतलब यह कि तुम तकलीफ में हो । इसका साफ कारण यही है कि तुम अभी तक दुनिया को नहीं समझ पाये हो । जिस क्षण तुम्हारा दिमाग खुल जायगा, पैसा तुम्हारे इर्द-गिर्द पानी की तरह बहता नजर आयेगा ।'

'हाँ, तुम ठीक कहते हो ।' दूर तक बिछी गोट को देख कर अशर्फी ने कहा । किसी तरह मुझे दरिद्रता से मुक्ति दिलाओ । अब मेरे भीतर संघर्ष से जूझने की ताकत नहीं है । कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा, तो मौत मेरे सामने खुद आ जायगी ।

इतने दिन तुम कहाँ रहे । मैं क्या करूँ । सारा दोष तुम्हारा है । पहले मिले होते, तो अभी तक तुम्हें बहुत आगे बढ़ा दिये होता । शायद उस स्थिति की तुम कल्पना भी नहीं कर सकते । मेरे पास आदमी को ऊपर उठाने के तमाम रास्ते हैं ।

दुर्भाग्य का आना एक तरफ से नहीं होता । वह हर ठिकाने पर घेरा डालने की कोशिश करती है । तभी आदमी लाचार होकर उसके सामने नाक रगड़ता है । मैं उसी का जीता-जागता नमूना हूँ । इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है । भाग्य का फेर आदमी से हर तरह का गलत काम करा लेता है ।

'मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ । मेरा खयाल बिल्कुल भिन्न है । आदमी मेहनत से भाग्य को भी बदल सकता है । जिसमें समय को समझने की ताकत है, वह अगम बीहड़ों को पार करता बहुत आगे निकल जाता है । तुम कमजोर थे, काहिल थे । इसलिए मजबूरी हालत में बैठे भाग्य और भगवान दोनों को कोसते रहे ।

'बहस का समय नहीं है जंगी !' व्याकुलता जाहिर करते हुए अशर्फी ने कहा । मैं आया हूँ मदद पाने के लिए । तुमसे सहारा मिल गया, तो मैं काम का आदमी बन जाऊँगा । तुमने तमाम लोगों को जीने-खाने का मौका दिया है । मुझे भी दो । क्योंकि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ ।

जंगी देर तक कमरे की छत देखता रहा । फिर बाल खुजलाते हुए कहने लगा—'मेरा रास्ता बहुत कठिन है । हर तरफ खतरनाक काँटे बिछे हैं । समझ-बूझ लो । दम हो, तो आ जाओ मैदान में । तुम्हें साथ रखने में मुझे खुशी होगी ।....शर्त एक है । फिर जीवन में मेरा साथ कभी न छोड़ना ।'

'कौन काम है !' अशर्फी ने पूछा।

'तुम नहीं जानते।'

'नहीं।'

'बिश्वास नहीं होता।'

'क्यों।'

'पूरा देश मेरा काम जानता है।'

'पर मुझे क्या पता !'

'मैं स्मगलिंग का धंधा करता हूँ।'

'अब समझा।'

'इसमें जोखिम है।'

'हाँ।'

'मगर मौज भी है।'

'जी।'

'हिम्मत है।'

'जो चाहोगे, वही करूँगा।

'तैयार हो जाओ।'

'कब से।'

'कल-परसों। जब चाहो।'

'कल सुबह आऊँ।'

'हाँ। इस वक्त जाओ। काफी देर हो चुकी है।' जंगी ने कहा। तुम से बात करने के बाद कल ही मैं फाइनल कर दूँगा कि तुम्हें क्या करना है। वैसे चिंता न करना। मैं तुम्हारे साथ हूँ। जहाँ गड़बड़ी होगी, मैं सम्हाल दूँगा। मेरे इशारे पर चलते रहे, तो मैं तुम्हारी तकदीर बदल दूँगा।....इस वार्ता के उपरान्त अशर्फी अपने घर की ओर चला गया था और बहुत खुश था।

घर पहुँचने के बाद अशर्फी की मानसिकता में भारी बदलाव आ

गया। वह धंधे को लेकर विचित्र किस्म के भय और संशय में डूबने-उतराने लगा। उसके चेहरे की उदासी को देख कर पत्नी ने बहुत पूछा, कारण जानने की कोशिश की। पर उसने कुछ भी नहीं बताया। रोटी खाने के साथ वह बाहर निकल आया और चबूतरे पर पड़ी चारपाई पर लेट गया।

अशर्फी रात भर सो न सका। वह उलझन में पड़ा लगातार जागता रहा।....'स्मगलिंग का काम खतरे से खाली नहीं है। कहीं फंस गये, तो जिन्दगी से भी हाथ धोना पड़ सकता है। बेहतर होगा कि सुबह जंगी से कह दूँ, यह काम मेरे बूते का नहीं है। मैं जिस हालत में हूँ, उसी में वक्त गुजार लूँगा।'

दिमागी तनाव के बीच रात ढलने के करीब आ गई। सड़क पर छिट-पुट रिक्शों का चलना शुरू हो गया था। कुत्ते भौंकने से रात सनक जाती और अशर्फी बेचैनी दूर करने के लिए जोर से खखारने लगता था।

अभी पूरे पैमाने पर सबेरा नहीं हुआ था। अशर्फी ने अचानक अदृश्य झटके का अनुभव किया। वह उठ कर बैठ गया। चारो तरफ देखा, मगर वहाँ कोई न था। उधेड़बुन के बीच जाने क्यों उसके विचार अचानक बदल गये।....'जंगी के रास्ते पर चलने में ही भलाई है। वह मेरा साथी है। ऐसा आदमी गलत राय क्यों देगा ? आज ही मैं उससे कह दूँगा, तुम जो चाहते हो वही मैं करूंगा।'

अब सूरज निकलने के करीब था। फिर भी वह आलस्य में डूबा लेटा रहा। मजदूर रोज की तरह आना-जाना शुरू कर दिये थे। छदम्मी ने रिक्शा रोक कर कहा—'अशर्फी ! उठ रे भइया। अभी तक सोया है तू। एक कट्टा बीड़ी और माचिस दे दे मुझे। सात बज चुके हैं। ऐसे काम करोगे, तो भट्ठा बैठ जायगा।'

'भाग बे।' अशर्फी ने कहा।

'पगला गये क्या ?'

'सोने दे।'

'सवेरा हो चुका है।'

'नींद लगी है।'

'रात क्या करते रहे ?'

'यह मत पूछ।'

'क्यों ?'

'फिर कभी बताऊँगा।'

चद्दर से मुँह ढक कर अशर्फी लेटा रहा। यद्यपि उसकी नींद पूर्णतः टूट चुकी थी। छदम्मी निराश होकर रिक्शे की घंटी टिनटिनाता आगे बढ़ गया था। कुछ दूर जाकर उसने मुड़ कर पीछे की ओर देखा— 'अशर्फी चारपाई पर लेटा बीड़ी लेश रहा है और दातादीन सिर झुकाये सामने खड़ा है।'

'मैंने क्यों बुलाया है, तुम्हें न मालूम होगा।' आँख मीचते हुए अशर्फी ने कहा। इस दूकान को छोड़कर मैं दूसरा काम शुरू करने वाला हूँ। उस धंधे में तुम्हें साथ रखना जरूरी है। हिम्मत हो, तो मंजूरी दे दो।

'क्या करना है।' दातादीन ने पूछा।

'अभी मत पूछो।'

'तब।'

'पहले हाँ कर दो।'

'एक बात समझ लो।'

'वह क्या।'

'जहाँ तुम चाहोगे मैं जरूर रहूँगा।'

'क्या समझूँ।'

'मुझे मंजूर है।'

'मैं तुमसे यही सुनना चाहता था।' यह कहते हुए अशर्फी उठ कर बेठ गया। और मुस्कराने लगा था। बस, इस वक्त जाओ। मुँह-हाथ धोकर तुम तैयार हो लो। मैं भी नहा धो लूँ। घंटे भर बाद फिर तुमसे

बात होगी। आगे की योजना जान कर तुम और प्रसन्न होगे। मुझे एक लोटा पानी दे दो। प्यास लगी है।

अशर्फी ने स्मगलिंग का काम शुरू करने की तैयारी पूरी कर ली। अब हर तरफ से वह निश्चिन्त था। धंधे को सही रूप में चलाने के लिए उसने दातादीन को अपना सहयोगी बना लिया। दातादीन तीन साल से अशर्फी के घर पर है। केवल दस रुपया और भोजन पर। कुल ले दे कर यही उसकी तनख़ाह है। इतने कम पैसे के बावजूद उसकी मेहनत और ईमानदारी में कोई कमी नहीं थी।

दातादीन मामूली पढ़ा-लिखा और गंवई किस्म का अति साधारण आदमी था। उसे देश दनिया का कोई ज्ञान न था। स्मगलिंग के पेशे में उसके जैसे आदमी की जरूरत नहीं थी। क्योंकि इस काम में तेज-तर्रार होना आदमी के लिए पहली शर्त है। इसलिए अशर्फी ने जरूरी समझा कि बिजिनेस शुरू करने से पहले उसे ट्रेनिंग दे दी जाय। कुछ दिन बाद वह ख़ुद ठीक हो जायगा।

दातादीन को देखते ही अशर्फी चारपाई छोड़कर खड़ा हो गया। और उसे साथ लेकर एकान्त जगह में चला गया। चारों तरफ गौर से देखकर उसने कहा—'अब सुन लो। और दूर तक समझ भी लो। मैं एक नया काम शुरू करने जा रहा हूँ। केवल तुम्हारे बूते पर। इस माने में तुम अपनी राय खुल कर मुझे दो।

'बताओ, तब कुछ कहूँ।' दातादीन ने कहा।

'एक शर्त है।'

'वह क्या!'

'यह बात किसी से न कहोगे।'

'नहीं, क्यों कहूँगा!'

'मुझे विश्वास है।'

'फिर क्यों कहा।'

'इस धंधे में यही होता है।'

'ठीक है। आगे कहो।'

कल मैं जंगी के वहाँ गया था। वह मेरा पुराना दोस्त है। तुम उसे नहीं जानते। लेकिन उसकी चर्चा तुमसे कई बार कर चुका है। उसने स्मगलिंग का धंधा शुरू करने को कहा है। काम जोखिम का है। मगर पैसा बहुत मिलेगा। सात पीढ़ी की दरिद्रता समाप्त हो जायगी।

'यह तो चोरी का काम हुआ।' दातादीन ने कहा।

'नहीं।'

'क्यों।'

'मेहनत है। दिमाग भी लगेगा।'

'तो।'

'पसीने की कमाई चोरी नहीं है।'

'खूब कहा।'

'बहस न कर।'

'चलो। मान गया।'

'अब बोलो।'

'तुम जो चाहोगे, करूँगा।'

'पक्का!'

'अशर्फी! मैं जीवन भर तुम्हारे साथ रहूँगा। गलत, सही चाहे जो काम लो; करूँगा।' आत्मविश्वास प्रदर्शित करते हुए दातादीन ने कहा। यह कहने की बात नहीं बल्कि सच्चाई है। रात-दिन जब चाहो, जहाँ चाहो; मुझे खड़ा रख सकते हो। कोई शिकायत नहीं मिलेगी।....मुझे क्या करना होगा, अभी से बता दो। मैं दिमागी तैयारी करता रहूँ।

असलियत तो यह है कि माल लाने ले जाने का हर काम तुम्हें ही देखना है। क्योंकि जब काम शुरू होगा, तो मैं हर क्षण व्यवस्था में ही उलझा रहूँगा।....तुम्हें ट्रक के साथ बार्डर एरिया में जाकर सामान लाना होगा। यह जोखिम का काम है और इसमें सावधानी भी रखनी

पड़ेगी। प्रोग्राम और टाइमिंग में रत्ती भर का अन्तर आया कि जेल जाने, यहाँ तक कि मौत की भी नौबत आ सकती है। ऐसी ड्यूटी में तुम जैसा विश्वासी आदमी ही टिक सकता है।

'बार्डर पर कोई खास जगह।' बीच में ही दातादीन ने कहा।

'हाँ !'

'कौन !'

'नेपाल ।'

'साथ में कौन रहेगा।'

'केवल ट्रक का ड्राइवर।'

'और !'

'तीसरा आदमी रहने का सवाल ही नहीं उठता।'

'यह क्यों।'

'रहस्य खुल जायगा।'

'अच्छा !'

'हाँ, धीरे-धीरे सब जान जाओगे।'

'हर तरह से मैं तैयार हूँ।' दातादीन ने कहा। मुझे कोई डर नहीं है। काम लेने में किसी प्रकार से विलम्ब मत करो। मेरी तरफ से निश्चिन्त रहो। जिस दिन जाना हो, मुझे बता देना। भगवान ने चाहा तो, बड़ी सफलता मिलेगी। मकान, परिवार, रंग-रूप सब कुछ बदल जायगा।

दातादीन ! तुम नहाओ-खाओ। मैं तब तक जंगी से मिल लूँ। उसने ठीक ग्यारह बजे मुझे बुलाया है। लौट आऊँ, तब कोई ठोस बात करूँ। ....रिक्शे पर बैठते समय उसने फिर कहा—'कहीं जाना मत। कोई पूछे तो, कह देना; घंटे भर बाद मिलेंगे।'

दातादीन के साथ उमराव ड्राइवर की ड्यूटी लगायी गयी थी। उमराव जंगी का खास आदमी था। उसे इस पेशे में रहते कई साल हो

चुका है। और सबसे बड़ी बात यह है कि आज तक पुलिस उसकी छाया भी नहीं छू सकी है। वह बादल के टुकड़े-सा क्षण भर में अनेक रूप बनाने की क्षमता रखता है।

उमराव के साथ लगातार रहने के कारण दातादीन काफी बदल चुका है। अब वह पहले जैसा ढील-ढाल नहीं दिखता। वह तेज-तर्रार और मॉडर्न किस्म का आदमी बन चुका है। बात-व्यवहार में वह इतना होशियार हो चला है कि उसे कोई धोखा नहीं दे सकता।

उस रोज दातादीन ने जरूरत से ज्यादा जोखिम ले लिया था। उसने आधी ट्रक में गांजा लाद लिया। और ऊपर से विदेशी कपड़ों का बंडल। उमराव इतना अधिक खतरा मोल लेने के पक्ष में नहीं था। उसने बहुत समझाया लेकिन दातादीन ने कहा—'मुझे एक्सपेरीमेन्ट के बेसिस पर करने दो। जो होगा, मैं देख लूँगा।'

ट्रक रात के दस बजे छूटनी थी। समय ज्यादा होने से दोनों एक होटल में भोजन करने चले गये। खाना खतम होने के बावजूद उन्हें पेट भरने भर को थोड़ा-बहुत मिल गया था। लौटते समय उन्हें रास्ते में रमजान मिल गया था। वह उमराव के परिचितों में था। रमजान भी अपनी ट्रक के साथ था। उसे सीधे उड़ीसा की ओर जाना था। वह हँस कर बोला—'वाह प्यारे! अच्छे मुहूर्त में आये हो। रास्ता बिल्कुल साफ है। चेहरा बचा कर निकल जाओ। आज बार्डर इक्साइज कमिश्नर की लड़की की शादी है। सारे अफसर और चेकर्स वहीं जुटे हैं।'

'कैसे मालूम हुआ।' दातादीन ने कहा।

'यार! ये बातें छिपती नहीं।'

'फिर भी।'

'इक्साइज के एक बाबू ने बताया है।'

'तब तो सही है।'

'झूठ क्यों कहूँगा।'

उमराव कुछ नहीं बोला। वह सिर झुकाये आगे निकल आया था।

थोड़ी दूर चलने के बाद उसने दातादीन से सिगरेट लिया और लेश कर पीने लगा था। देर तक धुआँ छोड़ने के बाद वह मायूस होकर धीमी आवाज में कहने लगा—'देखो ऽ ऽ....रास्ते में पता नहीं क्या होता है। कहना नहीं मानते। रिस्की काम से मालिक भी खुश नहीं होगा। इक्साइज का आदमी कौवे की आँख रखता है। वे दूर से ही अंदाज लेते हैं कि गाड़ी पर किस टाइप का सामान लदा है। भाँग या गाँजा पाने पर वे छोड़ने का नाम नहीं लेते। चाहे जितना पैसा दिया जाय। इन दिक्कतों को समझकर तुम्हें रिस्क लेना था।

'आज मेरे पर छोड़ दो।' दातादीन ने सिर झटक कर कहा।

'रोक कहाँ रहा हूँ।'

'क्यों!'

'अब तो ट्रक लद चुकी है।'

'डरते क्यों हो।'

'मुझे पकड़ा जाने का भय है।'

'कुछ न होगा।'

'तब-तो अच्छा है।'

'घबड़ाओ नहीं। चलने की बात सोचो।'

'अशर्फी इनाम न देगा प्यारे।' उमराव ने आँख चढ़ाकर कहा। वह गुस्सैल है। दिमाग गर्माने पर खुली सड़क पर वह रौंद भी सकता है। उसका स्वभाव तुम्हें नहीं मालूम। मैं उसे हर तरह से जानता-पहचानता हूँ। अशर्फी किसी का नहीं है। वह केवल पैसे से प्यार करता है।

'अब तो गाड़ी लोड हो चुकी है।' दातादीन ने लम्बी सांस लेकर कहा, 'चढ़ा माल उतरवाना भी ठीक नहीं लगता। मिलखीराम नाराज होगा। वह हँकड़ कर कहेगा—'स्माले अजीब टाइप के स्मगलर हैं। हिम्मत नहीं थी, तो काहे चले आये इस धंधे में। गाली सुनने से बेहतर है, इस बार पूरे सामान के साथ चला जाय। भविष्य में तुमसे पूछे बगैर एक कदम आगे न बढ़ूँगा।'

'मान गये । चलो अब ।' उमराव ने कहा ।

'नाराज तो नहीं हो ।'

'नहीं ।'

'सही कहो ।'

'हाँ रे ।'

'एक सिगरेट और पीलो ।'

'कहाँ है ।'

'यह लो । एक पैकेट रख लिया है ।'

'जेब में माल-पानी रखे हो ।' उमराव ने पूछा । कुछ जगहें ऐसी हैं, पैसा चढ़ाना जरूरी होगा । न हो, तो किसी से ले लिया जाय । यहाँ इंतजाम हो सकता है । मिल्खीराम हम सब की मदद कर देता है । लेन-देन चलता रहता है ।

'मेरे पास सौ-सौ के पंद्रह नोट हैं ।' जेब की तरफ इशारा करते हुए दातादीन ने कहा । चलते वक्त कुछ ज्यादा पैसे रख लिये था । बैसे मैं अक्सर यही करता हूँ । चलो, अब देर न करो । पुलिस का मुँह बन्द करने भर को मेरे पास बहुत है ।

अंधेरी रात थी । सड़क साफ मिलने के कारण उमराव ने गाड़ी की रफ्तार तेज कर दी थी । सन्-सन् की आवाज करती ट्रक तेजी में आगे बढ़ रही थी । बगल की सीट पर दातादीन लेट गया था । क्षायद उसे झपकी आने लगी थी । उसकी ओर तिरछी नजर से देखते हुए उमराव ने कहा था—'अरे ! यह क्या कर रहे हो । उठकर तुरन्त बैठ जाओ । ड्राइवर के पास सोना खतरे को जबरन बुलाना है । तुम्हें देखकर मुझे भी नीद आ सकती है । कितनी बार समझाया, लेकिन तुम यह आदत नहीं छोड़ते । आगे बाजार पड़ेगी । वहीं कुछ देर रुककर सो लेंगे ।'

दातादीन हड़बड़ाकर बैठ गया । बोला—'चल भाई । नहीं सोऊँगा । मिल्खीराम बहुत हरामी है । दो दिन, दो रात दिमाग चाट गया ।

इतना मोल-भाव आज तक किसी से नहीं करना पड़ा। अब उसका सहारा लेकर कोई सामान न उठाऊँगा। वैसे आदमी बात का पक्का है। मगर जरूरत से ज्यादा बहस करता है।'

'सिगरेट है।' उमराव ने कहा।

'नहीं।'

'काम कैसे चले।'

'क्यों।'

'आँख किरकिरा रही है।'

'बीड़ी है।'

'लाओ। मजा आ गया।'

बीड़ी सुलगाकर दातादीन ने उमराव के हाथ में पकड़ा दिया। अब दोनों बात करते हुए बीड़ी का मजा ले रहे थे। थोड़ी देर बाद दातादीन हँसकर बोला—'स्पीड तेज करो। समय ज्यादा हो चुका है।'....यह बात सुनकर उमराव ने गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी थी। दरअसल उसने भी महसूस कर लिया था कि और दिनों की तुलना में रफ्तार सचमुच कम है।

'गंगा-ब्रिज आ गया। यहाँ से छुट्टी दिलाना तुम्हारा काम है।' शहर की चमकती रोशनी को देखकर उमराव ने कहा। पुल के पहले सड़क की दोनों पटरियों पर दूर तक ट्रकें खड़ी थीं। उमराव ने बाईं ओर गाड़ी रोक दी और इंजन बंद कर नीचे उतर आया था। वह ठंडी हवा में टहलने के साथ चिंतित भी था। क्योंकि चेकिंग में पकड़ लिये जाने का भय था।

जिन ट्रकों की चेकिंग हो जाती और पास दे दिया जाता, उनके ड्राइवर तेज हार्न बजाते आगे कीं तरफ बढ़े जा रहे थे। सब बातें ठीक होने के बावजूद पुलिस मैंन ट्रकों से पैसा वसूल रहे थे। बगैर पैसा पाये वे इंच भर आगे खिसकने की इजाजत नहीं देते थे।

तकरीबन आध घण्टे बाद उमराव की गाड़ी का नम्बर आया।

दातादीन सीट पर बैठा झपकियाँ ले रहा था। उसकी बाँह को झकझोर कर एक सिपाही ने कहा—'क्यों बे! बड़ी मस्ती में है। क्या मामला है। कागज-पत्तर दिखाओ। ऊपर क्या लदा है।'

'हुजूर! कपड़ा लदा है।' दातादीन ने घबड़ा कर कहा।

'नौर कुछ।'

'नहीं।'

'नीचे कुछ है जरूर।'

'देख लीजिए।'

'गाँजे की महक आ रही है।'

दातादीन का होश गुम हो गया। ठंड के बावजूद उसकी देह से पसीना चूने लगा। वह कनफ्यूज़ होकर गिर भी सकता था। मगर उसने क्षण भर में खुद को सम्हाल लिया। आगा-पीछा सोचे बिना दातादीन ने सौ की एक नोट सिपाही की जेब में डाल दिया।

'यह क्या!' सिपाही ने कहा।

'बच्चों के लिए।'

'कितना है!'

'सौ।'

'इतने से क्या होगा।'

'फिर।'

'दो नोट और दो।'

दातादीन ने जेब से दो नोट निकालकर तुरन्त दे दिया और कहा—'बाबू! यह आखिरी रकम है। अब पास में कुछ नहीं है। इजाजत हो, तो गाड़ी आगे बढ़ा दूँ।'

'ले, पास ले ले। मगर ऐसी गलती कभी न करना।' सिपाही ने पीछे की ओर देखते हुए कहा। कोई सख्त आदमी मिल गया, तो जिन्दगी बर्बाद कर देगा। अच्छा है कि इस वक्त कोई अफसर ड्यूटी पर नहीं है। तुरन्त भागो। देरी करने में खतरा हो सकता है।'

उमराव तत्काल गाड़ी पर बैठ गया। और इंजन स्टार्ट कर तेजी में चल पड़ा। पुल पार करने के बाद वह बोला—'दातादीन ! अब कोई नहीं पकड़ सकता। हम खतरे के सभी अड्डे लगभग पार कर चुके हैं। बच गये, भाग्य समझो। पुलिस की बात सुनकर मैं काँपने लगा था।'

चल यार ! रोजगार में यह सब झेलना पड़ता है। हाँ, इतना जरूर है कि अब रिस्क कभी न लूँगा। मेरा क्या फायदा। जो महिनवारी मिल रही है, उसमें बढ़ोत्तरी नहीं होने वाली है। गरीब और परिवार-दार आदमी हूँ। कुछ करने के पहले बाल-बच्चों के बारे में सोच लेना जरूरी है।

'काफी देर हो गयी प्यारे।' उमरव ने मुस्करा कर कहा। असर्फी सोच रहा होगा कि हम लोग कहीं फँस-तो नहीं गये। उसे धरे जाने की चिंता ज्यादा रहती है। खैर, चलो। मैं उसको समझा लूँगा।

निश्चित समय से ठीक चार घंटे बाद ट्रक अपनी जगह पर पहुँच गयी। ट्रक की आवाज सुनते ही अशर्फी बंगले के बाहर निकल आया। वह बेहद बेचैन और चिंतित था। दातादीन को बुलाकर उसने पूछा—'कहाँ रह गये। पुलिस की पकड़ में तो नहीं आये। किस तरह का सामान लदा है।'

'गाँजा है।'

'और !'

'कुछ जापानी कपड़े भी।

'किसने कहा था।'

'अपने मन से लिया।'

'मुझसे परमिशन लिये थे।

'नहीं।'

'इजाजत लिए बगैर तुमने यह काम कैसे किया।' घोर नाराजगी व्यक्त करते हुए अशर्फी ने कहा। पता है तुम्हें। गांजा उठाने के पहले

मजबूत योजना तैयार करनी पड़ती है। पकड़े जाने पर अधिकारी और पुलिस जेल में डालकर जिंदगी बर्बाद कर देते। मेरे बंगले का कहीं पता न चलता। इसे खोदकर वे ढहा देते। इतना रिस्क लेने से क्या फायदा। मेरी समझ में नहीं आता, किस दिमाग से तुमने यह काम किया है।

'नाराज न हो।' निराश होकर दातादीन ने कहा।

'फिर क्या करूँ।'

'बचकर आ गया हूँ।'

'तो!'

'खुश होना चाहिए।'

'यार फँस जाते, तो।'

'देखा जाता।'

'स्मगलर इसी बात की चिंता करता है।'

'पैसा देखो। अफसोस मत करो।'

'पैसा इतना महत्वपूर्ण नहीं है।' अशर्फी ने सिर झुकाकर कहा। मैं तो यह सोचकर भयभीत हूँ कि तुम पकड़ लिए गये होते, तो क्या होता। जिस कल्पना को लेकर मैं इस धंधे में आया था, वह सब माटी में मिल जाता। एक प्रकार से तुमने मुझे फँसा देने का काम किया है। मुझे तुम्हारे बारे में फिर से सोचना पड़ेगा।

'आदमी से-ही गलती होती है। इस बार क्षमा कर दो।' दातादीन ने कहा। मैंने सोचा था, तुम मुनाफे का इतना बड़ा काम देखकर खुश होगे। पर मेरी दुर्भाग्य है कि मैं कुछ और देख-सुन रहा हूँ। इकलौते लड़के की कसम खाकर कहता हूँ कि तुमसे पूछे बिना अब कोई काम न करूँगा।

दातादीन! अब पश्चाताप करने से कोई फायदा नहीं है। याद है, मैंने तुमसे पहले-ही कह दिया था कि इस पेशे में आर्डर के खिलाफ कभी कोई काम न करना। भले ही गहरा नुकसान हो जाय। पैसा तो एक दिन में इतना आ सकता है कि साल भर बैठकी पड़ जाय फिर-भी

तकलीफ न होगी ।....एजेंट परेशान होंगे । सामान उतार कर उन्हें दे दो । यह सामान घंटे भर के भीतर यहाँ से चला जाना है । गोडाऊन में रखने से गम्भीर खतरा हो सकता है । अशर्फी यह कहने के साथ कार में बैठकर जंगी के यहाँ चला गया था ।

सामान बांटने के काम से फुर्सत पाकर दातादीन बरामदे में आकर बैठ गया था । बिल्कुल उदास । जैसे किसी ने सिर पर दस जूता जमा दिया हो । क्योंकि अशर्फी का नाराज होना उसके लिए बहुत बड़ी बात थी । दातादीन ने कभी सोचा भी न था कि अशर्फी उस पर नाराज हो सकता है । आज वह खुद के विश्वास को अर्थहीन समझकर पश्चाताप कर रहा है ।

अभी तक उमराव कुछ दूर एक छायादार पेड़ के नीचे बैठा था । वह समझ गया कि कोई खास बात हुई है, तभी दातादीन मन मारे बैठा है । वह टहलता हुआ पास में आ गया था । बोला—'मालिक को समझ लिया तुमने । सुअर की औलाद है वह । मेरी जिन्दगी इसी धंधे में बीत रही है । मैंने बहुतों को आते-जाते और बर्बाद होते देखा है । मुझे लगता है, तुम्हें भी उन्हीं परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा ।'

'उमराव भाई ! मुझे नौकरी की चिंता नहीं है ।' दातादीन ने कहा । मुझे दुख है, अशर्फी के बदले हुए व्यवहार को देखकर । उसने अकेले में जिस कदर भद्दी बातें सुनायी हैं, उसका मुझे अंदाज भी न था । खैर, अब सावधान रहने की जरूरत है । वह दुश्मनों जैसा व्यहार भी कर सकता है ।

'चलो, खाना खा लें ।' उमराव ने कहा । जो होगा, देख लिया जायगा । नींद आ रही है । रात में या सुबह ट्रक फिर चल देगी । दो-तीन दिन सोने की फुर्सत नहीं मिलेगी ।....इसके बाद दोनों सिर झुकाये होटल की ओर चल दिये थे ।

जंगी कुछ देर तक खामोश रहा । वह अशर्फी की बातें सुनने के

साथ बीच-बीच में स्वीकृति सूचक हुँकारी भर देता था। पूरी कहानी सुनने के बाद जंगी जरूरत से अधिक गम्भीर हो गया। आवेश व्यक्त करते हुए उसने कहा—'समझ लो। इस तरह तुम्हारा काम नहीं चल पायेगा। ये लोग भरी नाव लेकर बीच धारा में डूब जायँगे। इस जमाने में किसी पर ज्यादा विश्वास करने का मतलब है, खुद को जानबूझ कर धोखा देना।'

'मैं अपनी गलती मानता हूँ।'

'फिर!'

'इस मामले में क्या करूँ।'

'दोनों को रास्ते से अलग कर दो।'

'उमराव को भी!'

'हाँ।'

'क्यों!'

'साथ में रहता है।'

'उसका दोष क्या है।'

'कुछ नहीं। पर दंड मिलेगा।'

'इन्हें किस तरह अलग करूँ। समझ में नहीं आता।' अशर्फी ने कहा। कहीं काम न बना और उन्हें मालूम हो गया, तो वे जानी दुश्मन बन जायँगे। यही सब जानने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ।

'यह बताने-समझने की चीज नहीं है।' अप्रसन्नता जाहिर करते हुए जंगी ने कहा। स्मगलर को हवा का रुख देखकर काम कर लेना चाहिए। सुन लो मेरी बात। इन दोनों को आज या कल जान से खत्म करा दो। एक भी बच गया, तो आगे चलकर रहस्य खोल देगा। और तब दिमाग काम न करेगा। इन्हें किसी एकान्त जगह पर ले जाओ। वहीं ट्रक से कुचलवा कर समाप्त करा दो। लेकिन योजना पहले तैयार कर लो। जिससे धोखे की गुंजाइश न रहे।

'और लाश।' अशर्फी ने पूछा।

'नदी में फेंक देना।'

'जोखिम का काम है।'

'आदमी मैं दूँगा।'

'कहाँ से।'

'मैं ऐसे आदमी रखता हूँ।

'ओह!'

'हाँ, तुम्हें भी रखना पड़ेगा।'

'ठीक है।'

'एक बात और सुन लो।' जंगी ने संतोष की सांस लेते हुए कहा। तुम्हारे लिए ड्राइवर का इंतजाम कर देता हूँ। इसी वक्त। वह उमराव से कई गुना बेहतर ड्राइवर और वफादार आदमी है। दबाने-मारने का काम भी वही कर लेगा।....इस घटना के बाद जो भी आदमी रखना, उसे पहले से ठोक-बजाकर देख लेना। बिजिनेस को जल्दी समझ लो। मेरे ऊपर ज्यादा समय तक निर्भर रहना ठीक नहीं है।

'अब भूल नहीं होगी।' अशर्फी ने कहा। दातादीन मेरे साथ कई वर्ष काम कर चुका था। उस पर पूरा भरोसा था। मगर उल्लू का पट्ठा मनमानी कर गया। जैसा किया, उसका फल भोगे। मैं क्या करूँ। वैसे इतना अधिक विश्वास अब किसी पर हो भी नहीं सकता।

'उसका नाम मत लो। जंगी ने झुंझला कर कहा।

'क्यों।'

'वह जानी दुश्मन है।'

'मान गया।'

'आज तुम बर्बाद होने से बच गये।'

'हाँ।'

'ऐसे आदमी को भूल जाना ही ठीक है।'

'भूलने में कुछ बाकी नहीं है।'

'बहस करने में कुछ फायदा नहीं है।' जंगी ने उठते हुए कहा।

यहाँ से जल्दी निकल जाओ। मजबूत घेरा बंदी कर लो। जब सारा काम समाप्त हो जाय, तो मुझे तुरन्त सूचना दे देना। मैं प्रतीक्षा करता रहूँगा।

अशर्फी ने दोनों का सफाया करा दिया। कई दिन तक चुप रहने के बाद उसने खबर फैला दी कि वे दोनों किसी एक्सीडेंट में खत्म हो चुके हैं। घटना के प्रति सहानुभूति के मतलब से उसने दातादीन के इकलौते पुत्र बंटी को घर की नौकरी में रख लिया था।

मगर जब बंटी बड़ा हो गया, तो अशर्फी फिर तमाम सन्देहों से घिरने लगा। वह कोई बहाना लेकर बंटी को निकालने के पीछे पड़ गया। किसी ने पिता की मौत के बारे में उसे बता दिया, तो वह पुलिस के सामने सारी पोल-पट्टी खोल कर रख सकता है। उस वक्त एक गम्भीर समस्या पैदा हो सकती है। अतः समय रहते मर्ज का इलाज कर लेना जरूरी है। ....इन दिनों अशर्फी इसी समस्या को सुलझाने में जुटा है।

महीने की आखिरी तारीख थी। अशर्फी ने सोच लिया कि आज ही बंटी का अन्तिम हिसाब कर देना ठीक रहेगा। बंटी को बुलाकर उसने कहा—'देख बंटी, तुझे पाल-पोश कर बड़ा कर दिया। दूसरी जगह तलाश लो। अब यहाँ तुम्हारे रहने की हर गुंजाइश समाप्त हो चुकी है।'

'बाबू ! ऐसा न कहो।'

'नहीं। मैंने पक्का कर लिया है।'

'कोई गलती।'

'यह सवाल नहीं है।'

'फिर।'

'मेरी जिम्मेदारी खत्म हो चुकी है।'

'मुझे कौन जगह देगा।'

'तलाश कर लेना।'

'बाबू ! कुछ दिन और रह लेने दो।'

'बहस मत करो।' अशर्फी ने कहा। मैंने निश्चय कर लिया है। और यही होगा। तुम्हें हटाने की बात पहले भी कई बार सोच चुका हूँ। पर, जाने क्यों टाल गया। शायद तुम्हारे बाप के कारण कुछ दया आ गयी थी। किसी और जगह जाकर इंतजाम कर लो।

जिस घर को मैं अपना समझता रहा, उसे छोड़ने में मुझे तकलीफ होगी। लेकिन आप नहीं चाहते तो मैं जाने के लिए तैयार हूँ। नौकर का मालिक से बहस करना ठीक नहीं है। मेरे दिल में बहुत से विचार भरे पड़े हैं। जब आप मेरी बात सुनना नहीं चाहते, तो पूछना ही बेकार है।...यह कहने के बाद बंटी सिर झुका कर बैठ गया था।

'सवालों का जवाब देने का समय नहीं है।' अशर्फी ने कहा। यह ले पच्चीस रुपये। इस महीने की तुम्हारी तनखाह है। कल सुबह तक यह घर तुम्हें छोड़ देना है। इसमें किसी तरह की ढिलाई मत करना। जाओ, मुझे अब तुमसे कुछ नहीं कहना है।

अशर्फी एकाएक इतना सख्त कदम उठा लेगा, बंटी को यह उम्मीद नहीं थी। रात के वक्त उसने खाना नहीं खाया। वह खाली पेट सो गया। उसके सामने अब भविष्य की समस्या थी और चिंता भी। कल या उसके बाद वह कहाँ रहेगा, कौन सहारा देगा। इस तरह की तमाम बातों से बंटी का दिमाग काफी बोझिल हो चुका था।

सुबह कुछ अंधेरा रहते वह अपने आप उठ गया। एक झोले में सभी सामान रखकर वह घर से बाहर निकल पड़ा। चलते समय उसके मन में आया कि वह अशर्फी को अपने जाने की सूचना दे-दे। पर उसने ऐसा नहीं किया। दरअसल वह अब किसी का चेहरा देखने के मूड में न था। चाहे अशर्फी हो या उसकी पत्नी या बच्चे। इस सोच-विचार में पड़ा वह मुहल्ले से बाहर हो चुका था।

कुछ दूर जाने के बाद उसे रास्ते में पार्वती मिल गयी। वह देखते ही बोली—'कहाँ चल दिये इतने सबेरे। जाना ही था, तो बता कर

जाते । धोखा देना ठीक नहीं है ।....यह प्रोग्राम अचानक कैसे बन गया । कल सुबह तक कोई खास बात नहीं थी ।'

'रात में बुलाकर उसने जवाब दे दिया । क्या करूँ । जगह छोड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं है ।' घने बालों को खुजलाते हुए बंटी ने कहा । और तुम जानती हो पारो, मैं अकेला हूँ । मेरे आगे पीछे कोई रोने-गाने वाला नहीं है । जहाँ भी रहूँगा, पेट भरने का इंतजाम हो जायगा ।

'तुम्हारा घर तो है ।'

'कभी था ।'

'अब ।'

'नहीं ।'

'ऐसा क्यों ।'

'चाचा ने जमीन हड़प ली है ।'

'कैसे ।'

'बचपन में माँ-बाप के मरने पर यही होता है ।'

'अब क्या करोगे ।' पार्वती ने पूछा । यहाँ से निकलकर कहाँ जाना चाहते हो । बगैर कोई उद्देश्य बनाये इस तरह जाना ठीक नहीं है । जल्दी बताओ । यह स्वतंत्र होकर बात करने की जगह नहीं है ।

'कलकत्ते जाऊँगा ।

'वहाँ कोई है ।'

'नहीं ।'

'कैसे काम चलेगा ।'

'मजदूरी करेंगे ।'

'रहने का ठिकाना जरूरी है ।'

'कुछ समय तक फुटपाथ पर रह लूंगा ।'

'मैं भी साथ चलूंगी । तुम्हारी तरह मैं भी इस दुनिया में अकेली हूँ । मौसी के घर एक अनाथ लड़की की तरह पड़ी हूँ । सुबह-शाम दुत-कारते रहते हैं । आये दिन पिटाई भी हो जाती है । जिन्दगी में सब

तरफ अंधेरा छाया है। इससे बच निकलने की जरूरत है।....और तुमने वादा भी किया है। क्या अपने शब्दों का पालन नहीं करोगे।

पारो ! तुम क्या चाहती हो। साफ-साफ कहो। यहाँ से निकल जाने में ही गनीमत है। चाहता हूँ कि अशर्फी को यह न मालूम हो कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। तुम्हें नहीं मालूम। वह मुझसे डरने लगा है। ऐसी हालत में वह मेरे लिए खतरा भी पैदा कर सकता है।

कह तो दिया। मुझे भी साथ ले चलो। बाँह पकड़ कर वचन दो कि मेरा साथ कभी न छोड़ोगे।....बंटी ! दोनों के जीवन का अंधकार मिलकर अब प्रकाश बन जायगा।....बंटी ने हाथ पकड़ कर कहा—'ठीक है। चलो, जल्दी चलो। सूरज निकलने के करीब है।'

बंटी और पार्वती दोनों अनिश्चित मार्ग पर चल पड़े। पता नहीं कहाँ शाम हुई, कहाँ सबेरा। इतना जरूर है कि ये दोनों आगे चलकर अशर्फी के लिए काल बन गये।

सुबह का आकाश

शिवलाल की मजबूरी थी। हलवाही के अलावा उसके पास दूसरा विकल्प न था। उसने जमींदार को खुश करने की तमाम कोशिशें कीं। इसी नीयत से वह दिन-रात उनके दरवाजे पर हाजिरी देता था। मगर ठाकुर के सनकी दिमाग पर इन बातों का खास असर नहीं पड़ा। सुबह-शाम गाली बकना उनकी आदत बन चुकी थी। काम पसन्द न आने पर वह पिटाई भी शुरू कर देता था। शायद मजदूरों को दबैल बना कर रखना उसके स्वभाव का खास अंग बन गया था। गरीबों को परेशान करने के माने में वह पूरे इलाके में विख्यात था।

जाल में फंसे पंछी की तरह शिवलाल सभी हरकतें करने के लिए लाचार था। बाद में हालत यहाँ तक पहुँच गयी कि वह ठाकुर शेरसिंह को देखते ही भय से गिनगिनाकर कांपने लगता, जैसे कुत्ते को देखकर खरगोश।

शेरसिंह की हलवाही से शिवलाल किसी भी कीमत पर छुट्टी पाना चाहता था। इस सिलसिले में उसने लुक-छिप कर दूसरे गाँव के लोगों से बात भी की। पर शिवलाल का हाथ पकड़ने की हिम्मत किसी में न थी। क्योंकि वह शेरसिंह के यहाँ नौकर था। दुलारे कका ने तो यहाँ तक कह दिया—'बचवा साँप के मुँह में कौन हाथ डाले। चुपाई मार-के उनका हल जोतते रहो। बाद में जुगाड़ बैठा, तो बम्बई की तरफ खिसका दूँगा। शेरसिंह को पता चल गया या किसी ने चुगली कर दी, फिर तो जीना मुश्किल हो जायगा।'

सब तरफ चक्कर काटने के बाद शिवलाल को विचित्र अनुभव हुआ। उसने महसूस किया—'चारों तरफ अंधेरा है और वह सीमाहीन समुद्र के बीच अकेले में डूब रहा है। दूर तक कोई नहीं दिखता जो इस भयानकता से उबार कर उसे बंधनमुक्त स्थिति में लाकर खड़ा कर सके।'

वह गाँव-देश सब तरफ से निराश था। मानसिक दबाव के बावजूद उसने अंदरूनी तकलीफ को किसी के सामने व्यक्त नहीं किया। फायदा भी नहीं था। कमजोर की गुहार दुनिया में कौन सुनता है।

शेरसिंह हेकड़ स्वभाव का खतरनाक आदमी था। गाली देते वक्त उसके दिमाग में अच्छे-बुरे का कोई फर्क नहीं होता। भद्दी गालियाँ सुनकर घर और गाँव की औरतें शर्म से माथा ठोक लेती हैं। वे आपस में फुसफुसा कर कहती थीं—'गजब का जाहिल है। गाँव-घर की बहू-बेटियों का भी खयाल नहीं करता। जो मन में आया, बक गया। जैसे पागल हो। एक भले परिवार के आदमी को यह ध्यान में जरूर रखना चाहिए कि कौन सामने खड़ा है।'

इन बातों पर शेरसिंह ने कभी ध्यान नहीं दिया। वह हर माने में खुद को सही मानता था। ठकुराइन ने कभी समझाने का प्रयास किया, तो डांट कर उसने कह दिया—'जमींदारी इसी मार-पीट की बदौलत कायम है। जिस दिन यह रास्ता छोड़ दूँगा, कोई बुलाने पर भी काम करने नहीं

आयेगा । दुनिया को तुम क्या समझो । कागज पर जमींदारी बहुत पहले खत्म हो चुकी है । मुझे समझाने की कोशिश न किया करो ।'

ऐसा नहीं कि शिवलाल मेहनत करने से भागता है । वह काम-धाम करने में बेहद तेज है । रोज सुबह अंधेरा रहते वह उठता है और ठाकुर के यहाँ पहुँच कर बैलों को सानी-भूसा देता है । फिर दुवार साफ कर शीशे की तरह चमका देता है । क्या मजाल, एक तिनका कहीं दिख जाय ।

हाथ-मुँह धोकर वह दातून कूंचने की बात सोचता कि भीतर से ठकुराइन का आर्डर शुरू हो जाता है । एक के बाद एक, जैसे वह आदमी नहीं, मशीन हो ।....'शिवलाल ! अरे ! तू कुएँ की जगत पर बैठ गया । दौड़कर यहाँ आ । कोठे से चावल की बोरियाँ उतारनी हैं । झोपड़े से कंडी और लकड़ियाँ उठा ला । आँगन साफ कर दे, नहाने की देरी हो रही है । जो काम रोज करते हो, उसे भूला न करो ।'

ठकुराइन के आदेश पर इसी प्रकार के और काम करने लगता है । समझ में नहीं आता, घर में इतना काम कैसे बढ़ गया है । मान लो कहीं खिसक गया, तो कौन करेगा यह सब । मेरे जाने के बाद यहाँ ठलुआ-गीरी करने कोई न आयेगा । किसमें इतनी ताकत है, जो इस दरवाजे पर सिर तुड़ाने आयेगा ।

शिवलाल पूरे टैम खेत में काम करता है या नहीं, इसकी सही जानकारी लेने के लिए वहाँ शेरसिंह पहले से मौजूद रहा करते हैं । आने-जाने में देरी हुई कि वे सात पीढ़ी तक को गाली सुनाना शुरू कर देते हैं । इसीलिए शिवलाल दस मिनट पहले हाजिर हो जाता है ।

कुछ दिन पहले तक शिवलाल को दोपहर में खाने के लिए दो मोटी रोटियाँ मिला करती थीं । इन दिनों ठाकुर ने जान-बूझ कर वह व्यवस्था खत्म कर दी है । एक वक्त के भोजन के बूते शिवलाल को इतना काम करना पड़ रहा है । शेर सिंह के दिमाग पर उसकी मजबूरी या गरीबी का कोई असर नहीं है ।

एक रोज निहोरे चौधरी ने पूछ लिया—'बाबू ! धूप में क्यों खड़े हैं। आप गाँव के जमींदार हैं। चलकर दरवाजे पर बैठिए। हलवाहा है, सब कर लेगा। खेत-खलिहान में ज्यादा चक्कर लगाना आपको शोभा नहीं देता।

'दरवाजे पर बैठने का जमाना नहीं रहा।' शेरसिंह ने मूंछ पर हाथ फेरते हुए कहा। आज के आदमी में वफादारी जैसी कोई चीज नहीं है। प्रजातंत्र में कोई बड़मनई नहीं है। सब बराबर हैं। जिसे बोलने की तमीज नहीं, वह भी आगे बढ़ने की कोशिश में लगा है। चौधरी ! तुम मेरे हलवाहे को नहीं जानते। बेहद कमीना है। निगरानी न करते रहें, तो पूरी गृहस्थी साल भर में चौपट हो जाय।

'क्या यह सच है।'

'झूठ क्यों कहूँगा।'

'देखने में बहुत भला लगता है।'

'धोखेबाज है।'

'कैसे।'

'मन लगाकर काम नहीं करता।'

'आप कहें, पर विश्वास नहीं होता।'

'तुम चाहे जो कहो। मैं रोक नहीं सकता।' शेरसिंह ने मुस्कराते हुए कहा। पर ऐसे मजदूर से राम करे, कभी पाला न पड़े। अव्वल दर्जे का धूर्त है। क्या करूँ। जमाना खराब है। आदमी मिलते नहीं। दूसरा आदमी मिल जाय, तो इसे एक दिन में निकाल कर अलग कर दूँ। फिर कभी दरवाजे पर न फटकने दूँ। चाहे नाक रगड़ कर खून निकाल दे।

'इतनी खराबियाँ !'

'और क्या।'

'समझा कर काम लेना अच्छा रहेगा।'

'मानता ही नहीं।'

'जरूर मानेगा।'

'अब यही डंडा समझायेगा।'

'आपकी अप्रसन्नता देखकर मैं मान लेता हूँ। कोई कमी जरूर है। नहीं तो आप इतनी नाराजगी न प्रगट करते। मैं तो सोच रहा था कि शिवलाल जैसे मजदूर बड़े भाग्य से मिलते हैं।'....थोड़ी देर तक आकाश की ओर देखकर चौधरी ने कहा—'नहीं, अपना विचार बदल दीजिए। शिवलाल एक परिश्रमी आदमी है। उसकी वफादारी में किसी तरफ से खोट नहीं है।'

ठाकुर को यह बात पसन्द नहीं आयी। उन्हें लगा, जैसे चौधरी उन पर व्यंग्य कस रहे हो। फिर वह कंधे पर लाठी रखे घर की ओर चल पड़े थे। गुस्सा छिपाने के लिहाज से उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। वैसे चौधरी पर इनकी नाराजगी का कोई असर नहीं था। क्योंकि धन-जन में वह ठाकुर के मुकाबले में कम नहीं था।....अन्तर केवल जाति का था। और जाति का कोई महत्व नमीं होता।

शिवलाल ने सुबह तै कर लिया था, इमिलिया ताल में दुबही किये बगैर वह दम नहीं लेगा। कान पक आया माँ-बहन की गालियाँ सुनते। दरवाजे पर पहुँचा नहीं कि ठाकुर धकियाने का मसाला तैयार किये बैठा रहता है। हरामी, साले का साला, मरियल टट्टू-सा निकम्मा, उल्लू का पट्ठा; इसी तरह और न जाने कितने किस्म की गालियाँ बकता है वह। मानो मुझे और पूरे परिवार को खरीद लिया है उसने।....इमिलिया ताल जुतने पर शायद खुश हो जाय। इसीलिए धूप-छाँह की परवाह किये बिना शिवलाल हल चलाने में जुटा है।

कुआर का महीना। आसमान बिल्कुल साफ था। हवा में आग की तरह जलन थी। गाँव के दूसरे हलवाहे बारह बजे तक हल जोत कर अपने घरों को चल दिये थे। सिवान सूना था। शिवलाल अकेला रह गया था। जिद की बात। सोच लिया, तो कर के दिखा भी देगा। मालिक समझेगा कि कोई आदमी है जो उसके इशारे पर काम कर सकता है।

पसीने से लथफथ होने के बावजूद वह हल चलाये जा रहा था—'बॉव रे, दॉव रे, पैर उठा के चल भइया। धूप है कि आग। देह से लौर फूट रही है। इस दर्द को कौन समझेगा। तुम समझो और मैं।' बैल जैसे पूरी बात समझ लिये हों। वे साँस फुलाते झमाझम आगे बढ़ते जा रहे थे।

शिव लाल को प्यास लग गयी। लेकिन पानी कैसे पिये। खाली पेट पानी पीने से नुकसान हो सकता है। उसने हल रोक दिया। बगल वाले खेत से बाजड़े की दो-तीन बालें तोड़ीं। हाथ से मल कर दाने खाया। फिर बगल के ट्यूब-वेल से पानी पी लिया। डकार लेने के बाद उसने पूर्ण तृप्ति का अनुभव किया।

इमिलिया ताल का रकबा पक्का दो बीघा है। हल की मूठ में हाथ लगाते हुए शिव लाल ने एक बार पूरे ताल को देखा। फिर पसीना पोछते हुए मन-ही-मन सोचने लगा—'अभी आधे से ज्यादा पड़ा है। पता नहीं अँधेरा होते जोत पाऊँगा या नहीं। 'ललिया' और 'मकरे' को टिटकोरते हुए बोला—'चल राजा। अभी आधा दिन बाकी है।....पहले से चिंता में डूब कर दिमाग खराब करना बेकार है। राम मालिक है। वही किनारे लगायेगा।'

ललिया पद्रंह माटी चल चुका था। उमर ढलने से अब उसमें चलने की ज्यादा कूबत न थी। थकान के कारण ठुनक कर रुक गया। धीमी आवाज में दो बार डकरा भी। शिवलाल समझ गया, उसके मन की बात।....खली-भूसा खाने का वक्त है। फिर समूचे सिवान में दूसरा हल चलता नहीं दिख रहा है। बैल ऊब महसूस कर रहे हैं। खूँटे तक पहुँचने के लिए अफना रहे हैं। मगर मेरा दोष क्या है। ठाकुर की मर्जी। जो चाहे कराये। मैं कब चाहता हूँ कि मेरे साथ बे-जबान बैल भी परेशान हों। दोनों जमींदार के गुलाम हैं। और दोनों परेशान हैं। क्या किया जाय। जो भाग्य में लिखा है उसे भोग कर दुनिया से जाना है।

खैर, शिवलाल पीठ थपथपाता उसके सामने पहुँच गया। ललिया की आँखों में पानी भर आया था। वह शिवलाल की हथेली चाटने लगा था। बीच-बीच में सिर उठा कर ऊपर की तरफ ताक भी लेता। जैसे अपने और शिब लाल के बीच दोस्ती और प्यार कर रिश्ता कायम कर रहा हो।

दोनों कान और माथ सहलाते हुए शिव लाल ने कहा—'रजऊ, आज इज्जत बचा दो। फिर इतनी तकलीफ कभी न दूँगा। ठाकुर से कह दिया हैं। ताल न जुतने पर वह शैतान की तरह पेश आ सकता है। इस बात का जादू जैसा असर हुआ। ललिया ने मंजूरी के ब-तौर तेजी से गर्दन हिला दिया। गले में झूलती घंटियाँ एक साथ बज उठीं। पूरा सिवान गूँज उठा। मकरा क्यों चूके। पिछले पैर से मिट्टी उल्झार कर आसमान में उड़ा दिया। इस बहाने उसने अपनी ताकत और जवानी का साफ परिचय दे दिया।

खड़ी दुपहरिया में शिव लाल हल के पीछे चल रहा था। मन बहलाव की दृष्टि से वह गाने की दो-एक कड़ियाँ टेर लेता था—'लागी झुलनियाँ क धक्का बलम कलकत्ता निकरि गे।' 'कइसे चली पटना सहरिया जिनगी गुजारि गै गुलामी मा।'·····बीच-बीच में वह अनायास हँसता और चुप हो जाता। अकेला; न कोई सुनने वाला, न बोलने वाला।

गजब की बात। झुलनी का धक्का लगने से तमाम लोग परदेश चले गये। एक मैं हूँ कि लात-घूसा पाने के बाद भी घर में अड़ा पड़ा हूँ। मुझे भी कहीं निकलने का इंतजाम करना चाहिए। अब 'मुलुक' में गुजारा मुश्किल है।

छबिलिया ने माँ से कहा—'तीन बज गये। भइया नहीं आया। रोज तो काफी पहले आ जाता था। समझ में नहीं आता, कहाँ रह गया वह। ठाकुर ने किसी काम में फँसा दिया होगा। उसी में जुटा

होगा बिना खाये-पिये। जा, देख तो आ। डॉट कर समझा देना। रोटी-पानी बिना इतनी टैम तक खाली पेट पड़ा रहना ठीक नहीं है। देह है, तो सब-कुछ है। ठाकुर एक कटा दाना ज्यादा नहीं देता। फिर तकलीफ उठाकर दिन-रात मेहनत करने से क्या फायदा।

ठाकुर में इंसानियत नहीं है बिटिया। वह शैतान है। उसका दिल-दिमाग जाने किस चीज का बना है। मारने-डाटने के अलावा दुनिया में और कुछ सीखा ही नहीं। उसकी बनरघुड़की बस गरीबों के लिए है। पट्टीदारों से नहीं बोलता। उसे पता है, वे दस लात जमा कर छठी का दूध निकाल देंगे।

पूरी कहानी तुम सब को नहीं बताया। सोचा, क्या फायदा, दिल का दर्द खोलने से। वैसे भी, अपना दर्द बच्चों को बताना ठीक नहीं होता। जहर का घूँट पीकर चुप हूँ। बस यही समझो। तुम्हारे बप्पा मरते-खटते चले गये। उनके साथ पुरानी कहानी भी खत्म हो गयी। भगवान उसे ज़रूर दंड देंगे जिसने मेरा अनभल किया है। मैं औरत ठहरी, कर ही क्या सकती हूँ।

'माँ!'

'बोल।'

'तुम क्यों रो रही हो।'

'कलेजा भभक उठा। क्या करूँ।'

'ऐसी क्या बात थी।'

'बात बहुत बड़ी है।' महतारी ने कहा। तभी तो पूरी कहानी आँसुओं के माध्यम से निकल रही है। मेरे भीतर ऐसी आग धधक रही है जिसका असर जिन्दगी में कभी न समाप्त होगा।

'घुमा-फिरा कर बात न कर।'

'फिर।'

'सीधे-सीधे बता दे।'

'पुराना इतिहास न सुन, तभी अच्छा है।'

'जिस घटना को याद कर तुम सिसकियाँ भर सकती हो, उसे न सुनूँ, यह कैसे सम्भव है।' माँ के सिर पर हाथ रखते हुए छबिलिया ने कहा।

तू बचपन की जिद्दी है। सुन ले। मगर किसी से कहना मत। शिवलाल के बाबू की जान इसी ने सेत-मेत में ले ली है। रात-दिन डँटकर काम लेता और चलते वक्त मजदूरी के नाम पर ठेंगा दिखा देता था। हफ्ते-पन्द्रह दिन में रोने-घिघियाने पर दो-चार पसेरी अरहर या मकरा देकर कुत्ते-सा दुतकार कर भगा देता। घर पहुँच कर वह सारा गुस्सा मुझ पर उतारते थे। मैं एक चुप, लाख चुप। सुनने-सहने के अलावा कोई रास्ता न था।

यहाँ तक गनीमत थी। क्योंकि ठाकुर की मार-मीट सहने के वह आदी हो चुके थे। जहाँ तक मुझे याद है, भादौं का महीना था। बाबू को बुखार हो आया। बेहद तेज। देह से आग जैसी गर्मी फूट रही थी। दवा के पैसे थे नहीं। पैसा देता कौन। किसी को फिरते की उम्मीद नहीं थी।.... केवल नीम का काढ़ा पिला रही थी। कुछ फायदा जरूर था।

हफ्ते भर बाद ठाकुर का बुलावा आ गया। जब बाबू नहीं गये तो उन्हें जबरन पकड़वा मँगाया और भला-बुरा सुनाकर हल नधवा दिया। कमजोरी इतनी कि उनके लिए चलना दूभर था। फिर हल कितनी देर तक चलाते। पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे थे, वह।

पीछे से आकर ठाकुर ने चढ़ा लात जमा दिया, उन पर। मुँह से खून गिरा और वह बेहोश होकर गिर पड़े। बोलने की ताकत उनमें नहीं थी। आँखें मुँदी की मुँदी। घर पहुँचने के दो घंटे बाद वह चल बसे। गाँव में आज तक उनकी मौत का कारण कोई नहीं जान पाया। क्योंकि ठाकुर ने पूरी घटना को गलत ढंग से मोड़ दिया था। गाँव-जवाँर ने मान लिया था कि मृत्यु शराब पीने से हुई।

'इतना आतंक' लम्बी साँस लेकर छबिलिया बोल पड़ी।

'हाँ।'

'किसी ने आवाज नहीं उठायी।'

'बड़ों के सामने कौन बोलता है।'

'ठाकुर के घर काम करना बन्द कर दिये होते।' छबिलिया कहने लगी। दूसरा घर पकड़ लिये होते। उसे पता लग जाता, आदमी की कीमत। मजदूर ईंट-पत्थर नहीं है। जो जब चाहे, तोड़-फोड़ कर बेकार कर दे।'

'बड़ी जोत वालों से कौन उलझ सकता है।'

'आदमी। और कौन!'

दुनिया के बारे में तुम कुछ नहीं जानती। इसलिए बक-बक मत कर। जुल्म के रास्ते में चिराग नहीं जलता। वहाँ हमेशा अँधेरा छाया रहता है। और उस दायरे में गरीब को बलि का बकरा बनाकर खिलवाड़ किया जाता है। तुम्हारे बाबू जैसे लाखों इन्सान इसी ढर्रे पर चलकर बुझ चुके हैं।

ओह! जमींदार क्या करता। गाँव से भगा देता। बस, इसके आगे वह क्या कर लेता। इस तरह की कारुणिक और रहस्यमय मृत्यु से वे निश्चय ही बच गये होते।

बेटी। भगा देना मामूली बात है। वे जिसे चाहें, रात-बिरात खत्म करा दें। सुबह कोई खोजना चाहे, तो खून का एक कतरा भी न मिल पायेगा। बाबू से पाँच सौ का प्रोनोट लिखा लिया था। मतलब कि इतने रुपये के बदले में वह जीवन भर के लिए गुलाम बन चुके थे।

छबिलिया माँ की बात सुनकर ठकरा मार गयी। फिर बोली—जा, भाई को देख आ। यहाँ न आये, तो खाना वहीं पहुँचा दूँ। छबिलिया यह कहती अन्दर की ओर चली गयी थी।....उसे पिता की कहानी सुन कर बेहद तकलीफ थी। मानसिक तनाव से मुक्ति पाने के लिए उसे कुछ देर तक अकेले में रहना जरूरी था।

सिर में फेटा बाँधे शिवलाल हल चलाये जा रहा था। अब उसे

उम्मीद थी कि साँझ होते इमिलिया में 'बाँह' जरूर लग जायगा । थके बैल एकाएक रुक गये । पगुराते हुए दोनों मूतने लगे । तेज धूप के प्रभाव में शिवलाल सिहर उठा । 'दई रे दई' इतनी गर्मी ।···· फिर बिना कुछ सोच-बिचार किये उसने बैलों की पीठ पर एक-एक छमकी लहरा दिया। राजा, धीमें चलने की आदत छोड़ दो । तुम दोनों को दुलारने-पुचकारने और सहूलियत देने से कई बार मार खा चुका । मुझसे नहीं होगा अब । मैं मार खाऊँ और तुम मूतते हुए मेरी दुर्दशा देखते रहो । दो-चार भद्दी बातें सुनाने के साथ उसने नयी 'हराई' फान दी थी ।

गाली देते वक़्त वह अचानक हँस पड़ा । जैसे कोई इनामी बात जबान से निकल गयी हो । मकरा की पूँछ ऐठते हुए शिवलाल ने कहा—'सुन लिया रजऊ । ठाकुर को गाली दे नहीं सकता । कच्ची मछली-सा खा जायगा मुझे । उसके बैल गाली पा रहे हैं, यही क्या कम है ।' उसकी हँसी मुस्कराहट में बदल गयी। थोड़ी देर बाद शिवलाल भूल गया कि वह ठहाका लगाकर हँसा भी था ।

'लल्ला ! ओ लल्ला ! बैल खोल दे । सूखी हड्डी के बूते इतना काम कहाँ तक करोगे ।' बाग की तरफ से तेजी में आती हुई शिवलाल की माँ ने चिल्लाकर कहा ।

खेत में प्रवेश कर वह एक किनारे रुक गयी । व्याकुलता और छटपटाहट में उसने गौर से देखा—शिवलाल का चेहरा बाजड़े की भूटी-सा काला पड़ चुका है । आँखे लाल । मुँह सूज आया है । होश गुम हो गये उस औरत के । माँ का कलेजा पिघल गया । वह छच्छा काल कर रोने लगी ।

शिवलाल घबड़ा गया । उसे उम्मीद न थी कि माँ इस तरह रो भी सकती है । वह धीमी आवाज में बोला—चुप रह, भगवान के नाम पर । शेर सिंह का बेटा लखन आया है । तुम्हारी बात सुन लेगा, तो एक आफत और आ जायगी ।

मार डालेगा । और क्या कर सकता है । माँ ने हाथ की उँगुलियाँ

फोड़ते हुए बकबकाना शुरू कर दिया। नाश हो जाय दाढ़ी जार का। गरीब को सताना भगवान को सताना है।....जेठ की दुपहरी में जले इसका घर। कहीं से पानी न मिल पाये। जले और रोये अपने पापों पर।

'चुप रह।'

'क्यों चुप रहूँ।'

'बात मान जा।'

'सिर तक पानी पहुँच गया है।'

'तो!'

'अब बोलने से ही काम बनेगा।'

'डर नहीं लगता।' शिवलाल ने आँख लिलोरते हुए कहा।

डर। बहुत डर चुकी। तभी तो इस हालत में पहुँच गयी हूँ। पेट की आग में झुलस कर प्राण देने से उसके हाथों मार खाकर मरना बेहतर है। लोग शेर के नाम और खानदान को थूकेंगे। और इसी बहाने उसका छिपा खूनी पंजा उभर कर समाज के सामने आयेगा। बहस खत्म करो। अब घर चलो। लौट कर यह काम फिर करना।

सनक बढ़ाने से काम नहीं बनता। बात समझने की कोशिश करो। मार खिलाने का इंतजाम न करो। जो मैं कहूँ उसे मान लो। गाँव में अभी तमाम खतरे हैं। इनसे बच निकलने की जरूरत है। बाद में सोचूँगा, मुझे किस रास्ते पर चलना चाहिए।

भुलई ने क्या पाप किया था। मजदूरी माँगना कोई गुनाह नहीं है। इसी बात पर नाराज हो गये बुझारत सिंह। खेत में उसे जिन्दा गड़वा दिया। सुबह उसी में गेहूँ बुवाकर वे निश्चिन्त भाव से घर में बैठ गये। जैसे भुनगा मर गया हो। किसी की देह पर जूँ तक नहीं रेंगी।

दरोगा को मालूम था किन्तु वे भी चुप्पी साध गये। उल्टे बुझारत के दरवाजे दोनों वक़्त हाजिरी देने लगे। गाँव में कौन नहीं जानता, यह बात। किसी ने जबान खोली! जेठऊ मेढक की तरह सब कुरकुरा

के चुप हो गये।""ऊपर से अफवाह उड़ा दिवा—'भुलई लँगोट का कच्चा था। किसी ने मार-कूँच कर नदी-ताल में फेक दिया होगा।'

गाँव है। कोई कुछ कहे। मेरे खयाल में भुलई इतना गया गुजरा इंसान नहीं था। बाल-बच्चे वाला आदमी। दो जून की रोटी जुटाने में परेशान रहता था। बड़ों से कौन कहे, भइया क्या कह रहे हो। समझ-बूझ कर बोलो। मगर नहीं, जिसके पास धन है, ताकत है, वह जो चाहे कर दे। कोई पुछत्तर नहीं।

'लेच्चर न सुना।' मेरी उमर इन्हीं बातों को सुनने में बीती है। छबिलिया दरवाजे पर खड़ी ताक रही होगी। चलो, देर लगाने से क्या फायदा।'

'पूरा दिन बीत गया। मुँह अँधेरा होते आ जाऊँगा। थोड़ी देर इधर कि उधर। परेशान क्यों होती हो।'

'ठेका लिया है ताल जोतने का।'

'हाँ। केवल आज।'

'होश में है। पगला तो नहीं गया।'

'आज सबेरे ठाकुर से कह दिया है, ताल जोत कर लौटूंगा।' शिवलाल ने हँसते हुए कहा। शाम के वक़्त उसे पता चलेगा तो वह बेहद खुश होगा। मुँह के नीचे घुनघुने की आवाज में हँसकर कहेगा—'ऐसे काम करो तो क्यों पीटूँ।

'मजदूरी लेते आना। खाने को कुछ है नहीं।' माँ ने निहायत कमजोर आवाज में कहा। देर तक बोलने के बाद जैसे उसकी ताकत बिल्कुल कम हो गयी हो।

माँ के लौटने पर शिव लाल जरूरत से ज्यादा खुश हुआ। उसे यकीन हो गया कि शाम तक उसके नजदीक कोई नहीं आयेगा। उसने एक बार चारों तरफ गौर से देखा और संतोष की साँस लेता बैलों को टिटकोरने लगा था।

लखन सिंह सिवान में बहुत कम आता है। पर आज वह घूमने के मतलब से आ गया था। पूरा सिवान देख चुकने के बाद वह इमिलिया ताल के पास आया और बिना पूछ-ताँछ किये वापस हो गया।....गाँजे की भरी चिलम हाथ में लेते हुए शेर सिंह ने पूछा—'इमिलिया की तरफ गये थे क्या !'

'वहीं से आ रहा हूँ।' लखन ने कहा।

'आज जुत जायगा या कल के लिए बच रहेगा।'

'नहीं, मेरा ख़याल है—वह खत्म करके ही आयेगा।'

'ओह ! बड़ा कामकाजी हो गया।'

'शिव लाल ने आज मेहनत किया है।' लखन ने कहा। कोई मजदूर उस ताल को एक दिन में नहीं जोत सकता। लगन की बात है। उसने दिल में ठान लिया होगा कि काम खत्म हो जाना चाहिए।

'कल के लौंडे, तुम्हें क्या पता।' शेर सिंह तन्नाकर बोले। सोचो, आज बैलों पर क्या बीती होगी। दोपहर में न भूसा खाये, न पानी पिये।....बैलों को मार दिया धूप में। बीमार पड़ गये तो इस महीने में कोई बैल भी न देगा।

सनक चढ़ गयी है उसे। मैंने पूछा—बीड़ी लेगा। मेरी तरफ देखे बगैर वह बोल पड़ा—'अभी नहीं। शाम के वक़्त। काम के समय बीड़ी सुलगाना और बतकही छाँटना ठीक नहीं है।'....हाँ, एक बात जरूर है। उसने बैलों की पीठ पर कई छपकियाँ लगायी हैं। उसे समझा दिया जाय कि बैलों को पीटा न करे।

'आने दो साले को।' मूँछ के बाल ऐंठते हुए शेरसिंह ने कहा। मजदूर लात पाये बगैर ठीक नहीं होता। बैल खरीदूँ मैं और उनकी जान वह ले। अजीब तमाशा है। मियां की जूती मियां का सिर।

इस बीच शेर सिंह ने चिलम उठाकर बगल में रख दिया था और पलंग से उठकर दरवाजे के सामने घूमने लगे थे। क्रोध इतना कि चेहरा तमतमा आया। चार-छह चक्कर लगाने के बाद सीधे कमरे में चले गये।

एक बेंत लिया और बाहर निकल आये। शिवलाल की मेहमानी के इंतजाम में कुछ उठा रखना उन्होंने उचित नहीं समझा।

अँधेरा गहराने तक इमिलिया ताल जुत गया। किसी तरफ घास-फूस का अस्तित्व नहीं है। माटी जैसे हँस पड़ी हो। कुआर के महीने में हर साल इस माटी के भाग्य बहुरते हैं।

कुछ देर तक हाथ-पाँव दुरुस्त करने के बाद शिवलाल ने बैलों का पुट्ठा ठोका। पुचकारते हुए कहा—'राजा, खूब चले आज। इज्जत बचा लिया। चलो, खरी-दाने से हौद भर दूँगा। रात भर जम कर चाभना।' ....सिर झमका कर बैल घर की ओर चल पड़े थे। कंधे पर हल-जुआ रखे शिवलाल पीछे-पीछे चलने लगा।

सझीली हवा लगने से वह मौज-मस्ती में हो गया। खुश होकर गाने लगा—'जुलुमी क जुलुम कब जायी।'....पूरा सिवान गूँज गया इस गीत से।

'राजा ! बड़ी मस्ती में हो।' कुबेर ने ठहाका लगा कर पूछ दिया। क्या बात है। कुछ इनाम-उनाम पा गये।

'खास बात नहीं है यार। हम सब की जिन्दगी में मौज के क्षण कहाँ आते हैं। रात-दिन रोटी-कपड़े के चक्करदार खेल में फँसे रहते हैं। हाय रे विपत्ति ! लाचार होकर उसके सामने घुटने टेकने पड़ते हैं। ....मन में आया, टेर दिया एक गीत। वैसे मानो, न मानो। थोड़ी देर के लिए मजा आ गया।

'इतनी देर तक हल चलाना ठीक नहीं है।' कुछ गम्भीर होकर कुबेर ने कहा। घर-वर की चिंता किया करो। आखिर में वही काम आयेगा। इकलौती बहन है। उसके लिए घर देखो। शादी के लायक हो रही है।

'समझता हूँ। क्या करूँ।

'फिर झंझट में गला क्यों फँसाते हो। समय से काम पर आओ और जाओ। देह की गुरिया तोड़ने पर कोई इनाम न देगा। बल्कि यह

समझो, कुछ हो गया तो मुँह देखने कोई न आयेगा। हवा में नहीं, आजमाई बात कह रहा हूँ।'

'आज शेर सिंह खुश हो जाय, बस।

'क्या कहा !'

'मालिक का प्रसन्न रहना जरूरी है।'

'नोट कर लो।'

'क्या !'

'बिना गाली सुने घर नहीं जा पाओगे।'

शिवलाल की खोपड़ी ठनक गयी। वह चुप रहा। इस कटु सत्य से मुक्ति पाने के लिए उसने बात को बदलते हुए कहा—'कुबेरे, छोड़ यह बकवास। खैनी हो, तो मल के खिला दे। तलब चढ़ी है। सुबह से छुआ तक नहीं।'

'राजा ! यह बात।'

'हाँ, यार।'

'ले अभी रगड़ के देता हूँ।'

'घर वाली मजे में है।' शिवलाल ने हाथ की उँगलियाँ फोड़ते हुए पूछा। सुना था, तबीयत खराब है। अब कैसे है।

'धत् सारे।' कंधा झकझोरते हुए कुबेर हँस पड़ा। बीमार नहीं थी। लड़का हुआ है राजा। किसी दिन आकर देख जा। यही सब मजे की चीजें है। ऐन मौके पर तुम चूहे की तरह बिल में घुस जाते हो।

'वही, वही। साफ नहीं कह पाया।'

'बोल, कब आयेगा।'

'परसों शाम तक जरूर आऊँगा।'

'राजा, बड़ी करतबी औरत है। उसी के भरोसे पूरा परिवार चल रहा है। नहीं तो हम चारों भाई कभी से अलग चूल्हा जला लिए होते। ले, खैनी।'

'दे भइया, अब चलेंगे। बैल हौदे पर पहुँच गये होंगे। मेरे पहुँचे बगैर उन्हें कोई बाँधेगा नहीं। सब लाट साहब के भतीजे हैं।'

'जाओ। परसों जरूर आना।'

'हाँ राजा। कह दिया। पक्का है। ककवा को जैराम कह देना।'

शिवलाल फाल बढ़ाता तेजी में बढ़ने लगा था। गाँव के नजदीक पहुँचा तो एक करैत सन्न-से निकल गया। बिल्कुल सामने से। वह भय से उछल पड़ा। देह थर-थर काँपने लगी। काल था यह।....भगवान की मर्जी, उसी ने बचा दिया। डस लेता तो लहर भी न देता। देर तक उसका कलेजा धुक-धुक करता रहा।

दालान के ठीक सामने शिवलाल ने हल और जुआठा रख दिया। चपकी दालान के भीतर टाँग आया। वह फुर्ती में बैलों के पास गया और हौद साफ कर सानी-भूसे के इंतजाम में जुट गया।

ठाकुर गुस्से में भन्नाया पलंग पर बैठा था। जाने क्या मन में आया, उचक कर तुरन्त बैलों के पास पहुँच गया। ललिया की पीठ पर उसने जैसे ही हाथ फैलाया, पिछला पैर झिटक कर वह फुफकारने लगा। मकरा ने ऐसी कोई हरकत नहीं की।....पूछा—'क्यों बे! ललिया की इतनी अधिक पिटाई क्यों कर दी। चोट्टा कहीं का। इधर आकर देख। इन्हें खरीदने में गठरी भर रुपया खर्च किया है। मन होता है, हूल दूँ कमीने की औलाद।

तड़कील आवाज सुनकर शिवलाल समझ गया पूरी बात। कुदरत का खेल अजीब है। मेहनत के बाद यह इनाम। जुताई के समय दो-चार छपके हर बैल को लग जाते हैं। इतने से न कोई बैल मरता है और न दवा-दारू का इंतजाम करना पड़ता है। खैर, इस घर का गुलाम हूँ। जो चाहे, कह ले।

शेर सिंह छलाँग लगाकर कुएँ की जगत पर पहुँच गया। बेंत से

लगा पीटने, जैसे जल्लाद। फिर छपकी चलायेगा बैलों पर। बोल, साले। नहीं तो साँप की तरह मुँह खून कर रख दूँगा।

बाँह से खून निकलता देख शिवलाल भोकाड़ छोड़ कर रो पड़ा। दर्द से व्याकुल होकर कुछ देर तक वह छटपटाया, पैर पटका और अन्त में बेहोशी की स्थिति में धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

उसे लम्बी साँस लेता देखकर शेर सिंह घबड़ा गया। लड़के की तरफ इशारा करता हुआ बोल पड़ा—'नाक दबाकर देख। मर-तो नहीं गया।'

'पानी।' मद्धिम आवाज में शिवलाल ने कहा।

'पियेगा।'

'हाँ।'

लखन ने पानी पिला कर पूछा—'तबीयत कैसी है। समझ और चालाकी से काम करना चाहिए। उठकर बैठ जा।'

'ठीक है।' हथेलियाँ रगड़ते हुए शिवलाल ने बताया।....मगर बाँह में दर्द होने से वह अब भी कराह रहा था।

इसी बीच घर तक खबर पहुँच गयी। छबिलिया और उसकी माँ दोनों रोती-चिल्लाती ठाकुर के दरवाजे पहुँच गयीं। दोनों शिवलाल को असहायावस्था में देखकर अजीब स्वर में विलाप करने लगीं। उनका रोना सुन बहुतों का दिल पसीज आया।

इस दर्दनाक और अमानवीय दृश्य को देखकर कुछ लोग इतने बेचैन हुए कि अपने घरों की तरफ वापस हो लिये। उनके पास इसके अलावा कोई रास्ता न था। गँवई समूह में इतना दम कहाँ कि सब मिलकर ठाकुर की बदमाश हरकतों के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर सकते।

हाथ और पीठ पर खूनी चकत्ते देखकर छबिलिया पगला गयी। भाई की दुर्दशा देख पाना उसके लिए सचमुच मुश्किल था। विरोध व्यक्त करने की दृष्टि से वह खड़ी होकर कहने लगी—'सुबह से पेट में कटा दाना तक नहीं गया। भूखे आदमी के साथ यह बर्ताव। मजदूर का

मतलब गुलाम नहीं होता बाबू साहब। दूसरा इंतजाम कर लीजिए। कल से यह काम पर नहीं आयेगा।

कानों में यह आवाज पड़ते ही शेर सिंह बमक कर बोला—'चुड़ैल कहीं की। इसी पेड़ में टँगवा दूँगा अभी। नशा खत्म हो जायगा दो मिनट में।'

'मतलब कि मैं नशे में बोल रही हूँ।'

'चुप, डाइन कहीं की।'

'मैं भी किसी की लड़की हूँ।' निडर होकर छबिलिया कहने लगी। 'न चुड़ैल हूँ, न डाइन। बस, पाप इतना है कि गरीब के घर में पैदा हुई हूँ। आँख दिखाओ उसे, जो तुम्हारी बराबरी का है। अनाथ को तकलीफ देना बड़ी बात नहीं है।'

'जाने दो। बहुत हो गया।' ओसारे से बाहर कदम रखते हुए ठकुराइन ने कहा। 'देश-जवांर में अभी बहुत दिन रहना है। ऐसा न करो कि सब तुम्हारे नाम पर थूकना शुरू कर दें।'

'हरामजादी की हिम्मत तो देख। टक-टक जवाब दे रही है। जैसे मैं जमींदार न हुआ, कोई भिखारी हूँ। इसे समझा दे। कहीं बेंत उठ गया तो आफत आ जायगी। तुम जानती हो, मेरा गुस्सा किस अनुपात में चढ़ता-उतरता है।'

'आओ इधर। पलंग पर बैठ जाओ।' ठकुराइन ने समझाने के लहजे में कहा, 'आदमी से नहीं, भगवान से डरो। हे राम! इस तरह दुश्मन को भी नहीं पीटा जाता। शिवलाल तो अपना आदमी है। बिल्कुल घर जैसा। मालिक और मजदूर में अन्तर भी क्या है। एक पैसा देता है और दूसरा मेहनत से ड्यूटी अदा करता है।'

ठकुराइन की बात सुन शेर सिंह सहम गया। कुछ देर तक बैठे रहने के बाद वह पलंग पर लेट गया। जैसे अपने किये पर पश्चाताप कर रहा हो....'चिलम कहाँ है। लाओ, दो फूँक लगा लूँ। दिमाग भारी हो चला है।'

छबिलिया को बुलाकर ठकुराइन ने कहा—'इसे घर ले जाओ। हल्दी-तेल गरमा कर मल देना। ठीक हो जायगा। पैसे की जरूरत पड़े तो बताना। मैं दूँगी। इनकी सनक को क्या कहूँ। संतोष करो। जो हुआ, उसे भी भूल जाओ।'

पासियों के झोंपड़े गाँव से काफी दूर एकान्त में बने थे। तीन तरफ कंकरील जमीन। एक ओर नदी। रात में अजीब सूनापन रहता है यहाँ। जैसे यहाँ आदमी नहीं भूत रहते हों। रात ग्यारह बजने के करीब मुनीश्वर तिवारी, बलराम और नन्दलाल टार्च लेशे शिवलाल के दरवाजे पर पहुँच गये। शुरू में चोर-चहरी समझ कर उड़न्तू कुत्ते भौंकने लगे थे। मगर पहचान मिलते ही वे चुपाई मार लिये। और लुरियाते हुए अगल-बगल चलते रहे।

शिवलाल चित लेटा था। छबिलिया पीठ पर हल्दी-तेल की मालिश कर रही थी। ज्यादा जोर पड़ने पर वह कराह उठता। जी निकालने से क्या फायदा। रहने दे इस वक़्त। सुबह देखा जायगा।

'अभी दर्द बर्दाश्त कर लेना बेहतर है। हड्डी-वड्डी विचल गयी तो आफत में पड़ जाओगे। तेल ठंडा हो चुका है। थोड़ा गरम कर लूँ।' यह कहती छबिलिया उठकर खड़ी हो गयी थी।

'रहने दे। मालिश से ठीक नहीं होगा। डाक्टर को दिखाना पड़ेगा।'

'पैसा तो हैं नहीं।'

'है।'

'कहाँ।'

'महादेव की दुलहिन दस रुपया दे गयी है। इतने से काम न हुआ तो किसी और से उधार ले लूँगा।' खटोले पर बैठते हुए शिवलाल ने कहा।.... उसने सामने की ओर देखा—कुछ लोग सिर झुकाये चुपचाप चले आ रहे हैं। समझ में न आया, रात में कौन हैं जो चले आ रहे हैं। घबराहट से उबरने के मतलब से पूछा—कौन !

'हम लोग हैं। तुम्हारे बारे में सुना तो चला आया देखने। समय जो चाहे करा दे। खैर चिंता न करो। भगवान का घर बड़ा है। वहाँ देर जरूर है, मगर अंधेर नहीं है।'

'छबिलिया! चल रे! एक खटोला और ला दे।' डंडे के भल उठते हुए शिवलाल ने कहा 'मुनीश्वर भइया! आप के आने से मेरे भीतर शक्ति और ऊर्जा का संचार हो गया है।'

'मैं पहले आ जाता। क्या करूँ, बाजार चला गया था।.... अभी लौटने पर पूरी कहानी मालूम हुई। कोई कदम उठाने से पहले तुम्हें देख लेना जरूरी था। गनीमत है तुम ठीक-ठाक हो, नहीं-तो इसी वक़्त शेर सिंह की ऐसी-तैसी कर देता।'

अंधेरी रात के सन्नाटे में बोलने की आहट पाकर गाँव के कई लोग आ गये थे। वे सब बगल में नीम के नीचे बैठकर आपस में फुसफुसाना शुरू कर दिये।.... तिवरान टोले के मनई कितने भले हैं। गरीबों के दरवाजे पर कौन आता है। इधर से गुजरते वक़्त सब घिनौने तरीके से मुँह बिदकाकर थूक देते हैं। प्रेम है, तभी तो इतनी रात में आना हुआ है।

हरेक की बात मुनीश्वर गौर से सुन गया। दनाक-से बोला—'थूकने का जमाना धरती से फुर्र हो चुका है। दुनिया में जुल्म और अत्याचार बहुत हो चुका। अब गरीब हाथ उठा चुका है। उसे कोई बौना नहीं बना सकता।

'सुन लिह्यो भइया। अरे, हम-सब वैसे ही बतिया रहे थे।' सिर खुजलाते हुए चौधरी ने कहा।

'पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा दिया।' नन्दलाल ने पूछा।

'नहीं।' गर्दन हिलाकर शिवलाल ने बताया। छबिलिया बीच ही में उचक कर बोल उठी—'क्या फायदा, पुलिस क्या कर लेगी। शेरसिंह के खिलाफ कदम उठाने की हिम्मत पुलिस में कहाँ है।'

'तू बीच में क्यों बोलती है।' महतारी ने चटकील आवाज में डपट कर छबिलिया को चुप कर दिया।

कल एमेले साहब को लेकर डी एम के बंगले पर जाऊँगा। उन्हें समझा-बुझाकर कोई रास्ता निकालता हूँ। इस बार मुँह तोड़ जवाब न दिया गया तो वह सचमुच शेर हो जायगा।

'कुछ न होगा। चुपाई मार के बैठ जाओ।' छबिलिया फिर बोल पड़ी। भुक्खड़ और कमजोर इंसान की आवाज कोई नहीं सुनता। जान-बूझकर झंझट रोपना ठीक नहीं लगता।

अधिकारियों को एक बार तौल लेने दो। अपना क्या जाता है। कुछ न होने पर जो बन पड़ेगा, वही करूँगा।' मुनीश्वर ने हँकड़ते हुए कहा।....गाँव वालों ने मुनीश्वर की बात को समर्थन दिया।

दिलावर भभक उठा—'आखिर कितने दिन तक हम मार खाते रहेंगे। बचाव में कोई रास्ता तैयार कर लेना अच्छा है। हुकूमत को भी देख लिया जाय, एक बार। सुनवाई न होने पर खुद हथियार उठाकर आगे बढ़ेंगे।

इस निर्णय के उपरान्त सब अपने घरों की तरफ चल दिये। मुनीश्वर ने जैसे ही टार्च जलाया, कुत्ते पुरानी रीति से भौंकने लगे। कुत्ते तब-तक शोर मचाते रहे, जब तक मुनीश्वर वगैरह गाँव से बाहर नहीं हो गये।

महादेव दिल्ली के मेन पावर-हाउस में फिटर था। कई साल बाद महीने भर की छुट्टी पर घर आया था। वैसे गाँव लौटने का इरादा कतई न था। क्योंकि जिन लोगों ने पहले मारा पीटा था, राह चलते धुचियाया और दुगलाही में बिराया था या मजदूरी न देकर जूते की नाल दिखायी थी, उनका चेहरा वह दुबारा नहीं देखना चाहता था। मगर घर-दुआर, परिवार का मोह। मजबूरन उसे आना ही पड़ा। महादेव की दुलहिन को शिवलाल के बारे में पूरी खबर मिल चुकी थी। उसने पड़ोस की औरतों

से कहा था—'दिल्ली शहर में यह घटना घटी होती तो शेर सिंह को गीदड़ बना कुत्ते लुहकार दिये जाते। और पता न चलता कि इस नाम का इन्सान भी कभी दुनिया में था। है रे गाँव। आदमी को जानवर बना दिया है।'

महादेव कहीं गया था। रात में जब वह आया तो औरत ने पूरी बात सुना दी। सारी बात सुनकर भी महादेव चुप रहा। जैसे कोई खास बात न हुई हो।···· औरत ने उतावलेपन में पूछा—'चुप क्यों हो।'

क्या बोलूँ। पैसे वालों की करतूत तुम्हें नहीं मालूम है। असमर्थों की आवाज कौन सुनता है। देश मौन, समाज मौन। हिम्मत सिंह ने मेरे साथ क्या नहीं किया। बस चलता, तो गोली मार देते।····लाचारी दर्जे पिंड छुड़ाकर शहर चला गया। सुख चैन से दो जून की रोटी मिलती है। मैं आज की घड़ी में किसी का गुलाम नहीं हूँ।

'शिवलाल को देख लो।'

'हाँ सुबह जाऊँगा।'

'समझा-बुझा दो उसे। तैयार हो तो साथ लेते चलो। जेल से छुटकारा पा जायगा बेचारा। कहीं-न-कहीं रोज मजुरिया पर हो जायगा।'

'उसकी माँ से पूछना पड़ेगा।'

'अरे! वह पागल है।'

कुछ भी हो। शिवलाल की माँ तो है। उसकी इजाजत जरूरी है। बाद में लोग कह सकते हैं, महादेव लड़के को बहका ले गया।.... रात ज्यादा हो चुकी है। चलो, इस वक़्त सोया जाय। समझा-बुझाकर माँ-बेटे को ठीक कर लूँगा। मेरी दिली इच्छा है, शिललाल गाँव छोड़कर मेरे साथ चला चले। जिंदगी बन जायगी। नौकरी दिलाना मेरे लिये बायें हाथ का खेल है।

शाम का समय था। शिवलाल, छबिलिया और उसकी माँ तीनों

बाहर बैठे थे। माँ ने आँचल से आँसू पोछते हुए कहा—'महादेव जिद पकड़े है। चले जाओ उसके साथ। तुम्हारे जाने पर गाँव का सारा झगड़ा-झंझट खत्म हो जायगा।'

कितनी बार कह चुका, रोया मत करो। रोने से आदमी कमजोर बनता है। गाँव के तमाम लोग दिल्ली में हैं। उनके साथ आराम से रह लूँगा। पैसा कमा कर हर महीने तुम्हारे नाम भेजा करेंगे। इसमें बुराई क्या है। तू रोती है तो मेरा दिल बैठने लगता है।

'तू कभी बाहर नहीं गया।'

'क्या हुआ।'

'शहर में कैसे रहेगा।'

'जैसे सब रहेंगे।'

'यही विश्वास नहीं होता।'

'जिंदगी भर मेरी रखवाली करोगी। मैं बड़ा हो गया हूँ। घबड़ाने की बात नहीं है।' यह कह कर शिवलाल हँसने लगा। इस बहाने उसने माँ के दिल को हलका कर दिया था।

'चिट्ठी-पत्री देते रहना। दिल को तसल्ली रहेगी।'

'महीने में एक बार चिट्ठी जरूर दूँगा। बीच में कोई आया तो तुम दोनों के लिए कपड़े भेज दूँगा।'

'अभी नौकरी कर। फिर सब हो जायगा।' छबिलिया ने खुशियाली जाहिर करते हुए कहा।....चलो, खा लो। और बातें बाद में होंगी।

महादेव तीन दिन बाद शहर जाने को तैयार हो गया। उसने शिवलाल को खबर दे दी थी। जिस रात में शिवलाल को घर से निकलना था, उसे नींद नहीं आयी। उतार-चढ़ाव की तमाम बातें सोचता रहा। पराया मुलुक, जाने क्या समस्या आ जाय।

सुबह चार बजे के लगभग जैसे-ही मुर्गे ने पहली बांग दी, माँ ने जगा दिया। तैयार हो जा। गाड़ी ठीक पाँच बजे छूट जाती है।

सुबह का आकाश बिल्कुल साफ था। तारे आँख-मिचौनी का खेल कर चुकने के उपरान्त छिपने के इंतजाम में व्यस्त थे। शिवलाल आँखें मीचता फुर्ती में उठा और चलने की तैयारी में जुट गया। उसे इस समय अद्‌भुत सुख मिल रहा था। शायद इसलिए कि अब उसे शेरसिंह का खूँखार चेहरा फिर देखने को नहीं मिलेगा।

तीनों स्टेशन की ओर चल पड़े। शिवलाल आगे था। छबिलिया सिर पर गठरी धरे बगल में चल रही थी। माँ पीछे थी। हाथ में झोला और छाता लिए हुए।

गाड़ी सही टाइम पर आ गयी। महादेव के साथ शिवलाल गाड़ी में बैठ गया। खिड़की से झाँकते हुए छबिलिया ने कहा—भइया ! सामान सवाच कर रख लेना। सफर लम्बा है। कहीं खो न जाय।

महादेव की दुलहिन ने हँसते हुए कहा—'जा, अब शिवलाल की चिन्ता न कर। कोरे का बच्चा नहीं है। मैं देख लूँगी इसे।'

दूसरी सीटी देकर गाड़ी खिसकने लगी थी। छबिलिया और उसकी माँ दोनों एक साथ रो पड़ीं। खिड़की से बाहर सिर निकाल कर शिवलाल ने कहा—'हे छबिलिया ! रोना बंद कर दे। चलते समय जी न दुखा। समझ ले, अब रोई तो, मैं नाराज हो जाऊँगा। जब मैं आऊँगा, तेरे लिए अच्छे-अच्छे कपड़े लाऊँगा। माँ को देखती रहना। इसे तकलीफ न होने पाये।

छबिलिया दर असल चुप हो गयी। गाड़ी जब-तक दिखती रही, माँ-बेटी स्टेशन पर खड़ी उड़ती धूल निहारती रहीं। फिर उदास हिरनी की तरह गाँव की ओर लौट पड़ी। वही गाँव, जहाँ जिन्दगी और मौत में किसी तरह का फर्क न था।

ये लोग

मजदूरों पर एक ही आरोप था कि वे रात में चोरी-छिपे आम तोड़ ले गये हैं। वैसे यह किसी भी स्तर पर महत्वपूर्ण घटना नहीं थी क्योंकि गाँवों में अक्सर ऐसा हो जाता है। गरीब आदमी आम, बेर और गूलर वगैरह राह चलते बगैर किसी से पूछे खा लेते हैं। जरूरत पड़ने पर वे थोड़ा-बहुत झोरिया भी लेते हैं। ऐसे मामलों में बगीचे का मालिक डाँट-डपट कर संतुष्ट हो लेता है।

लेकिन उस दिन ऐसा नहीं हुआ। वे लोग गुस्से में पगलाये से भारी संख्या में झुंड बनाकर मज़दूरों को पीटने चल पड़े थे। सबके हाथ में लाठियाँ, भाले और बंदूकें थीं। शायद गाँव के जमींदार किसी बात को लेकर पहले से नाराज थे। अनुकूल समय पाकर उन सबों ने निपट लेने का फैसला कर लिया है।

उनके डरावने चेहरों और बड़ी तैयारी को देखकर मजदूर भयभीत

हो गये थे। इन बरजोर आदमियों का कैसे मुकाबला किया जाय, उनके सामने अब यह सवाल था। भागने पर जान बचने की गुंजाइश भी नहीं थी क्योंकि वे सब तरफ से गाँव को घेर लिए थे।

डरे और सहमें मजदूर आँख मुलमुला कर एक-दूसरे की ओर चुपचाप देख रहे थे। जैसे वे पूछ रहे हों कि हमें क्या कदम उठाना चाहिए। इस बार घरों में छिप कर प्राण बचाने जैसा भाव उनमें नहीं था। कुछ मजदूर ऐसे भी थे, जो लाठी लिए आगे बढ़ने की बात सोच रहे थे।.... यह सब देखकर बुड्ढे व्याकुल थे क्योंकि जीवन भर आतंकित रहने के कारण वे जमींदारों की ताकत से घबड़ाये थे।

इस साल कुछ मजदूर दूसरे गाँवों से आकर यहाँ बस गये थे। उनके लिए वह सब, जो सामने दिख रहा था, एकदम नया-सा लग रहा था। उन परिवारों की औरतें और बच्चे इस कदर धीरज खो चुके थे कि सिसकियाँ भर-भर के रोना शुरू कर दिये थे। एक औरत अपने बच्चों को गोद से चिपकाये कह रही थी, अब कहाँ डेरा डाला जाय ? लगता है, इस ठिकाने को भी छोड़ना पड़ेगा। धनी लोग जाने क्यों समूचे देश में गरीबों का जीना हराम कर दिये हैं।

हैकड़ी, तावबाजी और ललकार भरी आवाजें सुनकर मैं गलियारे के दूसरे छोर पर पहुँच कर रुक गया था। यहाँ से उनका बिगड़ायल समूह साफ दिख रहा था। अभी तक मुझे झगड़े के बारे में कुछ-भी पता न था। कुछ देर में बगल खड़े लड़कों ने बताया कि चितावन के बच्चों ने बगिया से आम तोड़ लिया है। ये लोग उसी का बदला लेने आये हैं। ....मेरी समझ में न आया कि टके भर चीज के लिए वे आदमी का कीमती जीवन खतरे में डालने पर क्यों उतारू हैं।

इस बीच गाँव के तमाम आदमी आकर मुझे चारों तरफ से घेर लिये थे। उनमें छायी निराशा और घनीभूत बेचैनी को देखकर मैं आवाक् रह गया। मजदूरों में साहस और स्फूर्ति लाने के उद्देश्य से मैंने कहा— 'तुम लोग उदास क्यों हो ! निर्भय होकर समूचे गाँव को इकट्ठा करो।

मुकाबला किये बगैर काम नहीं बनेगा। हमारी संख्या उनसे कई गुना ज्यादा है। घर में लाठी-डंडा जो भी मौजूद हो, उसे हर कोई हाथ में उठा ले। कुछ न मिले, तो जूझने भर के लिए शरीर की हड्डियाँ पर्याप्त हैं। गरीब अपने अस्तित्व की सुरक्षा में इसी तरह लड़ता है।'

किसी से पूछे बिना मैं कुएँ की ऊँची जगत पर चढ़ गया था। मैंने तेज और भड़कीला आवाज में कहा—'देह छिपाने से काम बिगड़ जायगा। दो मिनट के भीतर सब लोग मेरे पास आ जायँ। भगैल बनने से मोहड़ा थामना ज्यादा अच्छा है।'

यही हुआ। अब मैं सबको साथ लिये उस ठिकाने पर पहुँच गया था, जहाँ से जमींदारों का समूह साफ दिख रहा था। वे लोग जमीन पर लाठियाँ पटक रहे थे और फूहड़ शब्दों का इस्तेमाल करते हुए खुले आम भद्दी गालियाँ बक रहे थे।....मजदूर बौखला कर चिल्ला पड़े—'मार दो इन चिमगादड़ों को। ये आदमी नहीं, कुत्ते की औलाद हैं।'

मजदूरों की संख्या और क्रोध को देख कर वे आश्चर्य में पड़ गये। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि मजदूर घरों से निकल कर उनका मुकाबला करने आयेंगे। पहले जब कभी खदेड़ा गया, मजदूर जान लेकर भाग लिए थे। या क्षमा माँग कर चुप हो गये थे।

बाबू जमुना सिंह के गुस्से का आर-पार नहीं है। वे अजगर की तरह साँस लेकर धोती फड़ियाने लगे थे। हाथ में बंदूक लेकर जमुना कह रहे थे—'लुहेड़ों और भिखमंगों में इतनी हिम्मत कि वे चिरौरी-मिन्नत करने की जगह सीना तान कर लोहा लेने आ गये। चीते की तरह छलांग भर कर इन्हें दबोच लो। कत्ल भी कर दो, तो कोई हर्ज नहीं है। चाहे जितना पैसा लगे। मैं निपट लूँगा।'

जमुना सिंह के शब्दों से प्रेरित होकर अब वे आगे की तरफ मार्च करना शुरू कर दिये थे। जैसे सेना की टुकड़ी दुश्मन की ताक में बढ़ रही हो। मुझे डपट कर चितावन ने कहा—'भाई! काहे गुमसुम बने हो। इस वक्त दिमाग से नहीं, लाठी से काम लेने की जरूरत है। चूकने

पर बेमौत मारे जायँगे । ये खूनखोर हैं । इन्हें गला टीपने में रंचमात्र तकलीफ नहीं होगी ।'

'जमुना की ओर ताको ।' यह कहने के साथ चितावन बिल्कुल घबड़ा गया था । वे बंदूक में गोली ठूँस रहे हैं । दागना शुरू कर दिये, तो कइयों की जान चली जायगी । बढ़ो, आगे चलो । मोर्चा थाम लिया जाय । देख लूँ, जमुना की बंदूक में कितनी ताकत है । फिट....फिट.... फिट, हमेशा डराता रहता है ।

दोनों पार्टियों के बीच में काफी फासला था । जो मजदूर अभी तक चुप थे, वे भी खुल कर गरियाना शुरू कर दिये थे । कुछ देर में चारों तरफ ऊँची आवाजें उठने लगी थीं । धूल उड़ने के साथ हवा में लाठियाँ सनसना रही थीं ।....मजदूरों को खदेड़ देने के उद्देश्य से जमुना सिंह ने हवाई फायर कर दिया था । लेकिन आवाज का असर नहीं हुआ । मजदूर निडर भाव से मैदान में जमे रहे । बल्कि उनके पैरों में पहले से ज्यादा ताकत थी ।

अब नाला पार करने भर की देरी थी । नहर का पानी बंद होने से नाला इन दिनों सूख गया है । मैं अभी भी गोल के पीछे था और मजदूरों का मनोबल ऊँचा कर उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा था क्योंकि ताकत के साथ संख्या दिखाने की ज्यादा जरूरत थी । कुछ आदमी अब भी गाँव की ओर से ललकारते हुये चले आ रहे थे ।

जमुना सिंह को नाले में उतरता देखकर मैं अपने आदमियों के सामने आ गया था । नाले के पार खड़े लोगों को देखकर मैंने कहा— 'गरीबों को मिटाने की साजिश बंद कर दो । मजदूर भय से काँपकर भागने वाले नहीं हैं । जुल्म की अँधेरी रात बीत चुकी है । उगते सूरज के प्रकाश में हर आदमी अपनी कीमत को समझने लगा है ।'

...जमुना सिंह ! तुम जैसे लोगों ने हमारे पूर्वजों को जी भर कर सताया है । नये दौर में यह सम्भव नहीं है । मेहनत करें और मार भी

खायें, यह कहाँ का न्याय है। एक मामूली-सी घटना को तूल देकर पूरे गाँव में आँधी-तूफान पैदा करना ठीक नहीं है।

....तुम्हारी बंदूक और दहाड़ से डर कर हम भागने वाले नहीं हैं। गरीब के सहनशील होने का मतलब यह नहीं है कि वह इज्जत की दाँव पर घुटने टेक देगा। इस वक्त झगड़ा किये, तो मात तुम्हें ही खानी पड़ेगी। आज हम गाँव के देवता की शपथ लेकर आये हैं। देवता को लज्जित करने का सवाल ही नहीं उठता।

....देश में विचित्र किस्म का मजाक चल रहा है। जो पहले जमींदार थे, वही आजादी के बाद नेता बनकर सामने आ गये। ऊँची कुर्सियों पर बैठने की लालच में वे गरीबी और विषमता दूर करने की बातें तो करते हैं, पर बात को असली धरातल पर कभी आने नहीं देते। हम कहाँ जाकर गुहार लगायें, समझ में नहीं आ रहा है।

....हर साल तुम लोग इसी प्रकार धावा बोलते हो, जैसे आदमी को खरगोश समझ लिया है। दो साल पहले की घटना को याद करो। फागुन के दिन थे और हम खेतों में काम कर रहे थे। तुम घोड़े पर बैठ कर गुस्से में आये थे। तुम्हारे फॉलोवरों ने औरतों को गाली दी और बच्चों को पीटा था। मामूली बातों को लेकर कहर ढाना कहाँ तक न्यायसंगत है ?

....जो भी हुआ, उसे भूल जाना मैं बेहतर समझता हूँ। कोई तरीका निकाल कर समझौता कर लो। दो मिनट का समय देता हूँ। खून की गर्माहट कम कर सलाह-मशविरा कर लो। बाद में मजदूरों को दोष मत देना। हमारे भाई आज लचने को तैयार नहीं हैं।

....झगड़ा बढ़ने पर तुम ही परेशान होगे। मजदूर नहीं। क्योंकि तुम्हारी जरूरतें हमसे ज्यादा हैं। हमें रहने के लिए पेड़ की छाया और पेट के वास्ते दो रोटी की जरूरत पड़ती है। जाहिर है, इतना इंतजाम कहीं भी हो जायगा। तमाम और बातों के साथ मजदूर जीने का तरीका भी जानता है।

....यदि मेरी बात को ठीक समझते हो, तो बंदूक कंधे पर रख कर वापस हो जाओ। हम बंदर घुड़की से डिगने वाले नहीं हैं। मुझे घूर कर क्यों देख रहे हो ! बोलो, क्या इरादा है !

जमुना सिंह और उनके आदमियों पर कोई असर नहीं हुआ। वे एक-दूसरे की ओर निगाह डाल कर चिल्ला पड़े—'क्या देखते हो ? मार दो चार-छह को। यह चालाक आदमी है। हमें बहका कर मजदूरों को तैयारी का मौका देना चाहता है।'

भीड़ की मानसिकता देखकर मैंने भी अपने आदमियों से कहा—'लड़ाई से बचने का एक भी उपाय शेष नहीं रह गया है। खून बहाकर साबित कर दो कि तुम इन लुहेड़ों से ज्यादा शक्तिशाली हो।'

नाले का बंधन टूट चुका था। अब दोनों तरफ के आदमी एक दूसरे से भिड़ गये थे। जिस जमीन पर कभी पानी बहता था, वहीं आज आदमी का खून बह रहा है। केवल एक व्यक्ति के पागलपन के कारण। ....बंदूक चुप है। जाने क्या बात है। समझ में नहीं आता।

आध घंटे का समय लगा होगा। इसी बीच लड़ाई का फैसला हो गया। जमींदारों की पार्टी मार से व्याकुल होकर भाग चली थी। चलते समय वे खून पोंछते हुए कह रहे थे—'मजदूर लाठी भाँजने की ट्रेनिंग ले चुके हैं। इनके वार को सम्हाल पाना मुश्किल हो गया है। जो इज्जत बनी थी, वह भी आज बर्बाद हो गयी। अब समाज में मुँह दिखाना मुश्किल हो जायगा।'

चोट खाने वालों में मजदूरों की संख्या कम नहीं थी। मेरे बायें हाथ की उँगली फरसे की रपट से छिल गयी थी। धोती फाड़ कर मैंने हाथ को मजबूती से बाँध लिया था। फिर भी काँख में लाठी दबाये मैं घायल मजदूरों की ओर दौड़ पड़ा था।

मैं बीच-ही में एकाएक रुक गया और सतर्क होकर सामने की तरफ ताकने लगा था। एक लाश को घसीटता चितावन मेरे पास पहुँच कर

बोला—'यह कौन है ! पहचान लो इसे ! मैंने इस आदमी को पहले वार में सुला दिया था। आज की तिथि में इसकी मौत लिखी थी। नहीं तो, यह आम जैसी मामूली चीज को लेकर न लड़ता। गरीबों के साथ यह बहुत अन्याय कर चुका था। मौत ने इसके सम्पूर्ण अहंकार को समाप्त कर दिया है।'

'चितावन ! तुम बहादुर हो।' मैंने लाश की ओर देख कर कहा। इसे गाँव में घुमा कर फिर यहीं लाया जाय। जामुन के पेड़ में टाँग देने के बाद-ही हम लोग घर चलेंगे। इसने बहुतों को खाया है। कम-से-कम पशु-पक्षी तो इसे खा कर तृप्त हो लें।

चीख

फैक्ट्री ऑफिस के सामने वाले लॉन में मजदूरों का जमाव लगभग रोज रहता है। फुर्सत मिलने पर ज्यादातर मजदूर इसी तरफ खिसक आते हैं। यह सब की आदत बन चुकी है। ये लोग कुछ देर तक छायादार पेड़ों के नीचे एक-दूसरे के कन्धे पर हाथ रख कर बैठते हैं। हँसी-मजाक का दौर शुरू होने पर ये भद्दे शब्दों का इस्तेमाल भी करने लगते हैं। इस तरह की हल्की बातों में जाने क्यों इन्हें बेहद मजा मिलता है। जिस दिन मजेदार बातों का सिलसिला नहीं कायम हो पाता और बैठक खत्म हो जाती है तो मजदूर एक-दूसरे का चेहरा देखकर हँसते हुए कहने लगते हैं—'यार ! एक बार हो जाय कुछ। बिना दिल की बात सुनाये मजा नहीं आता। आखिर हमारे पास है क्या, जिसके बहाने मन को हल्का किया जा सके।'

यहाँ पहले और भीड़ जुटती थी। इन दिनों ऐसा नहीं है। क्योंकि

चाट, मूँगफली, चाय और बीड़ी-सिगरेट बेचने वालों को लॉन में आने से मना कर दिया गया है। अब वे पूरब के मैदान में बाउंड्री के किनारे कतार में बैठकर सामान बेचने लगे हैं। उनकी बिक्री पहले की तुलना में बहुत घट गयी है। क्योंकि मजदूर वहाँ कम पहुँच पा रहे हैं। मुहल्ले वाले जरूर आते हैं, पर उनमें सामान खरीदने की क्षमता बहुत कम होती है।

फैक्ट्री-मालिक का कहना था कि खोंमचे वालों की संख्या बहुत बढ़ गयी है। ये मजदूरों की आदत खराब करने पर तुले हैं। इन्हें लॉन वगैरह में आने की इजाजत बिल्कुल न दी जाय। काफी समय तक इस आदेश का पालन कड़ाई के साथ किया गया। पर बाद में मजदूर ही इस प्रतिबन्ध का विरोध करने लगे। विरोध इतना बढ़ा कि मालिक को नियम बदलने का आदेश देना पड़ा। अब उन सबों को अन्दर आने की इजाजत मिल चुकी है।

खोंमचे वाले बहुत चालाक हैं। वे हर काम मजदूरों की रुचि को समझ कर करते हैं। इसीलिए अब वे भांग की टिकिया और शराब की बोतलें रखने लगे हैं। छिपे तौर पर इसकी बिक्री खूब होती है। तन-खाह के दिन माहौल एकदम बदल जाता है। मजदूरों के चेहरों पर विचित्र किस्म की खुशी झलकने लगती है। पिये-खाये बगैर कम ही मजदूर घर वापस जाते हैं।

कुछ मजदूर ऐसे भी हैं जिन्हें वेतन के दिन आधे से ज्यादा पैसा यहीं दे-देना पड़ता है। पीने का काम उधारी पर चलता रहता है। शराबियों की बढ़ती संख्या देखकर फैक्ट्री के वेलफेयर ऑफिसर परेशान हैं। उनकी समझ में नहीं आता, ऐसा क्यों हो रहा है। दरअसल उन सबको नहीं मालूम कि सप्लाई का काम छुपे तौर पर खोंमचे वाले ही करते हैं।

पंद्रह और पहली दो खास तारीखें हैं जिन्हें खोंमचे वाले अपना दिन मानते हैं। ये लोग कमाई का एक हिस्सा पुलिस वालों को भी देते हैं।

इससे इनके धंधे में हमेशा गर्माहट बनी रहती है। पुलिसमैनों से इन्हें काफी मदद मिलती है। जरूरत पड़ने पर ये पैसा भी वसूल करा देते हैं।

अब खोंमचे वाले निश्चिन्त हैं। उनका कहना है कि फैक्ट्री एरिया से उन्हें कोई हटा नहीं सकता। उनकी लड़ाई खुद मजदूर ही लड़ देंगे। उन्हें पीने-खाने की ऐसी सुविधा कौन दे सकता है!....इसी आधार पर वे अपना धंधा बढ़ाने में तेजी से लगे हैं।

सामने वाले लॉन की हालत इन दिनों काफी बदल चुकी है। भीड़ का ठिकाना नहीं। सुबह से शाम तक हजारों मजदूर घेरा डालने की स्थिति में बैठे रहते हैं। उनके चेहरों पर आक्रोश और भयानकता के चिह्न स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। वैसे अभी खतरे का कोई प्वाइंट सामने नहीं है। फिर भी वे सब पिस्तौल या छुरे जैसी चीजें गुप्त रूप में अपने पास रख लिये हैं। क्या पता, किस क्षण मामला बिगड़ जाय।

हू-हू के साथ नारेबाजी शुरू होती है, तो घंटों एक ही रफ्तार में नारे लगाये जाते हैं। बीच-बीच में वे फैक्ट्री-मालिक के नाम पर गालियाँ भी बक जाते हैं। सुनने वाले ठहाका लगाकर हँसते हुए कह देते हैं—'इस बार गनेसी को बेईमानी और बदमाशी का मजा एक साथ मिल जायगा। इसने मजदूरों की रोटी के साथ जो खिलवाड़ किया है उसका इनाम मिलना ही चाहिए।' शहर के लोग गनेसी के स्वभाव से परिचित हैं। वह अपनी आदतों के लिए पूरे शहर में सब तरफ बदनाम है।

सेठ गनेसीलाल बोनस देने को तैयार नहीं हैं। मजदूरों की यही मुख्य माँग है। और इस शर्त को मंजूर किये बगैर वे स्ट्राइक तोड़ने वाले नहीं हैं। दोनों ओर से लगातार तनाव बढ़ रहा है। मजदूर-नेता सामू एक नम्बर का चालाक आदमी है। उसने भरी सभा में ऐलान कर दिया है कि हमारी मांगें जब-तक पूरी नहीं होंगी, हड़ताल वापस लेना मुश्किल है।

सेठ ने सामू को मिलाने का हर सम्भव प्रयास किया, लेकिन उस

पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जब सभी हथकंडे फेल हो गये, तो एक दिन सामू को उन्होंने मीटिंग-रूम में वार्ता के लिए बुलाया। सेठ को मालूम था कि वार्ता असफल रहेगी फिर भी उन्हें अपने रुपयों पर अचूक विश्वास था। वे कई नेताओं को इसी बूते पर पहले तोड़ चुके थे। काफी देर तक बात करने के बाद उन्होंने कहा—'लो, ये पैसे रख लो। तुम मेरा साथ दोगे, तो मैं कुछ ही समय में तुम्हें मालामाल कर दूँगा। समझ लो दूर तक। मैं तुम्हारे जैसे होनहार युवकों को अपने साथ रखना चाहता हूँ।'

'पैसा !' सामू ने आश्चर्य से कहा था।

'हाँ।'

'क्या होगा !'

'तुम्हारे बच्चों के लिए।'

'हिम्मत कैसे किया !'

'क्योंकि तुम्हें पैसों की जरूरत है।'

'कैसे मालूम।'

'तुम गरीब हो।'

'सेठ जी ! मैं अपने बच्चों के लिए नहीं, मजदूरों की भलाई के लिए काम करता हूँ। मैं उन लीडरों में नहीं हूँ जिन्हें चाँदी के तराजू पर तौला जा सके।' लम्बी साँस लेते हुए सामू ने कहा था। मैं तो वार्ता के लिए आया था, न कि पैसों के सामने झुकने के लिए। देश के लाखों मजदूर मेरे साथ हैं। मैं उन्हें धोखा नहीं दे सकता।

'बात नहीं समझे।' सेठ ने कहा।

'क्यों।'

'मैं तुम्हें मदद देना चाहता हूँ।'

'पहले क्यों नहीं दिया।'

'समय नहीं मिला।'

'सेठ ! मैं स्वार्थी नहीं हूँ।'

'कौन कहता है ।'

'मैं चलूँगा । हम दोनों का रास्ता बिल्कुल अलग है ।'

'लेकिन सोच लो ।' सेठ ने हकलाते हुए कहा । जाकर अकेले में विचार करो । यदि मेरा प्रस्ताव तुम्हें पसन्द आये, तो बाद में भी आ सकते हो । तुम्हारे लिए मेरा दरवाजा हमेशा खुला है । स्ट्राइक बढ़ने पर तमाम खतरे पैदा होंगे । तुम मुसीबत में फँस सकते हो ।

'मिलने का कोई सवाल ही नहीं उठता ।' दरवाजे के बाहर निकलते हुए सामू ने कहा था । मजदूरों की माँग पूरी होकर रहेगी । हाँ, आप ताकत की आजमाइश जरूर कर लें । ठीक दो दिन बाद आन्दोलन को नया रूप देने जा रहा हूँ । हो सकता है, मैं खुद समस्याओं में उलझ जाऊँ । पर इस बात को लेकर मुझे किसी प्रकार की चिंता नहीं है ।

हफ्ते भर हो गया । सामू मेरे कमरे में आया था । पहले भी आया रहा होगा । पर मुझे क्या पता । क्योंकि कुछ दिन पहले तक इस ऑफिस या मिलने-जुलने वालों या भीड़ जुटा कर शोर मचाने वालों से मेरा कोई मतलब न था । फैक्ट्री-मालिक ने जाने क्या सोच कर मुझे इस प्रॉब्लेमेटिक कुर्सी पर बैठा दिया है । ट्रांसफर करने के पहले राय भी नहीं लिया । वह पूछता, तो मैं इस जगह पर आने की इच्छा कभी न जाहिर करता ।

खैर, अब सोचने का वक्त भी नहीं है । मजदूरों में झगड़े की आग सुलग चुकी है । और उस पर काबू पाना मेरे लिए जरूरी है । नौकरी में यह इम्तहान की घड़ी है । कहीं भूल हुई, तो सेठ माफ नहीं करेगा । दिमाग बिगड़ने पर वह नौकरी से निकाल भी सकता है ।

इस कुर्सी का इतिहास विचित्र है । एक नहीं, बीसियों लोग यहाँ रखे गये । सेठ ने सबको भरपूर मान-सम्मान भी दिया । मगर रिजल्ट के नाम पर शून्य रहा । मजदूरों ने दो-चार बार भीड़ जुटा कर गाली सुनाया कि भगने की नौबत आ गयी । उन्हें डर हो जाता कि जाने किस

क्षण उनकी जमकर पिटाई हो जायगी। सेठ ने किसी भी अधिकारी को दिल से साथ नहीं दिया।

यह ऑफिस भी अजीब है। मजदूरों की समस्या न सुलझी, तो गये काम से। मजदूर या मालिक किसी का भी पक्ष लेना खतरे से खाली नहीं रहता। ऐसी हालत में समस्या का पैदा हो जाना स्वाभाविक है। हालाँकि अभी तक ऐसी खतरनाक स्थिति मेरे सामने नहीं आयी है। पर जाने कब आ जाय, कौन जानता है।

उस रोज सामू के आने का मुझ पर खास असर नहीं हुआ था। जैसे दो-एक नेता रोज मिलने आते हैं, वैसे वह भी आया था। हाँ उसके साथ एक भीड़ थी, जो ऑफिस के बाहर मौजूद थी। इससे यह जरूर लगा था कि सामू मामूली नहीं, मजदूरों का बड़ा और अत्यन्त विश्वसनीय नेता है। समस्याओं को लेकर थोड़ी देर तक बात हुई, फिर वह उठकर चला गया। चलते वक्त उसने धीमी आवाज में कहा था—'कल सुबह किसी टाइम मिलूँगा। कुछ मुद्दों पर आपसे खुलकर बात करनी है।

दूसरे दिन वह दस-ग्याह के बीच आ गया था। सामू हर दृष्टि से बदला दिख रहा था। चाल-ढाल, बातचीत और व्यवहार में भी। वह कुर्ता-धोती पहने था। कन्धे के दोनों साइड में सिलिक का सफेद चमकीला चद्दर झूल रहा था। बोलते वक्त सिर टेढ़ा कर ऊपर की तरफ उठा लेता, जैसे वह क्रोध में हो। मुँह में पान भरा होने से उसे बोलने में अड़चन जरूर महसूस होती, मगर पीक लीलने के बाद मुँह को रूमाल से पोंछते हुए वह अपना काम किये जा रहा था। कुल मिलाकर सामू अपने को दमदार और महान् मजदूर नेता साबित करने में जुटा था।

सामू पढ़ा-लिखा और समझदार नेता लग रहा था। मजदूर-संघर्ष का उसे पूरा ज्ञान था। अपनी माँगों के समर्थन में वह विदेशों में हुई क्रान्तियों का हवाला भी देता था। मैं बोल नहीं रहा था। केवल उसे सुनने और समझने की कोशिश में था। उसके अधिकांश तर्क सही और अकाट्य थे।

फैक्ट्री की आमदनी के बारे में उसके पास सही रिपोर्ट थी। वह कहाँ से पा गया, मेरी समझ में नहीं आया। क्योंकि आय-व्यय का रिकॉर्ड इतना गोपनीय रखा जाता है कि उसे लाख कोशिश के बावजूद पाया नहीं जा सकता। इसका मतलब हुआ कि सामू का जासूसी विभाग बहुत मजबूत है। और वह फैक्ट्री की हर बात को बेहतर तरीके से जानता है।

मैं उस मोटी फाइल को, अब मेज पर एक किनारे रख चुका था जिसे ठीक करने में पिछले कई दिनों से परेशान था। ओवरटाइम और बोनस के बारे में मुझे जो रिपोर्ट देनी थी, उसे एक पन्ने पर लिख कर फाइल में नत्थी कर दिया था। फिर एक लम्बी सांस लेकर मैंने सोचा—'यह मजदूरों का लीडर है। इससे बात कर लूँ। प्रॉब्लम सुलझाने और फैक्ट्री लाइफ को नॉर्मल बनाने में शायद कुछ सहूलियत हो जाय।'

इस बीच वह बाहर निकल गया था। जो लोग पोर्टिको में खड़े थे, उनसे बात किया। फिर उन्हें हाथ का संकेत देता तेजी में भीतर की ओर आ गया था। वह नहीं जानता था कि मेरी निगाह उसी पर है। कुर्सी पर बैठते ही मैंने उससे पूछा—'क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूँ?'

'मेरा परिचय!' सामू ने कहा था।

'हाँ।'

'मुझे नहीं जानते! 'सामू' शब्द कभी कान में पड़ा है।'

'सुना तो है।'

'आश्चर्य है कि आप मुझे नहीं जानते।'

'आप नाराज हो गये क्या?' मैंने कहा। बात-व्यवहार से इतना महसूस कर लिया है कि आप मजदूर-नेता हैं। इसके आगे कुछ भी नहीं मालूम। परिचय होता, तो इस तरह का सवाल क्यों पूछता। नाम अभी दो-चार दिन पहले सुना है। पर आप क्या करते हैं या यूनियन से कैसा रिश्ता है, मुझे नहीं मालूम। और इस वक्त जबकि आपसे फैक्ट्री के मुद्दों पर बात कर रहा हूँ, मेरे लिए इन चीजों की जानकारी जरूरी है।

जीवन में ऐसा अक्सर होता है। सम्भव है, अब आप मेरे अच्छे दोस्त हो जायँ। स्ट्राइक आज है, कल समाप्त हो सकती है। उसके मूड को बदलने के लिहाज से मैं हँसने लगा था।

'ठीक है मैं नाराज नहीं हूँ।' उसने पूरी गम्भीरता से जवाब दिया। मेरा असली नाम श्यामकुमार है। मजदूर-बिरादरी में मुझे सामू नाम से जाना-पहचाना जाता है। यह नाम लोगों ने शायद प्रेमवश रख दिया है।

'मैं आपकी फ़ैक्ट्री में काम भी नहीं करता।' बात को आगे बढ़ाते हुए उसने कहा। किसी और नौकरी में भी नहीं हूँ। शुरू में सोचा जरूर था, पर बाद में इरादा बदल दिया। गरीबी के बावजूद मैं संघर्ष के रास्ते पर चलने के लिए डटा रहा।....इसी नगर में मजदूरों का एक राष्ट्रीय संगठन है। मैं उसी का प्रेसीडेंट हूँ। बरसों से। उम्मीद है कि हमेशा रहूँगा।

मेरा मुख्य उद्देश्य अन्याय के विरुद्ध लड़ाई जारी रखना है। पूँजीपति जब कभी मजदूरों को परेशान करने का षड्यंत्र रचता है, तो मैं पूरी ताकत से उनके मुकाबले के लिए निकल पड़ता हूँ। रिकॉर्ड यही है कि आज तक कभी हारा नहीं। मार डालने की धमकियाँ इतनी ज्यादा मिल चुकी हैं कि अब मौत से डर नहीं लगता।

'संगठन का नाम पहली बार सुन रहा हूँ।'

'यह बेहद मजबूत संस्था है।'

'अच्छा रहा कि जान गया।'

'मजदूर-संगठनों का ज्ञान रखना जरूरी है।'

'इसका इतिहास बता सकते हैं।' मैंने पूछा।

'क्यों नहीं। यही तो मेरा मुख्य विषय है।' सामू ने हँसते हुए कहा। दो मिनट में पूरी कहानी सुनाये देता हूँ।....आजादी मिलने के बाद देश के मजदूरों में जागरण की एक नयी लहर आयी थी। सोचा यह गया था कि देश तरक्की करेगा और उसी के साथ गरीब मजदूरों की जिन्दगी

में नयी रोशनी का फैलाव होगा। हुआ भी, पर उतना नहीं जितना कि उस जमाने में आशा बँधी थी। उस वक्त मजदूरों के सबसे बड़े हिमायती थे—कामरेड देवाराम तेवारी। देश के मजदूरों को एक डोर में बाँधने के लिहाज से उन्होंने इस मोर्चे को तैयार किया था। तेवारी तो इस दुनिया में नहीं हैं, मगर उनके शब्द आज भी हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

पूँजीपति और शासन दोनों की ओर से इस मोर्चे को तोड़ने की हर कोशिश हो चुकी है। देश के नामी-गिरामी लोगों ने कौन-सा हथकंडा नहीं अपनाया। मेरे सहयोगियों को मालामाल बनाने का प्रलोभन दिया गया। शहर के गुंडे लगाये गये। सड़क चलते निपट लेने की धमकियाँ दी गयीं। मगर हर कोशिश बेकार साबित हुई।....मजदूर प्रतिनिधियों ने एकजुट होकर दिखा दिया कि वे गरीब हो सकते हैं किन्तु लालच में या गोली-बन्दूक के सामने सिर नहीं झुका सकते।

वही मजबूत संगठन अब मेरे हाथ में है। जाहिर है, मजदूरों का मुझ पर दिली विश्वास है। मैं उनके हक की लड़ाई लड़ता हूँ। और वे मेरे इशारे पर चलते हैं। फैक्ट्री में जो आन्दोलन चल रहा है, उसके पीछे हमारी पूरी ताकत लगी है।

बहस का सिलसिला मैंने यहीं खत्म कर दिया। मुझे हड़ताल के सम्बन्ध में जानकारी लेनी थी, इसलिए मैंने बोनस के बारे में सवाल किया। और वह इसी काम को पूरा कराने के लिए आया भी था। उसने बताया कि माँगों की सूची वैसे बहुत लम्बी है, लेकिन बोनस देना मंजूर कर लिया जाय, तो आंदोलन अभी वापस ले सकता हूँ। मैंनेजमेन्ट को विश्वास न हो, तो लिख कर दे सकता हूँ। पिछले तीन वर्ष से फैक्ट्री का मुनाफा करोड़ों में पहुँच रहा है। किसके बूते पर। मजदूरों को खून-पसीना एक करने का इनाम मिलना चाहिए। समझौता न हुआ, तो मजदूर खतरनाक मोड़ ले सकते हैं।

'कोई रास्ता निकालना है।' मैंने कहा।

'कैसे होगा !'

'बोनस दिया जाय।'

'आपकी बात कौन मानेगा ?'

'बोनस रिकमेंड करने का पावर था। सो मैंने कर दिया है।' सामने की ओर फाइल रखते हुए मैंने कहा। वैसे मुझे अफसोस है, क्योंकि कागज पर ही मैं राय दे सकता हूँ। पैसा देने या न देने का अधिकार सेठ के पास है। वह बेहद झक्की स्वभाव का आदमी है। मूड बन गया, तो दे भी सकता है।

'बोनस मिल गया, तो मजदूर आपको कंधे पर बैठा लेंगे।' उसने खुशी जाहिर करते हुए कहा। हड़तालियों का दिमाग कल से बेहद गर्म है। इतवार तक-का और मौका है। कोई रास्ता न निकला, तो मामला बिगड़ सकता है। उस भयंकर स्थिति को सोचकर मैं खुद परेशान हूँ। दिमाग चकरा देने वाली योजनाएँ बन चुकी हैं।

'ऐसी बात ?' मैंने कहा।

'हाँ मसाला तैयार है।'

'क्या ?'

'सब-तरह से नुकसान किया जायगा।'

'मजदूरों के चेहरों पर गुस्सा छाया है। मैं सुबह से अंदाज रहा हूँ।' भीतर से विचित्र भय का अनुभव करते हुए मैंने कहा। अभी झगड़ा बचाने की कोशिश कीजिए। कल चार बजे मीटिंग होगी। हो सकता है, उसमें मजदूरों के फेवर में निर्णय लिया जाय। वैसे आप सबके प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है।

'इससे अच्छा और क्या होगा' सामू ने कहा। मगर उसके बाद मैं कोई गारण्टी न दे सकूँगा। पैसे वाले मांगने पर कुछ नहीं देते। नुकसान होने पर ही उनका दिमाग ठीक होता है। इस बार गनेसी को औकात मालूम हो जायेगी।

यह कहने के साथ वह कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। और बाहर

निकल कर उस तरफ चलने लगा, जहाँ मजदूर झुण्ड बनाये खड़े थे। या बैठे हुए आपस में जोर-जोर से बातें कर रहे थे। मैं उसके चैलेंज से अजीब उलझन में पड़ गया था। समस्या को लेकर मैं अकेले में बैठा देर तक सोचता रहा। पर मुझे कोई साफ रास्ता नजर नहीं आ रहा था।

मैं घण्टे भर से प्रतीक्षा करता रहा किन्तु डिप्टी मैनेजर अमरेशदास नहीं आये। उन्हें अब तक निश्चय ही आ जाना था। मुझे लगा कि कोई मिल गया है और वे उसी के साथ बैठ कर गप्पें लगा रहे होंगे। मि० दास मस्त किस्म के आदमी हैं। वे फैक्ट्री की चिंता बहुत कम करते हैं। बात ठीक भी है। उनके करने से कुछ होता नहीं। सेठ जो निर्णय लेता है उसी के सहारे हर काम चलता है।

इसी बीच सेठ का फोन आ गया। उन्होंने कहा—'मि० दास पहुँच रहे होंगे। बोनस के हर पहलू पर डिसकस करने के बाद फाइल मेरे पास भेज दीजिएगा। सतर्क रहना जरूरी है। उतावलेपन से काम बिगड़ सकता है।'

मि० दास इतने में सामने से आते दिख गये। पहुँचते ही उन्होंने पूछा 'फाइल कहाँ तक पहुँची।' सेठ बहुत नाराज है। वह कहता है, फैक्ट्री के तमाम अफसर मेहनत से काम नहीं करते। सब हराम की रोटी तोड़ने में जुटे हैं। हड़ताल पर काबू पा लूँ, तो लापरवाह ऑफिसर्स को पनिश किये बगैर नहीं छोड़ूँगा।' जाने क्यों, वह पागलों जैसा व्यवहार करने लगा है। उसका चेचकी खूँखार चेहरा देखकर डर लगने लगा है। पहले ऐसा नहीं था। वह अफसरों को सम्मान देने के साथ उनकी हर बात को सुनता था।

'लापरवाह कौन है, समझ में नहीं आता।' मैंने कहा। वह न खुद काम करता है, न काम करने की छूट देता है। उल्टा, रास्ते में अड़ंगा डाल कर बना-बनाया काम भी खराब कर देता है। इसी के कर्मों का

फल मजबूरन हम सबको भोगना पड़ रहा है। कल इस कम्पाउन्ड में क्या हो सकता है, सोच कर माथा ठनक जाता है।

मेरी बात सुनकर मि० दास हँसने लगे थे। बोले—'नये आदमी हो। घबड़ाने से काम नहीं बनेगा। कसाई के घर काम करे, तो कलेजे को पत्थर-सा मजबूत रखना पड़ेगा। मैं गनेसी को पच्चीस वर्ष से देखता आ रहा हूँ। आज तक इसने किसी पर दया नहीं की। अव्वल दर्जे का हरामी है।....मजदूरों की गलती कभी नहीं रही। इसने उन्हें हमेशा परेशान किया है।'

और सुनो।....हड़ताल जब से शुरू है, मैंने कान में तेल डाल लिया है। वह जो भी कहता है, सुन लेता हूँ। लेकिन करता वही हूँ, जो मुझे ठीक लगता है। गनेसी फितूरी है। पैसा, हाय पैसा। रात-दिन इसी चिन्ता में डूबा रहता है। उस रोज तुम नहीं थे। बङ्गले पर सीक्रेट मीटिंग किये था। टेक्निकल स्टाफ का इंक्रीमेंट रोक दिया है। दो-चार दिन में फाइल तुम्हारे पास आ जायगी। कमीनेपन की हद है। भाषा पढ़ोगे, तो अक्ल दुरुस्त हो जायगी।

'मालूम है।' मैंने कहा। कल मि० पांथरी बता गये हैं। मगर इन हरकतों से फैक्ट्री का और नुकसान होगा। इंजीनियर्स में असंतोष बढ़ेगा। वे मशीन के पुर्जे खराब कर फैक्ट्री की चलती गाड़ी रोक देंगे। फिर गनेसी चिल्लायेगा—काम नहीं हो रहा है। लोग मेरे खिलाफ जाल बुनने में लगे हैं। और परेशान हम लोग होंगे।'....कुछ काम की बात हो जाय। मैनेजर का फोन आया था। शायद आप बोनस की फाइल देखना चाहेंगे।

'फोन' मि० दास ने पूछा।

'हाँ।'

'क्या कहा!'

'यही कि मि० दास जा रहे हैं।'

'ओह!'

'क्या बात है ?'

'वह मुझे कहीं बैठने नहीं देगा।'

'कुछ कह दिया क्या !'

'मेरे भाई, महीने भर से परेशान हूँ।' आँख मुलमुलाते हुए मि० दास ने कहा। जब देखो, मुझे यहाँ-वहाँ दौड़ लगाने का आदेश देता रहता है। बात करने का आर्डर। डिसीजन लेने का आर्डर। जैसे हर मर्ज की दवा केवल मैं हूँ। ऊपर से तुर्रा यह कि सुझाव भी नहीं मानता। समझ में नहीं आता, क्या करूँ।

'चिंता करना ठीक नहीं है।' मैंने कहा। वैसे सुन लीजिए। बोनस बोनस देने की शर्त मैंने मंजूर कर दी है। आखिरी निर्णय मैनेजिंग कमेटी को लेना है। वह जो चाहे, करे। आप फाइल देख लें।....मजदूर-नेता सामू भी मेरे पास आया था। मैंने कुछ खास मुद्दों पर उससे राय भी ली है। आदमी बेहद तेज किस्म का है। रिपोर्ट में दी गई ज्यादातर बातों से वह सहमत है।

'यह तो अच्छा रहा।' मि० दास ने कहा। सामू यहाँ का सब से बड़ा नेता है। उसे काबू में रखना जरूरी है। वह चाहेगा, तो आंदोलन तेज नहीं होगा। और समझौता भी हो जायगा। मजदूर केवल उसी की बात मानते हैं।

हाँ, ठीक कहते हैं आप। उसने मेरे साथ जो व्यवहार किया है, उसे देखकर लगा कि वह सही आदमी है। सामू मजदूर-बिरादरी का सच्चा नेता है। लेबर्स को रत्ती भर धोखा नहीं देगा।....चलते वक्त उसने धमकी भी दी है। कल तक माँग पूरी न हुई तो फैक्ट्री की दुर्दशा हो सकती है। उसकी आवाज में विचित्र किस्म का आत्म विश्वास और संघर्ष में सफल होने का संकेत था।

कुछ देर तक चुप रह कर मि० दास फाइल उलटते रहे। हर पन्ने को बारीकी से देखकर उन्होंने कहा—'ठीक-ही है। तुमने जो प्रमाण

दिये हैं, वे अकाट्य हैं। फाइलें इसी तरह भेज दो। जैसा भी आदेश दें, उनकी मर्जी।'

दो बजे का समय था। फैक्ट्री के पीछे वाले मैदान में अचानक जोर की आवाज हुई। आवाज क्रमशः बढ़ती ही गयी—'इंकलाब जिन्दाबाद, गनेशीलाल मुर्दाबाद, मजदूर एकता अमर हो, सामू जिन्दाबाद।'....थोड़ी देर में खामोशी छा गयी। नारेबाजी के ठीक बाद शायद भाषण शुरू हो गया था। हम दोनों एक दूसरे का चेहरा देखते स्तब्ध रह गये।

खिड़की से बाहर की ओर देखता मैं सोच रहा था—'कोई भी ताकत इन संगठित मजदूरों के बीच दरार नहीं डाल सकती। अनहोनी करीब है। हो सकता है, ये फैक्ट्री को भी ध्वस्त करने का प्रयास करें। मि० दास अब भी खामोश बैठे थे। बार-बार कान उटेर कर आवाज सुनने की कोशिश में लगे थे।

'देख रहे हो' मि० दास ने कहा।

'हाँ।'

'पत्थरों का पहाड़ तोड़ना आसान नहीं है।'

'जी।'

'मैं चल रहा हूँ।'

'कहाँ ?'

'सेठ को बता दूँ।' मि० दास ने विचित्र घबराहट के साथ कहा। इस वक्त कोई घटना हो गयी, तो वह बकसेगा नहीं। इधर कई बार मुझे डाँट चुका है। समझ में नहीं आता किस रास्ते पर चलूँ। नौकरी छोड़ दूँ, तो भी संकट में फँस जाऊँगा।....मि० दास उदास होकर मेरे सामने से चले गये थे। उनका चेहरा देखकर मुझे बेहद तकलीफ हुई थी।

मि० दास के जाने के बाद मैंने फाइलों को उलट-पुलट कर एक बार फिर देखा। इसके बाद मीटिंग में पेश की जाने वाली फाइलों का गट्ठर बाँध कर बगल में रख दिया। मैं अब काम करने के मूड में बिल्कुल न था। जेब से सिगरेट निकाला और लेश कर पीने लगा था।

इसी बीच जाने कहाँ से सिक्योरिटी-ऑफिसर मि० मजूमदार आ धमके। उनके आने का कोई तुक न था। मगर किसी कार्यवश वे आ ही गये थे। मजूमदार को फैक्ट्री के आन्दोलनों को दबाने में एक्सपर्ट माना गया है। इस बार उनकी भी अक्ल गुम है। दो दिन से परेशान हैं। मामला हल होने के बजाय और बिगड़ता जा रहा है। ज्यादा दौड़-धूप करने से चेहरे पर झुर्रियाँ उभर आयी हैं।

कुर्सी पर बैठते ही उन्होंने कहा—'हड़ताल सम्बन्धी रिपोर्ट देनी थी। इसलिए आपके पास हाजिर होना जरूरी था। मेरा दिमाग फेल है। जितने हथकंडे थे, मैंने सबका इस्तेमाल कर देख लिया है।' फिर पसीना पोछते हुए वे बुश्शर्ट का कॉलर ठीक करने लगे थे।

'घबड़ाइये नहीं।' मैंने कहा।

'क्या करूँ!'

'ड्यूटी देते रहिए।'

'वह-तो कर रहा हूँ।'

'अभी कहीं गड़बड़ी तो नहीं हुई।'

'सब कुछ हो गया है।' मि० मजूमदार ने गर्दन झुका कर कहा। जो बाकी है, कल तक सामने आ जायगा। कई स्ट्राइकें देखीं और उन्हें जमकर दबाया भी है। लेकिन इस बार हर चीज पकड़ के बाहर हो गयी है।....कुछ दिन पहले तक जो मजदूर डरते थे, वही इतने शैतान हो चुके हैं कि देखते ही गाली की बौछार शुरू कर देते हैं।

'इन्तजाम तो अच्छा है।' मैंने कहा।

'क्या फायदा।'

'क्यों?'

'मजदूरों पर कोई असर नहीं है।'

'कैसे मालूम?'

'वे मार-पीट पर उतारू हैं।'

'ऐसी बात?'

'यही नहीं। फैक्ट्री जलाने की योजना तैयार है।'

'सीक्रेट रिपोर्ट तैयार है।'

'हाँ, वही देना चाहता हूँ।'

'लाइये। मैनेजर को सूचित कर दूँ। हम दोनों की जिम्मेदारी खत्म हो जाय।' मि० मजूमदार के हाथ से फाइल लेकर मैंने कहा। फोर्स कमजोर पड़ रही हो, तो जिला मजिस्ट्रेट को सूचित कर पी० ए० सी० या पुलिस की व्यवस्था कर लीजिए। इस काम में देरी मत कीजिए। सेठ को असलियत बता देना आपके हित में रहेगा।

पुलिस आने से मजदूर और भड़क सकते हैं। यह स्टेप निश्चय ही खतरनाक साबित होगा। वे किसी भी वर्दीधारी को देखकर गुस्सा जाते हैं।....इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर मैं आज पीछे वाले मैदान में नहीं गया। वे मुझे गाली भी दे सकते हैं। जान जोखिम में डालने से क्या फायदा ? गनेसी इनाम तो देगा नहीं। नौकरी बची रहे, इसी में गनीमत है।

'आप भीड़ की ओर बिल्कुल न जायँ।' सुझाव के तौर पर मैंने कहा। मुझे लगता है मजदूर हर मोर्चे पर तैयार हैं। सबका इलाज केवल यह है कि हम उन्हें बोनस दे दें। जब हर फैक्ट्री दे रही है, तो हम क्यों न दें। मजदूरों का हक मारना ठीक नहीं है।

'दूसरे शहरों से जो मजदूर नेता आये हैं, वे समस्या को ज्यादा गम्भीर बना रहे हैं।' मि० मजूमदार ने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा। उन सबों ने इतना जोशीला भाषण दिया है कि मजदूर किसी समय कुछ भी कर सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि वे जरूरत आने पर हथियार भी उठा लेंगे। चलो, चार बजने वाले हैं। देखा जाय, मीटिंग में क्या निर्णय लिया जाता है।....कमरे से बाहर निकल कर हम दोनों सेठ के बङ्गले की ओर चल दिये थे।

मेरे पहुँचने तक फैक्ट्री के लगभग सभी अधिकारी पहुँच चुके थे। सेठ

गनेसीलाल और मैनेजिंग डायरेक्टर मि० अहूजा अगल-बगल बैठे थे। वे गम्भीर थे और आपस में बातें कर रहे थे। मजूमदार दाहिने तरफ था। वह सिर झुकाये सीक्रेट डायरी के पन्ने उलट-पुलट कर यह दिखा रहा था कि गुप्तचर विभाग ने जरूरत से अधिक काम किया है और हर सूचना उसकी डायरी में अंकित है।

सेठ से परमिशन लेकर अहूजा ने बोलना शुरू कर दिया। वह पूरे माहौल से असंतुष्ट होने के साथ नाराज भी था। बोलते समय वह झुंझलाकर कभी बाँह सिकोड़ता और कभी मेज थपथपा कर मुट्ठियाँ तानते हुए खड़ा हो जाता। चेहरे से मालूम पड़ रहा था कि वह मजदूरों से बहुत डर गया है, क्योंकि वह बीच-बीच में काँपने लगता था।

अहूजा ने अधिकारियों को इतना लताड़ा कि सबके होश गुम हो गये। दरअसल उसे कुछ लोगों पर काम न करने और हड़तालियों को भड़काने का संदेह था। यद्यपि आरोप में किसी तरह की सच्चाई न थी। फिर भी वह बड़बड़ाये जा रहा था। और हम अहूजा की हर बात सुनने के लिए लाचार थे। नौकरी का यह सबसे बड़ा अभिशाप है।

'अधिकारियों को मैंने क्या सुविधा नहीं दी।' चश्मा उतार कर हाथ में लेते हुए उसने कहा। मगर रिटर्न न के बराबर है। पंद्रह दिन का समय बीत गया। स्ट्राइक खत्म होने के बजाय पूरी मजबूती के साथ लगातार बढ़ती जा रही है। एक भी अधिकारी नहीं है जिसने मजदूरों के बीच घुसपैठ की हो या उन्हें समझौते का रास्ता दिखाया हो। हड़ताल खत्म होने पर मुझे लेबर्स की जगह अधिकारियों की छटनी करनी पड़ेगी।

सिक्योरिटी यूनिट की हालत बेहद खराब है। फोर्स के सिपाही मजदूर लीडरों से मिल गये हैं। इस बात का प्रमाण मेरे पास है। जो अधिकारी अपनी नौकरी सुरक्षित रखना चाहते हों, मुस्तैद हो जायँ। मैं किसी को क्षमा करने वाला नहीं हूँ।

'मि० अहूजा! आपने मेरे मन की बात कही है।' मूँछ के बिखरे

बालों को समेटते हुए सेठ ने कहा। मैं भी इसी बात को दुहराता हूँ कि सब सावधान हो जायँ।....यह मीटिंग लेबर यूनिट की रिपोर्ट जाँचने और बोनस के बारे में अन्तिम निर्णय देने के लिये बुलायी गयी है। मेरी तरफ देखकर उन्होंने पूछा—'मि० कुमार! मजदूरों के प्रोग्राम के बारे में कुछ पता चला। रात में या कल या उसके बाद वे क्या करना चाहते हैं। संगठन में फूट आने की सम्भावना है या नहीं। अपना विचार तुरन्त प्रस्तुत कीजिए।'

'मजदूरों में अद्भुत एकता है।' मैंने कहा। प्रोग्राम जानने की तमाम कोशिशें हुईं मगर सफलता नहीं मिली। वैसे मेरे जासूस इस वक्त भी जी-जान से लगे हैं।....इतना जरूर मालूम हुआ है कि इस समय लोकल और बाहरी दोनों तरह की राजनीति फेक्ट्री में घुस आयी है। विभिन्न पार्टियाँ खुलकर मजदूरों को समर्थन दे रही हैं। हर पार्टी इस कोशिश में है कि बोनस दिलाने का श्रेय उसे ही मिले। आम चुनाव नजदीक होने से हरेक के सिर पर वोट का चक्कर भूत की तरह सवार है।

आज कम्युनिस्ट लीडर आलोक तिवारी का दोपहर में भाषण हुआ है। उनकी बातों का असर इतना अधिक पड़ा है कि मजदूर हक पाने के लिए जान भी दे सकते हैं।....मेरे आदमियों ने बताया है कि सैकड़ों मजदूर छाती पीटते हुए शपथ ले चुके हैं कि बोनस पाये बगैर वे ड्यूटी पर वापस नहीं होंगे।

यहाँ के मजदूरों ने भद्दी गालियों का इस्तेमाल पहले कभी नहीं किया था। लेकिन इस बार वे दिल खोलकर गाली दे रहे हैं। प्रबन्ध-तंत्र के कुछ लोगों को मार डालने और फैक्ट्री जला देने की धमकी अलग है। जान बचाना मुश्किल दिख रहा है।

'पार्टियों के शामिल होने का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।' अहूजा ने कहा। यदि यह सच है, तो मामला गम्भीर है। जो लोग सामने मदद

देने की बात करते हैं, वे पीठ-पीछे ऐसा षड्यंत्र रच रहे हैं। समझ में नहीं आता, ऐसा क्यों है।

'मि० अहूजा ! पार्टी के नेताओं से तुरन्त सम्पर्क कीजिए। फोन से बात करना ज्यादा अच्छा होगा।' सेठ ने कुर्ते की बाँह सिकोड़ते हुए आदेश दिया। सबसे चेतावनी की तहत कह दीजिए, वे अपनी हरकतें तत्काल बन्द कर दें। इसी शर्त पर उन्हें अगले चुनाव में पैसा दिया जायगा।

'यस सर। मीटिंग खत्म होते-ही मैं फोन मिलाना शुरू करता हूँ।' सेठ को विश्वास दिलाते हुए अहूजा ने कहा। बोनस के बारे में लेवर-यूनिट की राय पढ़ लीजिए। फाइल सामने रखी है। आपकी तरफ से अन्तिम फैसला होना है।

रिपार्ट पढ़ते ही अहूजा उखड़ गया।....पूरी बात मजदूरों के फेवर में कही गयी है। इतना पैसा देने पर फैक्ट्री बिक जायगी। मि० कुमार ने दिमाग पर बिलकुल जोर नहीं दिया। अन्यथा वे ऐसी बात न लिखते। पता है, अगले वर्ष उड़ीसा में एक और फैक्ट्री खोलने की योजना है। बोनस मंजूर कर दिया, तो आगे की प्लानिंग ठप्प हो जायगी।

मेरी तरफ देखकर सेठ घूरने लगा था।....शो करिए कि फैक्ट्री घाटे में चल रही है। इसी लाइन पर रिपोर्ट तैयार कर आप सुबह मेरे पास आ जायँ। जरूरत पड़ने पर यह फाइल गवर्नमेंट में जा सकती है। इसे सब तरह से मजबूत रखना जरूरी है।

अहूजा और सेठ की बात समझने में मुझे देर नहीं लगीं। मीटिंग समाप्त होते-ही मैं फाइल के साथ ऑफिस की तरफ लौट आया। और अकेला था। बगल वाली सड़क पर मि० मजूमदार उदास भाव से गर्दन झुकाये चले जा रहे थे।

शाम का समय था। अँधेरा होते-ही हो-हल्ला और नारेबाजी शुरू हो गयी। भीड़ पहले से ज्यादा नाराज हो चली थी। बीच-बीच में

मशाल की रोशनी भी हो रही थी। मजदूर अहूजा और गनेसी के नाम पर गालियाँ बक रहे थे। मजदूरों का एक वर्ग कह रहा था :

—गनेसी को खत्म कर दो।

—फील्ड में खड़ी गाड़ियाँ जला दो।

—एक ही लड़का है। घर से उठा लाओ।

—तब पता चलेगा कि पैसा बड़ी चीज है या आदमी।

—गनेसी का परिवार समाप्त कर दो।

दूसरा ग्रूप मशाल जलाये पश्चिमी दीवाल के किनारे खड़ा था। सभी मजदूर सिर में फेटा बाँधे थे। हर हाथ में लाठी-डंडा जरूर था। वे फैक्ट्री के भीतर घुसने की कोशिश करते और जाने क्या सोच कर पीछे लौट आते थे। वे चिल्ला रहे थे :

—मशीन के पुर्जे गायब कर दो।

—उन मशीनों से क्या लाभ, जो खून चूसती हैं।

—गनेसी राक्षस है।

—उसका बध रावण को तरह होना है।

—बंगला फूंक दो।

—देखें, किराये के टट्टू कब तक मुकाबला करते हैं।

तीसरा ग्रुप पार्क के बगल में था। ये लोग गुस्से में जरूर थे। मगर चिल्लाने में ज्यादा विश्वास नहीं दिखा रहे थे। इनकी भाषा गर्म और आवाज तेज थी। ये मजदूर नारा लगाने के साथ काली सड़क की ओर मार्च करने लगे थे। क्योंकि थोड़ी ही देर में हर ग्रुप को गोल चौराहे के पास एक में मिल जाना था।....सामू सबसे आगे था। वही कह रहा था :

—अहूजा की आँख निकाल लो।

—उसे मैदान में उठा लाओ।

—चमड़ी उधेड़ कर भुस भर दिया जाय।

—कालिख पोत कर शहर में घुमाया जाय।

—बोनस लेकर रहेंगे।

—ओवर-टाइम देना पड़ेगा।

—गनेसी मुर्दाबाद। अहूजा मुर्दाबाद।

यह क्रम एक घंटे तक इसी प्रकार चलता रहा। पर जाने क्यों ऊँची आवाजें एकाएक खामोशी में बदल गयीं। तमाम मजदूर दौड़ते हुए उस जगह पहुँचने लगे थे, जहाँ सात मजदूरों का जत्था अनशन पर बैठा था। मनीराम और चंदेसर की हालत चिंताजनक थी। अब गये तब गये। हालत हद से ज्यादा बिगड़ चुकी थी। डाक्टरों ने अपनी ताजी रिपोर्ट में यहाँ तक कह दिया कि आने वाले चौबीस घंटों में इनका दिल किसी भी समय सिकुड़ सकता है।

इस खबर ने आग में घी का काम किया। मजदूरों में गहरा असंतोष व्याप्त हो गया। अनशनकारियों के चारों तरफ मजदूरों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। कुछ लोग भीड़ हटाने की कोशिश में हाथ उठा कर कह रहे थे—'भाइयो! घबड़ाने से काम नहीं बनेगा। मंच से दूर चले जाइये। गर्मी ज्यादा है। ठण्डी हवा आने दीजिए। चिंता की बात नहीं है। मिनट भर में होश आ जाने की उम्मीद हैं।' यह आवाज सुन कर सब पीछे हटने लगे थे। क्योंकि गर्मी की प्रचंडता का अनुभव हर आदमी कर रहा था।

मंच से दूर हटने के साथ मजदूर पूर्ववत् नारा लगा रहे थे। और सेठ के नाम पर अश्लील गालियाँ बक रहे थे। जो मजदूर ज्यादा नाराज थे, वे भद्दे शब्द कहने के साथ नाचना भी शुरू कर दिये थे। ऐसा लग रहा था कि अब मजदूरों पर कंट्रोल पा सकना मुश्किल है।

इस बीच सामू शहर से लौटकर मंच के नजदीक पहुँच चुका था। बिगड़े हुए माहौल को देखकर वह बेचैन हो गया था। व्याकुलता की स्थिति में चिल्लाते हुए उसने कहा—'नारा लगाने से कोई फायदा नहीं है। अहूजा मजदूर बिरादरी का दुश्मन है। जब समस्या सुलझने के नजदीक होती है, तो वह अंटी लगाकर बना-बनाया मामला बिगाड़ देता

है। चलो, उसी का बंगला घेर लिया जाय।'....सामू की बात सुनकर सामने खड़े मजदूर अपनी राय देने लगे थे।

'बंगले पर क्यों चलें। अभी अहूजा का ऑफिस खुला है। मीटिंग से लौटने के बाद वह ऑफिस में बैठ गया है। वह फाइलें पढ़कर मामले को और चौपट कर रहा होगा।' बोधे ने कहा। उसे गाली दें, मारें भी। और उठा कर सड़क पर फेंक दें। बहुत धोखेबाज है, वह। जाने क्यों हम सबकी नौकरी लेने पर तुला है।

'हाथ पकड़ कर बोनस के कागज पर जबरन दस्तखत करा लिया जाय। भीड़ से डर कर यह काम वह आसानी से कर देगा।' धोती की लांग सिकोड़ कर बलबीर ने कहा।

'पांच सौ मजदूरों का एक जत्था गनेसी के बंगले पर जाय। उसे भी बोनस मंजूर करने के लिए मजबूर किया जाय। कमीने की औलाद ने पुलिस बुला ली है। पुलिस कुछ कर ले, तो जानूँ। सुबह होने से पहले माँग पूरी करा ली जाय। स्ट्राइक का समय बढ़ाना ठीक नहीं है। मजदूरों का समूह रोटी की परेशानी से घबड़ा कर टुकड़ों में बँट गया, तो हमेशा के लिए हम कुचल दिये जायँगे।' निहोरे ने गम्भीर होकर कहा।

'हमारी माँगें पूरी हों। इंक़लाब जिन्दाबाद। मजदूर एकता अमर हो।' बोधे ने एकाएक नारा लगाना शुरू कर दिया था। यह क्रम देर तक चलता रहा।

मजदूरों के वे प्रतिनिधि जो डिस्ट्रिक्ट एथार्टीज से बात करने गये थे, अब लौटकर आ गये थे। उन लोगों ने बताया कि पुलिस पर विश्वास रखना ठीक नहीं है। क्योंकि सेठ ने उन्हें पर्याप्त धन दे दिया है। हर सवाल के जवाब में वे एक-ही बात कहते हैं, सुलह कर लो। झगड़ा करने में कोई फायदा नहीं है।'

'यार! उनका भरोसा ही कब था।' सामू ने कहा। आज के जमाने में न्याय भी पैसे पर बिकने लगा है। अधिकारियों से किसी प्रकार के

सहयोग की उम्मीद रखना बेकार है। वे पैसे के गुलाम हैं। जिस रास्ते पर पैसा दिखेगा, वहीं उनका जाना होगा।

कुछ देर चुप रह कर सामू ने हाथ का संकेत देकर बोधे, निहोरे और बलबीर को अपने पास बुला लिया। फिर समझाने के लहजे में उसने कहा—'गनेसी के गुंडे हमारे बीच में आ गये हैं। हर मजदूर को गुप्त रूप से सूचना दे दो। उनसे सावधान रहने की जरूरत है। भावावेश में काम बिगड़ सकता है। अभी कई प्रोग्राम बाकी हैं। रात भर में सब कुछ हो जाना है।'

अँधेरा बढ़ चुका था। फैक्ट्री-एरिया में सब तरफ बिजली के रॉड्स चमकने लगे थे। बोधे ने कहा—'अब चला जाय। अहूजा अपने कमरे में बैठा है। वह जैसे-ही बाहर निकले, उसे सुअर की तरह टाँग लिया जाय। उसकी मरम्मत किये बगैर कोई काम नहीं सधेगा।'....सामू की स्वीकृति मिलते ही पूरी भीड़ ऑफिस की ओर चल पड़ी। सब चुप थे। किसी तरह की आवाज नहीं उठ रही थी। क्योंकि अहूजा दरवाजा बन्द कर अपनी सुरक्षा कर सकता था।

आहूजा को कुछ-भी मालूम न था। चूक हो गयी। ऑफिस से निकल कर वह निश्चिन्त भाव से बँगले की ओर चला जा रहा था। शायद पैदल चलने का मूड था। ड्राइवर ने बहुत कहा, पर वह गाड़ी में नहीं बैठा। बोला—'मैं किसी से डरता नहीं। तुम चलो। दस मिनट के भीतर आ जाता हूँ। हाँ, फाइलों का बंडल तुम लेते चलो।'

बोधे और उसके साथियों ने दूर-ही से देख लिया। जब अहूजा एकान्त जगह में पहुँच गया, तो दौड़ कर सबने उसे दबोच लिया। पकड़ में आने के बाद वह बहुत छटपटाया। लेकिन मजदूरों के दिमाग पर उसके शब्दों का कोई असर नहीं हुआ। अन्त में अहूजा विवश होकर चिल्लाने लगा था।

निहोरे ने ललकारते हुए कहा था—'यही मुख्य मुलजिम है। ज्यादा

शोर मचाये, तो मुँह बाँध दो। मेहमानी कुछ देर बाद होगी। आज इसकी अफ़सरी झाड़ कर इसे सही आदमी बनाया जायगा।

बोधे ने उसका मुँह कपड़े से बाँध दिया था। वह सुअर की तरह अब चार कँधों पर टँगा था। क्रोधित मजदूर उसके हर अंग में जानबूझ कर लाठियाँ कोंच रहे थे। अहूजा की देह दर्द के कारण सिकुड़-बटुर रही थी। कभी-कभी ऐसा लगता कि वह लाश की तरह निर्जीव हो चुका है। यह खेल तब तक चलता रहा, जब-तक उसे मैदान में लाकर ऊँचे चबूतरे पर बैठा नहीं दिया गया।

बोधे ने सामने खड़े मजदूरों को देखकर ऐलान किया—'साथियो! हरामी की औलाद पकड़ में आ गया है। कुछ-ही देर में इसका असली चेहरा सबके सामने हाजिर किया जायगा।' फिर उसने बलबीर को बुला कर कहा—'क्या देखते हो। शुरू कर दो अपना काम। बदमाश आदमी को कड़ा दंड मिलना चाहिए। देर मत करो।'

बलबीर ने एक के बाद एक अहूजा के सभी कपड़े उतार कर रख दिया। वह अब नंगा हो चुका था। उसे जहाँ खड़ा किया गया, वहाँ कई बल्ब एक साथ जल रहे थे। वह शर्म के मारे कभी आँख पर, कभी सामने और कभी सीने पर हाथ रख लेता था। एकाध बार अहूजा ने बैठने की कोशिश की मगर बोधे ने कान पकड़ कर उसे उठा दिया था।

'इस तरह बे-इज्जत करना ठीक नहीं है।' अहूजा ने बौखला कर कहा था। कानून की लड़ाई कानून से होती है। मुझे मार-पीट कर बद-नाम करने से कोई लाभ नहीं मिलेगा। बाद में तुम सबको पछताना पड़ सकता है।

'तुम खूनखोर हो। क्या कहा! फिर से कहो।' पीठ पर चढ़ा लात जमाते हुए बलबीर ने कहा। अफ़सरी का रोब छोड़ दो।....यही क्या कम है कि हम तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे। लेकिन इतना जरूर कर देंगे कि तुम अपने दिमाग में इंसान की सही तस्वीर कायम कर सको।

'अहूजा को पाँच मजदूर तीन-तीन लात मारेंगे अर्थात् कुल पन्द्रह

लात ।' सामने खड़ी भीड़ को देखते हुए सामू ने कहा । ऐसा ही किया गया ।....धम्-धम्-धम् । कई लात एक साथ पड़ गये । अहूजा घायल साँप की तरह ऐंठकर मंच पर लोटने लगा था । सामू ने उसे धकियाते हुए कहा—'मगरूर कहीं का । उठ, जल्दी उठ । अपना चेहरा सबको दिखा दो । अहूजा उठने की स्थिति में न था । जाँघ में ज्यादा चोट आ गयी थी । फिर भी डरवश वह काँपता हुआ बैठ गया था ।

मैदान खचाखच भरा था । दुश्मन को पिटा देखकर हर मजदूर बेहद खुश था । तालियाँ बजने के साथ नारे लग रहे थे । कुछ मजदूर आपस में कह रहे थे ।—'यह बेहद खतरनाक आदमी है । दस साल से फैक्ट्री के मजदूर परेशान हैं, केवल इसी के कारण । गीदड़ की तरह सिर झुकाये बैठा है । सिर पर एक लात और मिल जाय, तो मजा आ जाय ।'

अहूजा के सामने अंधेरा छाया था । सिर पर हाथ रखे वह सोच रहा था—'मजदूरों के जाल से बच पाना मुश्किल है । यह भीड़ जीते-जी मुझे वापस नहीं जाने देगी । ये मुझे मारेंगे और लाश भी गायब कर देंगे । जिन नेताओं से मैंने कभी बात नहीं किया, वही यहाँ सिर पर ताज लगाये बैठे हैं । मैं कुछ भी कहूँ, उन पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है ।'

अहूजा मौत की बात सोचता शून्य आकाश की ओर देख रहा था । अनाथता की हालत में उसने महसूस किया कि प्रकृति भी उसके विरोध में तैयार खड़ी है ।...'धरती धिक्कार रही है । तारे मुँह बिरा कर हँस रहे हैं । दिशाएँ चेहरे पर कालिख पोत रही हैं ।' अहूजा का इस तरह सोचना काफी हद तक ठीक है । क्योंकि उसने मजदूरों को हर मुद्दे पर परेशान किया है ।

इस बीच निहोर ने आहूजा के कंधे को जोर से झकझोर दिया था ।....'पाजी कहीं का । जितनी तकलीफ दिया है, उसी के अनुपात में तुम्हें परेशान करूँगा । हमारे नेता जो-कुछ कह रहे हैं, उसे ध्यान से सुनो । सिकुड़ कर बैठने से काम नहीं चलेगा । तुम जुल्मी हो । तुम्हारे साथ जो भी व्यवहार किया जाय, कम है ।'

लगभग सभी नेता बोल चुके थे। अब सामू को बोलना था। मजदूर शांत भाव से बैठकर मंच की ओर निगाह लगाये थे। क्योंकि उनके लिए सामू के भाषण का विशेष महत्व होता है। और आज उसी के संकेत पर स्ट्राइक का अंतिम फैलला हो जायगा।

सामू कोई बात तभी कहता है, जब वह प्रमाण इकट्ठा कर लेता है। सामू ने फैक्ट्री का पूरा एकाउन्ट मजदूरों के सामने रख दिया था। उसने सिद्ध कर दिया कि बोनस देने के बावजूद फैक्ट्री को भारी मात्रा में लाभ मिलते रहने की सम्भावना है। फैक्ट्री-मालिक के बारे में वह अपनी राय देता हुआ कह रहा था।

....साथियो ! गनेशी हमारी माँग मानने के लिए तैयार नहीं है। उसका दिमाग खराब हो चुका है। उसे मजदूरों के खिलाफ भड़काने वालों में सबसे आगे हैं, मि० अहूजा। जो इस वक़्त मुँह लटकाये मेरे बगल में बैठे हैं। इनकी राय होती, तो यह लड़ाई शायद हमें न लड़नी पड़ती। फल है कि फैक्ट्री और मजदूर दोनों का नुकसान हो रहा है।

....दो दिन से मैं लगातार दौड़ रहा हूँ। सोचता रहा कि बातचीत से मामला सुलझ जाय तो संघर्ष बढ़ाने की क्या जरूरत है। इस सिलसिले में मुझे कई बार डिक्टेटर आहूजा के पास जाना पड़ा। लेकिन इन्होंने हर बार मजदूरों के हित का विरोध किया।

—धूर्त है। एक आवाज।

—इसे यह दिन देखना था। दूसरी आवाज।

....एक दिन इन्होंने कमरे में घुसने की अनुमति नहीं दी। मैं आश्चर्य में पड़ गया। क्योंकि मजदूर प्रतिनिधियों से ऐसी बात किसी ने कभी नहीं की। मैं हताश नहीं हुआ। अपने साथियों के साथ जबरन भीतर घुस गया। अहूजा ने लाल आँखें दिखाकर मेरा साहस तोड़ना चाहा। पुलिस बुलाकर हथकड़ी डालने की धमकी भी दिया। पर मैं निडर भाव से अपनी बात सुनाता रहा। कुछ देर तक चुप रहने के बाद

इसने कहा—'स्ट्राइक खत्म करिए, तब कोई बात होगी। तुम्हारे पास जन की ताकत है, तो मेरे पास धन है। और ऐसा धन जो यों-ही खत्म होने वाला नहीं है।' मैंने उसी क्षण साफ शब्दों में कह दिया था—'बोनस लिए बगैर कुछ नहीं होगा।'....जानते हो, तब क्या हुआ। यह दाँत चियार कर हँसने लगा था।

—मुँह पर थूक देते। एक आवाज।

—कान काट लेते। दूसरी आवाज।

....हमारे कई भाई अनशन पर बैठे हैं। दो की हालत बहुत खराब है। वे बेचारे सुबह तक जाने किस हालत से गुजरेंगे। यह सब केवल इसलिए हो रहा है, क्योंकि हमें अपना हक मिलना चाहिए। जनतंत्र में कोई किसी का हक नहीं मार सकता। रोटी और कपड़ा हमारी जरूरत है। इसे हम लेकर रहेंगे। हड़ताल शौक नहीं है। बल्कि गरीब मजदूरों की असमर्थता का प्रतीक है। इस वक़्त कोई भी ताकत हमें रास्ते से अलग नहीं कर सकती। जो लोग बंदूक लेकर पहरा दे रहे हैं, वे भी हमारी ताकत देख कर भयभीत हैं। हमारा संकल्प सही है। अतः इस लड़ाई में हमारी जीत होगी।

—तैयार हैं। एक आवाज।

—बंदूक से नहीं डरते। दूसरी आवाज।

....इस वक्त अहूजा का कलेजा टोकर देखिए। इसकी धुकधुकी निश्चय ही बढ़ गयी होगी। इनकी आँखों में पत्नी, बच्चों तथा परिवार के हर सदस्य की तस्वीर नाच रही होगी। मजबूरी के क्षणों में आदमी के सोचने का तरीका बदल जाता है। इन्हें अपने बच्चों का मोह है। पर हमारे बच्चों से घृणा है। ये नहीं चाहते कि उन्हें भोजन मिले या वे पढ़-लिख कर किसी ओहदे पर पहुँचें। इनका वश चले, तो एक ही दिन में तमाम बेगुनाह परिवारों को साफ करा दें। अहूजा स्वभाव से डिक्टेटर है। यह मजदूर कौम का दुश्मन और गरीबों की हत्या कराने वाला है। अहूजा जैसे लोग जब तक दुनिया में रहेंगे, मेहनतकश इंसान

दो वक्त सुख की नींद नहीं सो सकेगा। इनका विरोध केवल हम कर सकते हैं। क्योंकि इन्हें बेकार बनाने की ताकत हमारे पास हैं।

—टाँग पकड़ कर चीर दो। एक आवाज।

—सिर काट कर फेंक दो। दूसरी आवाज।

....साथियो! उत्तेजित होने की आवश्यकता नहीं है। अभी हमें और भी कार्य करने हैं। आप के शब्दों को मैं हर वक्त मानने के लिए तैयार हूँ। भीड़ की इजाजत मिलने पर अहूजा को खत्म किया जा सकता है। मगर इस समय यह कदम उठाना ठीक न होगा। अहूजा को बेइज्जत कर जीने का मौका दिया जाय।....इस दुर्गति को याद कर यह जीवन भर पछतायेगा। सच मानों, इसे कभी सुख की नींद नहीं आयेगी। अपमान का भोग मामूली दंड नहीं है।

—ठीक है। सब ने एक साथ कहा।

—नेता का आदेश मंजूर है। बोधे ने कहा।

बलबीर ने सामू की ओर देख कर कहा—'अब आप बैठ जाइये। जब अहूजा को मारना नहीं है, तो इसकी मरम्मत कर दी जाय। शायद इस घटना के बाद यह मजदूरों का विरोध नही करेगा।'....कुछ मजदूरों को बुलाकर उसने आदेश दिया—'अहूजा के मुँह में कालिख पोत दो। फिर इसकी देह पर देर तक थूकते रहो।'

थू-थू-थू-थू। तमाम मजदूर उसके शरीर पर थूकना शुरू कर दिये थे। दो मिनट के भीतर अहूजा खखार और थूक से सराबोर हो गया था।....अब मजदूर उसे अकेला छोड़कर मंच से उतर गये थे। क्योंकि सजा देने का अन्तिम चरण पूरा हो चुका था।

'काफी मरम्मत हो चुकी है। इसे ले जाओ। बीच वाली काली सड़क पर छोड़ दो।' सामू ने कहा। कमीने की औलाद, खुद को जल्लाद समझता था। बोधे! जल्दी करो। यहाँ से ले जाओ। इसकी देह से बदबू आ रही है। घर वाले भी इसकी दुर्गति देख लें।

'ठीक है।' यह कहने के साथ वह अहूजा को साथ लिए काली सड़क

की ओर चल पड़ा था। चौराहे पर पहुँच कर उसने कहा—'जाओ। सुअर की तरह देह पोंछते निकल जाओ। पीछे की ओर मुड़कर मत देखना। मैं अभी यहीं खड़ा हूँ।'

अहूजा के बारे में किसी को कोई जानकारी न थी। काफी देर बाद सिक्योरिटी ऑफिसर मि० मजूमदार को घटना का वास्तविक व्योरा प्राप्त हुआ। खबर पाते ही मजूमदार भय से कांपने लगे थे क्योंकि फैक्ट्री-एरिया में सुरक्षा का पूरा दायित्व उन्हीं पर था।....सेठ सुनेगा, तो क्या कहेगा। मजूमदार बेचैन होकर अपने कमरे में घूमने लगे थे।

थोड़ी देर बाद उन्होंने सेठ को फोन पर सूचित कर दिया कि मजदूरों ने मि० अहूजा के साथ घोर दुर्व्यवहार किया है। और जमकर पीटा भी है। खबर है कि वे अपने बंगले पर पहुँच गये हैं। शेष बातें अभी तक मालूम नहीं हो पायी हैं।

सेठ को विश्वास नहीं हो रहा था। अहूजा एक तेज किस्म का अधिकारी है। मजदूरों के शिकंजे में कैसे फंस गया। वह माथा खुजलाता देर तक अन्दर के बरामदे में टहलता रहा।....'हो सकता है, उसने सावधानी से काम न लिया हो। कभी-कभी सीमा से ज्यादा हिम्मत कर जाना भी खतरे का कारण होता है। मुझे लगता है, कुछ ऐसा ही हुआ होगा। खैर, थोड़ी देर में सब मालूम हो जायगा।'

इस बीच मजूमदार बंगले पर हाजिर हो गया था। उसे देखते ही सेठ ने पूछा—'क्या तुम्हारी सूचना सही है। मुझे लग रहा है कि अहूजा नहीं बल्कि मैं पीटा गया हूँ। घंटे भर के भीतर यह सब कैसे हो गया, मेरी समझ में नहीं आ रहा है।'

'खबर बिलकुल ठीक है।' मजूमदार ने घबड़ाहट के साथ कहा। मैंने मि० अहूजा के घर फोन किया था। नौकर ने कहा है, साहब को बहुत मारा गया है। अभी रास्ते में आते समय फोर्स के एक जवान ने भी खबर को सही बताया है। आप तो जानते हैं, क्रोधी मजदूर कितना खतरनाक होता है। वह जो कर गुजरे, कम हैं।

'फैक्ट्री के सभी अधिकारियों को फोन कर दो। इसी वक्त अर्जेन्ट मीटिंग होगी।' रेगिस्तान में प्यास से व्याकुल इंसान की तरह छटपटाते हुए सेठ गनेशीलाल ने कहा। डी० एम० और एस० पी० को भी खबर कर दो। नोट की गड्डियाँ लेने के बावजूद सब कान में तेल डाले पड़े हैं। अहूजा को मारने का मतलब है, मैं फैक्ट्री को सदा के लिए बन्द कर दूँ। बदला न लिया गया, तो मजदूर सिर पर सवार होंगे। अनुशासनहीन मजदूरों से भविष्य में कौन काम लेगा।

मजूमदार फोन से लगातार कांटेक्ट करता रहा। धीरे-धीरे उसने सबको मीटिंग की खबर दे दी। निश्चित समय पर सभी अधिकारी बँगले पर पहुँच गये थे। मीटिंग-रूम में बैठते ही सेठ ने कहा—'अहूजा के बारे में सबको मालूम हो गया होगा। इस घटना के पीछे मुझे कुछ अधिकारियों का हाथ होने का संदेह है। आपसी फूट के बगैर यह हो-ही नहीं सकता। इस मसले पर मैं बाद में विचार करूँगा। कुछ अधिकारियों को निकाल देना मेरे लिए जरूरी हो गया है।'

मजूमदार! तुम सिक्योरिटी के मालिक हो। तुम्हारे पास सौ से अधिक हथियारबंद सिपाही हैं। फिर डरते क्यों हो? मैं अब तुम्हारे भीतर वह चुश्ती और होशियारी नहीं देख पा रहा हूँ, जिसके लिए तुम कभी मशहूर थे। हौसला बुलंद रखो। मजदूर तुम्हारा नुकसान नहीं कर पायेंगे। मुझे अफसोस है कि सिक्योरिटी इस वक्त लुंज-पुंज है।

मैं मजदूरों को भुनवा कर मिट्टी में मिलवा दूँगा। लगता है, इन्हें मेरी ताकत का पूरा ज्ञान नहीं है। मेरे हाथ बहुत लम्बे हैं। इतने कि इसके दायरे में देश और प्रदेश की सरकारें समा जाती हैं। माँ के यारों ने सोते शेर को जगा दिया है। जलें मरें। फैक्ट्री कुछ दिन के लिए बन्द कर दूँगा। मैं भी देखूँगा कि इनमें कितनी ताकत है। मुझे किस बात की चिन्ता। पैसे की कमी है नहीं। आदमी परेशान होता है, पैसे के लिए। सो मेरे पास भरा पड़ा है।

इसके बाद गनेसी माथे को सहलाता देर तक बैठा रहा। दरअसल

इस वक्त वह भयानक और अचूक योजना बनाने में लगा था।....मीटिंग-रूम में सभी आफीसर्स उदास मन आँख मीचते बैठे थे। गनेसी उठकर सीधे उस कमरे में पहुँच गया, जहाँ दंगी सिंह अपने साथियों के साथ बैठा था। दंगी शहर का नामी गुंडा था। गनेसी ने कहा—'तुम्हारे आ जाने से मैं खुश हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि अब मेरा लक्ष्य पूरा हो जायगा। सुबह होने के पहले हड़तालियों को मैदान से खदेड़ देना है। पुलिस की कार्यवाही अलग से होगी। पर मुझे उन पर कोई विश्वास नहीं है।'

'मेरे लिए यह मामूली काम है।' दंगी ने कहा।

'ऐसी बात !'

'हाँ।'

'मजदूर खतरनाक हैं।

'ठीक कर दूँगा।'

'एक काम और करना है।'

'वह क्या ! पहले से बता दीजिए।'

'सामू, बोधे, निहोरे और बलबीर को हमेशा के लिए सुला देना जरूरी है।' गनेसी ने धीमी आवाज में कहा। इन बदमाशों के रहते फैक्ट्री सही ढंग से नहीं चल पायेगी। तीन वर्ष से फैक्ट्री की हालत खराब चल रही है। केवल इन्हीं के कारण। जब चाहते हैं, स्ट्राइक करा देते हैं। मजदूरों का समूह जैसे इनकी मुट्ठी में कैद है।

'हो जायगा।' दंगी ने हँस कर कहा।

'इतना आसान।'

'हमारा यही धंधा है।'

'वार चूकने न पाये।'

'चिंता न कीजिए।'

गनेसी बहुत खुश था। वह दंगी को लेकर बगल वाले कमरे में चला गया था। नोटों का एक पुलिंदा दंगी के हाथों में रखते हुए उसने कहा

था—'काम हो जाने पर और दूँगा । फिलहाल यह पैसा बयाने के रूप में दे रहा हूँ ।

'पैसे के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है ।' मूँछ ऐंठते हुए दंगी ने कहा । पैसा आप से हमेशा मिला है और मिलता रहेगा । मैं चाहता हूँ, जो वादा किया है उसे हर कीमत पर अदा कर दूँ । कल रात में किसी वक्त मिलूँगा । उस समय आप प्रसन्न और स्वस्थ मिलेंगे ।'

दंगी के जाने के बाद गनेसी देर तक सोचता रहा ।....'यदि सामू खत्म कर दिया जाय, तो मेरा सिर दर्द हमेशा के लिए समाप्त हो जाय । इस काम के लिए जो भी खर्च करना पड़े, कम है । वह जीवित रहा, तो मेरी हत्या करा सकता है । हर बातें ठीक रहीं, तो निश्चय ही वह कल इस दुनिया से उठ जायगा ।' गनेसी का दिमागी तनाव बढ़ गया था और वह कमरे में टहलने लगा था ।

एस० पी० साहब के आने की खबर पाते ही गनेसी बाहर वाले कमरे में आ गया था । कुर्सी पर बैठते हुए एस० पी० ने कहा था—'क्या मामला है ? सब-कुछ नार्मल है । फिर फोन क्यों कर दिया ? कोई खास बात हो, तो मुझे बता दीजिए । वैसे मेरे रहते आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है ।'

'गम्भीर खतरा आ जाने के कारण आपको बुलाया है ।' सेठ ने खाँसते हुए कहा । आपको नहीं मालूम । सुन लीजिए । मैनेजिंग डायरेक्टर मि० अहूजा को हड़तालियों ने पीटा है । उन्हें बे-इज्जत कर घंटों परेशान किया है । मेरे लिए इससे अधिक दुखद बात और क्या हो सकती है ?

'सच !' एस० पी० ने आँख लिलोरते हुए कहा ।

'हाँ !'

'मुझे नहीं मालूम ।'

'खुपिया विभाग सही नही है ।'

'कैसे मालूम !'

'वे इस घटना का पता नहीं लगाये ।'

'मैं उन्हें एलर्ट कर देता हूँ ।' एस० पी० ने अपनी कमी महसूस करते हुए कहा । यह शहर कोतवाल की लापरवाही है । सख्त आदेश के बावजूद वह चीजों को नहीं समझ रहा है । अब मैं पुलिस के साथ पी० ए० सी० की व्यवस्था कर देता हूँ। प्रोग्राम तैयार कर लिया है । बस, लौटने भर की देरी है । सब हो जायगा । आप फिक्र न करें । मजदूरों को दबाने की जिम्मेदारी मेरी है ।

'बहुत हो चुका । अब देरी न कीजिए एस० पी० साहब ।' गनेसी ने कहा । काम हो जाने पर एक नहीं, कई थैलियाँ भेंट करूँगा । चार बजे का टाइम बेकार नहीं जाना चाहिए । मेरे आदमी तैयार हैं । पुलिस आते ही काम शुरू हो जायगा ।....मेरे आदमी पक्के हैं । जिन्दगी भर उन सबों ने यही काम किया है । पुलिस का सहारा मिलते ही वे हड़तालियों की धज्जी उड़ा देंगे ।

'और कुछ कहना है ?'

'नहीं ।'

'मैं चलूँ ?'

'हाँ । पर सूचना दीजिएगा ।'

'कैसे ।'

'फोन से ।'

'फोन पर ऐसी बात करना मेरे लिए ठीक नहीं है ।' एस० पी० ने कहा । मैं अपना आदमी भेज दूँगा । जरूरत पड़ने पर मैं खुद आ जाऊँगा । यह कह कर एस० पी० साहब उठ पड़े । और सेठ से हाथ मिलाकर तेजी में बाहर निकल गये । उनके जाने के बाद सेठ जी उस कमरे में आ गये थे, जहाँ सभी अधिकारी मन मारे बैठे थे ।

'रात में हर अधिकारी को सावधान रहना है ।' सेठ ने कहा । मैं किसी भी समय सबको फिर बुला सकता हूँ । इस वक्त आप लोग जा सकते हैं ।....मीटिंग खत्म होने पर सेठ गनेसी काफी देर तक मि० मजूम-

दार से अकेले में बात करता रहा। शायद वह उन अधिकारियों के बारे में पूँछ-ताँछ कर रहा था जिनके बारे में उसे संदेह था।

सुबह के ठीक चार बजे थे। भारी संख्या में चारों तरफ पी० ए० सी० के जवान घूम रहे थे। बन्दूकधारी सिपाहियों के आ जाने से मजदूरों का समूह सीमा से अधिक बौखला गया था। जगह-जगह इकट्ठे होकर वे आपस में सलाह-मशविरे करने लगे थे। माहौल कंट्रोल के बाहर हो चुका था। झगड़ा कब शुरू हो जायगा, इसका अंदाजा लगा पाना मुश्किल हो रहा था।

मंच से अचानक एक आदमी चिल्लाया—'साथियो ! मनीराम नहीं रहा। चंदेसर जाने के करीब है।' मजदूर घबड़ाहट में अनशनकारियों की ओर दौड़ने लगे थे। कुछ मजदूर सिर पीट कर चिल्ला रहे थे। और ज्यादातर व्यवस्था से जुड़े अफसरों को गाली दे रहे थे।

अचानक मैदान में जोर का धमाका हुआ। एक बार। फिर उसी क्रम में कई बार। मजदूर समझ ही न पाये कि यह क्यों और कैसे और कहाँ से हो रहा है। कनफ्यूजन की हालत में मजदूर भागने लगे थे। दौड़-भाग के कारण इतनी धूल उड़ी कि सामने के आदमी को देखना मुश्किल हो गया। जैसे प्रचंड तूफान आकर मैदान में थम गया हो।

धमाका कैसे हुआ, इस बात की सूचना सामू को तुरन्त मिल गयी। भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से उसने तत्काल ऐलान किया—भाइयो ! भागने की जरूरत नहीं है। यह दुश्मन के छुपे गिरोह का षड्यंत्र है। इस वक्त भ्रम में पड़ कर भागने का सीधा अर्थ है कि हम जीवन भर भागते रहेंगे। फैक्ट्री-मालिक मजदूरों को दबोच कर पिल्ले-सा बैठा देगा।'

सामू की बात का उखड़ी हुई भीड़ पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। मजदूर धीरज धारण कर पहले की स्थिति में होने लगे थे। थोड़ी ही देर में वे सामू के चारों तरफ इकट्ठे हो गये थे। हर आदमी में उत्तेजना

भरने और दुश्मन का कलेजा दहलाने के लिए बोधे ने तत्काल नारा लग-वाना शुरू कर दिया। इंकलाब जिंदाबाद....गनेसीलाल मुर्दाबाद....मजदूर एकता अमर हो।'

अधिकारी का आदेश पाकर अब तक पी० ए० सी० के जवान अपना मोर्चा सम्हाल चुके थे। उनके कमांडर ने एनाउंस किया—'मजदूर लड़ाई पर आमादा हैं। वे मशाल लेकर फैक्ट्री की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। उन्हें उस तरफ बढ़ने से रोका न गया, तो क्षण भर में आग की लपटें उठ जाएँगी। मैं आदेश देता हूँ कि जरूरत पड़ने पर सिपाही फायरिंग भी कर सकते हैं।'

—एक तरफ।

—दो तरफ।

—सब तरफ।

पूरा मैदान चीख और चिल्लाहट से भर गया। जैसे असहाय और निर्दोष कबूतरों का बध कर दिया गया हो। यह जिंदगी और मौत के बीच की लड़ाई थी। अब वहाँ केवल बन्दूक की आवाज सुनाई दे रही थी। आदमी पूर्णतः खामोश था।

अनुकूल मौका पाकर दंगी सिंह के आदमी अपना काम शुरू कर दिये थे। उन सबों ने कई महत्वपूर्ण मजदूर-लीडरों की हत्या कर दी थी। आध घंटे के लगभग तीन तरफा संघर्ष जारी रहा। पुलिस की संख्या बढ़ जाने पर मजदूर भागना शुरू कर दिये, क्योंकि उन्हें अब भारी नुकसान उठाना पड़ सकता था।

पाँच मिनट के भीतर पूरे मैदान में सन्नाटा छा गया। पुलिस अधि-कारी मृतकों की लाश गायब करने की योजना तैयार कर लिये थे।.... लाशों को लकड़ी के टुकड़े की तरह ट्रक में भर कर ऐसी जगह भेज दिया गया जहाँ कोई जल्दी जाने की इच्छा नहीं करता। उन्हें किस तरह जलाया-दफनाया गया, इसे कोई नहीं जानता। वैसे सरकारी कागज में मृतकों की संख्या केवल दो बतायी गयी थी।

फैक्ट्री के भीतर या बाहर जो-कुछ हो रहा था, उसकी पूरी सूचना सेठ गनेसीलाल को दी जा रही थी। वह इस बात से बेहद खुश था कि पुलिस के अधिकारी और दंगी सिंह ने अपना फर्ज अदा कर दिया है। 'सुबह होते एस० पी० साहब खुद उसके बँगले पर आ गये थे। उन्होंने पहुँचते ही कहा—'आपका स्वास्थ्य अब कैसा है ? मेरा खयाल है, खुश होंगे।'

'हाँ, इसमें कोई दो राय है।'

'अब स्ट्राइक नहीं होगी।'

'मजदूर-नेता भी मारे गये हैं ?'

'जी, कई एक।'

'और वह....।'

'कौन !'

'सामू।'

'जरूर मरा होगा।'

'इसे पक्का करिये।'

'ओह ! एक आदमी को लेकर आप क्यों परेशान हैं ?' एस० पी० ने हँसते हुए कहा। वह बचा भी होगा तो क्या कर लेगा ? उन सबका हौसला इतना पस्त कर दिया गया है कि वे निकट भविष्य में जल्दी सिर उठाने का नाम नहीं लेंगे।

'उसका रहना ठीक नहीं है।'

'पता लगाता हूँ।'

'इसी वक्त।'

'ठीक है।'

'वह मरा होगा, तो और दूँगा।'

'उससे इतना ज्यादा क्यों डरे हैं।'

'खतरनाक है।' 'वही मजदूरों को भड़काता है।'

'इतना भय !'

'उसके रहने का परिणाम मैं समझ रहा हूँ।'

'आप निश्चित होकर अपने बंगले पर ही रहें।' एस० पी० ने कहा। मैं घटना-स्थल पर जाँच करने जा रहा हूँ। सारा मामला देखने-समझने में एक घंटा जरूर लगेगा। सरकारी रिपोर्ट भेजने के बाद मैं यहीं आऊँगा।....मुझे उम्मीद है कि सामू जीवित न बचा होगा। यदि होगा, तो मैं खुद का दुर्भाग्य मानूँगा। एस० पी० साहब बात करते हुए बाहर की ओर चल पड़े थे।

दुश्मन की तमाम कोशिशों के बावजूद सामू जाने कैसे बच गया था। वैसे उसकी पीठ पर कई प्राणघातक वार किये गये थे। मगर लाशों के बीच छुप जाने से फिलहाल वह बच निकलने में कामयाब रहा। सामू की हालत देखकर अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वह खतरे से बाहर है। तमाम घायलों के साथ सामू को भी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया है। डाक्टरों ने सभी मरीजो को देखकर प्रथम रिपोर्ट जारी करते हुए कह दिया है—'कई मजदूरों की हालत बेहद नाजुक है। अभी यह कहना मुश्किल है कि इनमें कितनों की जिन्दगी सुरक्षित रह पायेगी।'

दूसरे दिन के अखबारों में खबर छपी थी—'झगड़े पर आमादा मजदूरों को दबाने के लिए पुलिस को मजबूरन गोली चलानी पड़ी। इस दुर्घटना में किसी के मरने की सूचना नहीं है। केवल सत्रह मजदूरों को हल्की चोट लगी है। उन्हें जिला अस्पताल में दवा के लिए भर्ती किया गया है। जल्द ही उनके ठीक हो जाने की सम्भावना है।....शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए फैक्ट्री अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दी गयी है।'

बेड नम्बर तीस पर सामू पेट के बल लेटा है। उसकी मूर्छा अभी तक समाप्त नहीं हुई है। वह बदहवासी की हालत में कह रहा था—'बोधे! ओ बोधे!! हिम्मत बाँधे रहो। रंच भर चिंता करने की जरूरत नहीं है। दो-एक दिन में बोनस की माँग पूरी हो जायगी।'

उस वक्त डाक्टर वार्ड के राउंड पर था । सामू की नाजुक स्थिति देखकर वह एक मिनट के लिए रुक गया । फिर जाने क्या सोचकर कान खुजलाता हुआ आगे निकल गया । क्योंकि उसे अभी तमाम मरीजों को देखना था ।

लगभग आध घंटे बाद डाक्टर फिर बेड नम्बर तीस के पास आ गया । सामू के पीले पड़ रहे चेहरे को गौर से देखता रहा । उसकी आँखें खुली जरूर थीं, पर उनके खुले होने का कोई अर्थ न था । नर्स की तरफ देखकर उसने पूछा—'इसकी हालत कैसी है !'

'संतोष जनक है ।'

'कुछ देर पहले बड़बड़ा रहा था ।'

'बीच-बीच में साथियों का नाम लेता है ।'

'लगता है, सिर में चोट लगी है ।'

'जी, हाँ ।'

'क्योंकि दिमाग के अलावा सब-कुछ ठीक है ।'

'इसे कौन-सी दवा दी जाय ।' नर्स ने पूछा । रोगी को होश में लाना जरूरी है । बारह घंटे के भीतर ऐसा न हो पाया, तो यह मर सकता है । हर कीमत पर इसे बचा लेना आवश्यक है । क्योंकि इसके न होने की खबर पाकर मजदूर बगावत कर देंगे ।

'देखता हूँ ।' डाक्टर ने सोचते हुए कहा ।

'इंजेक्शन दिया जाय ?'

'सोच लूँ ।'

'आप ही को लगाना है ।'

'लगा दूँगा ।'

'ग्लूकोज चढ़ा दूँ ।'

'बहुत जरूरी है ।' डाक्टर ने कहा । तुम और रोगियों के साथ इसे विशेष रूप में देखती रहो । कुछ अधिकारी इन्हें देखने आ रहे हैं । मैं

थोड़ी देर में फिर आता हूँ। होश में लाने के लिए कोई टेबलेट दिया जाना चाहिए है।

डाक्टर के हटते ही सामू फिर अनाप-सनाप बकने लगा। इस बार उसने गनेसी को बेहद गालियाँ दी थीं। थोड़ी देर बाद वह फिर बेहोशी में डूब गया था। नर्स इस बार कुछ नहीं बोली। वह चुपचाप उसकी मानसिक स्थिति का मून्यांकन करने लगी थी। पर अचानक वह बाहर निकल कर चिल्ला पड़ी—'डाक्टर साहब। मरीज की हालत बेहद खराब है।'